पी एन जी आर बी
PNGRB

पीएनजीआरबी 2024-25 दर्पण



पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड

पी एन जी आर बी PNGRB
पीएनजीआरबी दर्पण 2024-25



पीएनजीआरबी दर्पण

2024-25

वार्षिक पत्रिका, पंचम संस्करण 2024 - 2025

संरक्षक
डॉ. अनिल कुमार जैन
अध्यक्ष

श्री गजेंद्र सिंह
सदस्य-I

श्री अंजनी कुमार तिवारी
सदस्य-II

श्री ए. रमना कुमार
सदस्य-III

सुश्री सुधा रानी रेलांगी
सदस्य-विधि

मार्गदर्शक
अंजन कुमार मिश्रा
सचिव

संपादक
लेफ्टिनेंट कर्नल पवन कुमार उनियाल
निदेशक (प्रशा., मा. संसा. एवं सू. प्रौद्.)

संकलनकर्ता एवं सह संपादक
डॉ. सुनीता
सहायक परामर्शदाता (राजभाषा)

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं की मौलिकता का पूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है।
अत: पत्रिका में निहित रचनाओं के लिए पीएनजीआरबी प्रबन्धन उत्तरदायी नहीं है।

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	शीर्षक	पृष्ठ सं.
1	पीएनजीआरबी दृष्टिकोण	8
2	गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार, श्री अमित शाह का संदेश	9 - 11
3	संरक्षक की कलम से	12
4	सह-सरंक्षक की ओर से	13
5	सह-सरंक्षक की ओर से	14
6	सह-सरंक्षक की ओर से	15
7	सह-सरंक्षक की ओर से	16
8	सचिव की ओर से संदेश	17
9	संपादकीय	18
10	माननीय मंत्री श्री हरदीप एस पुरी द्वारा पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड के नए कार्यालय का उद्घाटन	19 - 20
11	कविता: अच्छी थी, पगडंडी अपनी - श्री अंजनी कुमार तिवारी	21
12	सामाजिक परिवेश एवं मानव विकास - श्री घनश्याम	22
13	भारतीय नौसेना में एक अधिकारी के रूप में मेरा अनुभव - लेफ्टिनेंट कमांडर विद्या सागर मेहता	23 - 24
14	एक यादगार निरीक्षण: पियाला से जेवर तक एटीएफ पाइपलाइन का अवलोकन - श्री आशुतोष भट्ट	25 - 27
15	रिस्क मैनेजमेंट के लिए एक संपूर्ण दृष्टिकोण - श्री युवराज सिंह राठौर	28 - 29
16	प्राकृतिक नेतृत्व की भावनात्मक बुद्धिमत्ता - श्री शिव शंकर प्रसाद	30 - 33
17	कार्यस्थल और भाषा - श्री प्रेम कुमार जारुहार	34 - 35
18	पाइप्ड नेचुरल गैस (पीएनजी) बनाम रेट्रोफिटेड एलपीजी स्टोव: दक्षता, उत्सर्जन और सुरक्षा का तुलनात्मक मूल्यांकन - श्री अंबिकेश तिवारी	36 - 38
19	सांख्यिकी: निर्णय लेने का विज्ञान - श्री अमित त्रिपाठी	39 - 40
20	अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस : 8 मार्च 2025	41 - 42
21	विश्व पर्यावरण दिवस 2025 : कार्यशाला का आयोजन	43 - 46

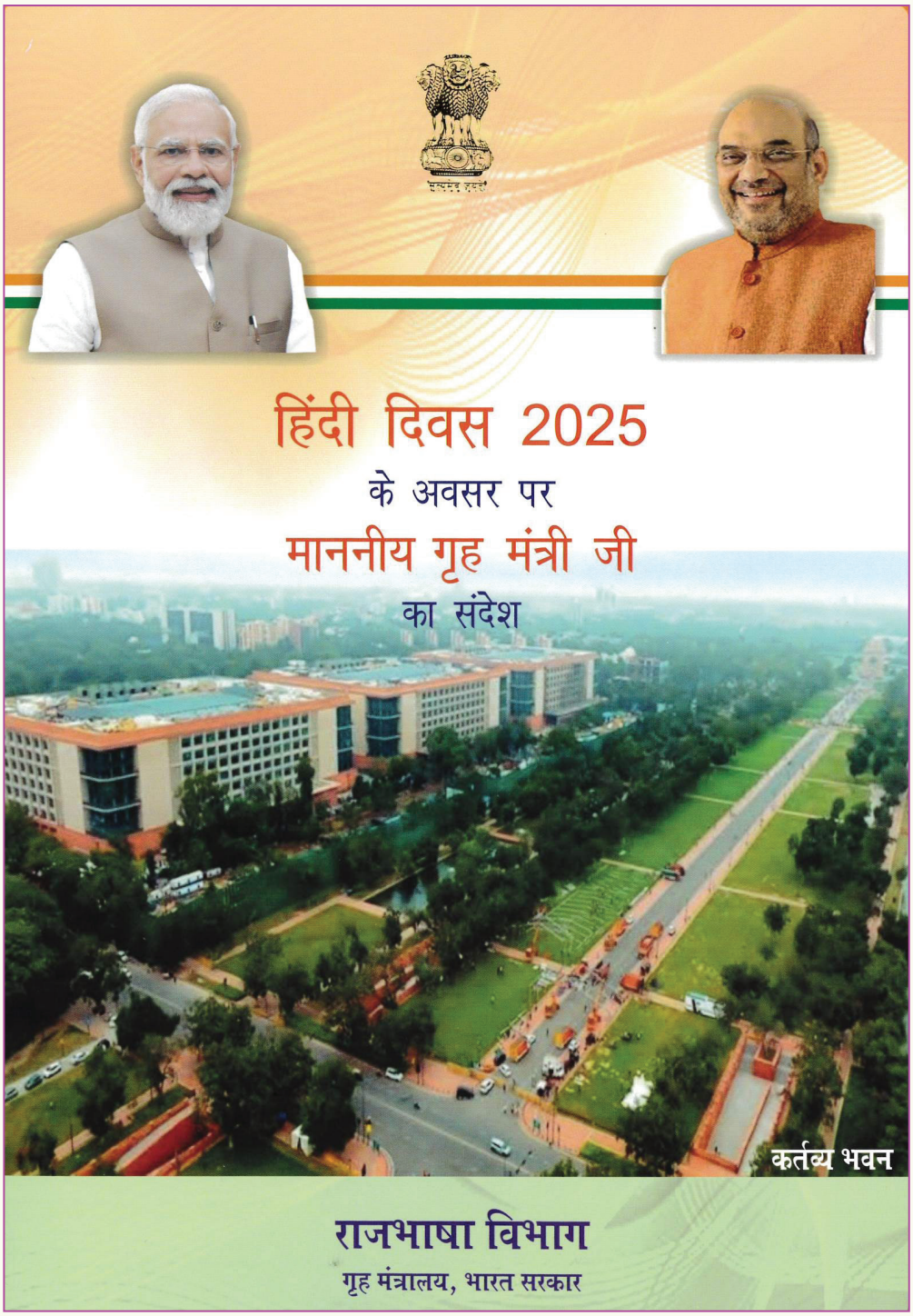
क्र. सं.	शीर्षक	पृष्ठ सं.
22	पीएनजीआरबी में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2025 का आयोजन	47 - 48
23	पीएनजीआरबी में हैप्पी लिविंग का आयोजन	49
24	स्वच्छता पखवाड़े का आयोजन	50 - 51
25	लाइव फायर मॉकड्रिल - जागरूकता के माध्यम से सुरक्षा को सुदृढ़ करना	52
26	पीएनजीआरबी में इस अवधि के दौरान राजभाषा से संबंधित गतिविधियां	53
27	कंठस्थ 2.0 पर एक दिवसीय अभ्यास आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम की रिपोर्ट	54
28	राजभाषा प्रयोग की दृष्टि से क्षेत्र वर्गीकरण	55
29	कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा, 2025 का आयोजन	56 - 58
30	भाषा अधिगम और शिक्षण में अनुवाद की भूमिका - श्री योगेन्द्र पाल भट्ट	59 - 60
31	झकझोरता सवाल: मैडम, आप 'मेकअप' क्यों नहीं करती - श्रीमती मेघा सिंह	61 - 63
32	स्क्रीन शेयरिंग ऐप/रिमोट एक्सेस का उपयोग करके धोखाधड़ी - श्री लाल बहादुर	64 - 65
33	अनियंत्रित शहरीकरण के चलते गांवों का भविष्य दांव पर? - श्री अशोक कुमार पासी	66 - 67
34	जिजीविषा - श्री नवीन कुमार	68 - 69
35	पीएनजीआरबी का नया कार्यालय: एक स्मार्ट ऑफिस: भविष्य का कार्यस्थल - सुश्री मीता सिंह	70 - 72
36	जीवन में महत्वपूर्ण व्यक्ति कैसे बनें? - सुशील कुमार गुप्ता	73 - 74
37	कार्यालयों में AI का उपयोग - फरहान अख्तर	75 - 77
38	जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाएँ - शीतला प्रसाद	78 - 79
39	पीएनजीआरबी की कार्य योजना में समन्वय प्रभाग की केंद्रीय भूमिका - श्री पंकज बिष्ट	80 - 81
40	वैश्विक ऊष्मीकरण: कारण, दुष्परिणाम एवं समाधान - श्री आकाश नेगी	82 - 83
41	'स्मार्ट वर्क' बनाम 'हार्ड वर्क': कौन ज्यादा ज़रूरी है? - अंकिता सोनी	84 - 86
42	सोशल मीडिया: संगठन की दृश्यता बढ़ाने का आज का सबसे बड़ा माध्यम - सुश्री गरिमा मल्होत्रा	87 - 88
43	ब्रह्माण्ड और आकर्षण का नियम - सुश्री दीक्षा कश्यप	89 - 90
44	जैसे विचार, वैसी चेतना - सुश्री अंजली सोनी	91
45	हिंदी भाषा में पत्राचार - श्री मनोज कुमार	92 - 93

क्र. सं.	शीर्षक	पृष्ठ सं.
46	कविताएं- स्वतंत्रता दिवस ..... अपना तिरंगा, विश्व पृथ्वी दिवस 2025, स्वतंत्रता दिवस, घर-घर में तिरंगा फहरायें - श्री शिवेन्दु प्रकाश	94 - 95
47	कविता- कब बड़े हुए हम - सुश्री अनीता रावत	96
48	ऊर्जा का संकल्प: पीएनजीआरबी - सुश्री आरती तिवारी	97
49	एक सुबह ऐसी भी हो - सुश्री पारुल	98
50	आपातकालीन प्रतिक्रिया और मूल कारण विश्लेषण: पीएनजीआरबी की ईआरदीएम्पी विनियमन के अंतर्गत - सुश्री आदित्य पी	99 - 101
51	वेब डेवलपर्स के बारे में 10 मज़ेदार और रोचक तथ्य - श्री अजीत कुमार सिंह पाल	102
52	महिला सशक्तिकरण - सुश्री हर्षिता चौहान	103
53	बुखार था शायद उसको - श्री अनिल वर्मा	104
54	आओ सुनाऊ प्यार की एक कहानी - श्री शुभम	105
55	बॉयल-ऑफ गैस (BOG): प्रबंधन और विनियामक दृष्टिकोण - श्री अनुज कुमार सिंह	106 - 108
56	छत्रपति शिवाजी महाराज चरित्र और व्यक्तिव - मारोती पंदलवाड	109 - 110
57	पीएनजीआरबी के तकनीकी प्रभाग द्वारा किए गए “ऑडिट रीफोम” - वामन वशिष्ठ	111 - 112
58	माँ तुम क्यों रोती हों? - श्री शुशांक डोगरा	113 - 114
59	भारत सरकार की सीबीजी/बायो-सीएनजी पहलें और उनके लाभ - श्री दिव्य अभिषेक सिंह	115 - 116
60	भारत में न्यायिक सक्रियता: अर्थ, औचित्य तथा सीमाएं - हर्षिता तोमर	117 - 118
61	अखिल भारतीय वॉकेथान - रन फॉर फन प्रतियोगिता’ के विजेता	119
62	पीएनजीआरबी से सेवामुक्त हुए कार्मिकों की सूची	120
63	पीएनजीआरबी में सम्मिलित हुए कार्मिकों की सूची	121
64	इनसे मदद लें : अंग्रेज़ी - हिंदी शब्द	122 - 123
65	प्रशस्ति पत्र : नराकास समिति	124 -126

पीएनजीआरबी – दृष्टिकोण

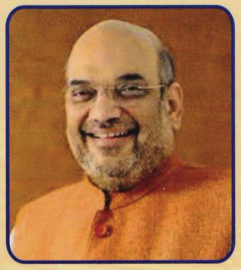
न्यूनतम लागत पर पेट्रोलियम, पेट्रोलियम उत्पादों और प्राकृतिक गैस के कुशल परिवहन और वितरण करने के लिए बुनियादी ढांचे में निवेश के प्रवाह को सुविधाजनक बनाने तथा निष्पक्ष व्यापार प्रथाओं और संस्थाओं के बीच प्रतिस्पर्धा के माध्यम से उपभोक्ता हितों के उच्च स्तर की सुरक्षा के माध्यम से तीव्र और व्यवस्थित विकास के साथ एक जीवंत ऊर्जा बाज़ार का निर्माण करना, ताकि भारतीय अर्थव्यवस्था की बढ़ी हुई प्रतिस्पर्धात्मकता और ग्राहक संतुष्टि सुनिश्चित की जा सकें।




हिंदी दिवस 2025
के अवसर पर
माननीय गृह मंत्री जी
का संदेश
कर्तव्य भवन
राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते



प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

अध्यक्ष

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड

संरक्षक की कलम से



(डॉ. अनिल कुमार जैन)

मुझे पीएनजीआरबी की गृह पत्रिका "पीएनजीआरबी दर्पण" के पंचम अंक के प्रकाशन पर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

भारत की संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया था तथा दिनांक 26 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान के लागू होने के साथ ही संविधान की धारा 343 के अनुसार हिंदी भारत संघ की राजभाषा बनी। इसके बाद संविधान में राजभाषा के संबंध में धारा 343 से 351 तक की व्यवस्था की गयी।

राजभाषा हिंदी भारत वर्ष की अनेकता में एकता का आधार है। यह देश की सांस्कृतिक अस्मिता की परिचायक है। देश को सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्धशाली बनाने के लिए राजभाषा का विकास एवं संवर्धन बेहद ज़रूरी है।

पत्रिका "पीएनजीआरबी दर्पण" का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर विकास की दिशा में एक सराहनीय कदम है। संघ सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन एवं प्रचार-प्रसार में हिंदी पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मैं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करते हुए "पीएनजीआरबी दर्पण" पत्रिका के पंचम अंक के नियमित एवं सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

सदस्य-I

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड

सह-संरक्षक की कलम से



(श्री गजेन्द्र सिंह)

यह बेहद प्रसन्नता और गर्व का विषय है कि पीएनजीआरबी अपनी गृह-पत्रिका "पीएनजीआरबी दर्पण" के पंचम अंक का प्रकाशन कर रहा है।

'हिंदी' भारत की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है, इसलिए संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। तब से प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह राजभाषा है। यह अपनी उपयोगिता व क्षमता के बल पर राष्ट्रव्यापी हुई। प्रो. फादर कामिल बुल्के ने कहा है, कि 'मैंने विश्व की अनेक भाषाओं का अध्ययन किया है, परंतु जैसी संप्रेषण क्षमता हिंदी भाषा में है वैसी अन्य किसी भाषा में नहीं है'। हिंदी वस्तुत: हमारी जनभाषा व हृदभाषा है। हमारे अस्तित्व व अस्मिता की पहचान है।

संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है, कि हम राजभाषा से संबंधित अनुदेशों का अनुपालन तत्परता और पूरी निष्ठा के साथ करें, तभी हम सब मिलकर माननीय प्रधानमंत्री जी के 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत; सुदृढ़ आत्मनिर्भर भारत' के सपने को साकार करने में सफल होंगे। अत: अपने दैनिक कार्यों में राजभाषा हिंदी का उपयोग करना और इसको निरंतर बढ़ावा देना हम सभी का मौलिक कर्तव्य भी है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के उद्देश्य से गृह पत्रिका 'पीएनजीआरबी दर्पण का प्रकाशन निरंतर किया जा रहा है।

मैं पत्रिका के प्रकाशन के लिए आप सभी को बधाई देता हूं और पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं।

सदस्य - वाणिज्यिक और तकनीकी

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड

सह-संरक्षक की कलम से



(श्री अंजनी कुमार तिवारी)

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि पीएनजीआरबी द्वारा गृह पत्रिका "पीएनजीआरबी दर्पण" के पंचम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिंदी को हमारे देश के संविधान में राजभाषा का दर्जा दिया गया है। यह हमारे देश की अखंडता एवं एकता की प्रतीक है। यह भाषा न सिर्फ भारत, बल्कि विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक है। धारा 343 (1) के अनुसार भारतीय संघ की राजभाषा हिंदी एवं लिपि देवनागरी होगी। संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय स्वरूप होगा।

हिंदी सरल और सुबोध भाषा है। यह हमारी राजभाषा के साथ-साथ अखिल भारतीय स्तर पर संपर्क भाषा के रूप में भी प्रतिष्ठित है। हमारा कार्यालय 'क' क्षेत्र में स्थित है, इसलिए राजभाषा हिंदी को विकसित और समृद्ध बनाना हम सभी का संवैधानिक और नैतिक उत्तरदायित्व है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था- "राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है"। राष्ट्र निर्माण में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वैश्वीकरण के दौर में आज हिंदी का महत्व जनभाषा, संपर्क भाषा, राजभाषा और वैश्विक भाषा के रूप में बढ़ रहा है।

गृह पत्रिका कार्यालय की गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ एवं उपयोगी संकलन होता है। पीएनजीआरबी में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने में गृह पत्रिका एक सकारात्मक भूमिका निभा रही है। हिंदी को लेकर जागरूकता एवं सक्रियता की झलक गृह पत्रिका के प्रकाशन से परिलक्षित होती है।

मैं पीएनजीआरबी की गृह पत्रिका "पीएनजीआरबी दर्पण" के पंचम अंक के सफल एवं पत्रिका के निरंतर प्रकाशन के लिए शुभकमनाएं प्रेषित करता हूं।

सदस्य - निगरानी और आधारभूत संरचना

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड

सह-संरक्षक की कलम से



(श्री ए. रमना कुमार)

यह जानकार बेहद हर्ष का अनुभव हो रहा है, कि पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड, भारत सरकार की गृह पत्रिका "पीएनजीआरबी दर्पण" के पंचम अंक का प्रकाशन हो रहा है।

भारत एक बहुभाषी देश है, जहां विभिन्न भाषाएं और संस्कृति भारत की विशिष्ट पहचान हैं। इन भाषाओं का अपना समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और विशेष परिवेश है। इस विविधताओं के बीच हिंदी ने पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम बखूबी किया है। प्राचीनकाल से ही हिंदी देशभर की संपर्क भाषा के रूप में काम करती आ रही है। वृहत्तर भौगोलिक विस्तार के साथ-साथ हिंदी भारत संघ की राजभाषा भी है। इसका प्रचार-प्रसार हमारा संवैधानिक दायित्व तो है ही, आमजन से जुड़ने का प्रमुख साधन भी है।

हिंदी एक समृद्धशाली भाषा है। इसमें वसुधैव कुटुंबकम की पवित्र भावना निहित है। संविधान सभा द्वारा हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया जाने के कारण सबका यह दायित्व बनता है, कि वह राजकाज के कार्यों में ज़्यादा से ज़्यादा हिंदी का उपयोग करें।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पीएनजीआरबी दर्पण के प्रकाशन से सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को एक नई प्रेरणा मिलेगी और वे राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों को पूर्ण करने में अपनी भूमिका का निर्वहन और अच्छे ढंग से कर सकेंगे।

मैं "पीएनजीआरबी दर्पण" के इस अंक के लिए सभी अधिकारियों/कर्मचारियों/लेखकों को बधाई देता हूं और आशा करता हूं, कि यह अंक सभी के लिए अत्यंत उपयोगी, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक सिद्ध होगा।

सदस्य-विधि

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड

सह-संरक्षक की कलम से



(सुश्री सुधा रानी रेलांगी)

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है, कि पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड, भारत सरकार, वर्ल्ड ट्रेड सेंटर "पीएनजीआरबी दर्पण" पत्रिका के पंचम अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। पत्रिका का निरंतर प्रकाशित होना कार्यालय की राजभाषा अनुप्रयोग के प्रति प्रतिबद्धता को चिह्नित करता है।

संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी है। संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप (संविधान का अनुच्छेद 343 (1) होगा। भाषा की बात करना राष्ट्रीय महत्व का विषय है। राजभाषा हिंदी एक वैज्ञानिक एवं ध्वन्यात्मक भाषा है। उच्चारण तथा लेखन में एकरूपता इसकी वैज्ञानिकता का आधार है।

राजभाषा हिंदी भारत में सर्वाधिक एवं विश्व में तीसरे स्थान पर बोली जाने वाली भाषा है। सदियों से हिंदी के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा आगे बढ़ती रही है। भाषा के रूप में हिंदी की विकास-यात्रा, पहले पाली, फिर प्राकृत, बाद में अपभ्रंश के रूप में परिवर्तित हुई, किंतु हिंदी सतत् चलती रही। हिंदी भाषा केवल भाषा मात्र नहीं है। यह आज़ादी से पूर्व और आज़ादी के बाद भी राष्ट्रीय अस्मिता और राष्ट्रप्रेम के प्रतीक के रूप में महापुरुषों, कवियों, राजनीतिज्ञों के लिए सदैव प्रथम रही है। आचार्य काका कालेलकर के अनुसार "हिंदी उत्तर और दक्षिण को जोड़ने वाली कड़ी है"।

राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं उत्थान के लिए पत्रिका का प्रकाशन एक सशक्त माध्यम है। राष्ट्रीय एकता के दृष्टिकोण का निर्माण, राष्ट्रभाषा के द्वारा ही होता है। भाषा के द्वारा ही लोगों में वैचारिक तथा आत्मिक एकता की स्थापना होती है।

हमारा यह सतत प्रयास रहता है, कि कर्मचारी/अधिकारीगण राजभाषा हिंदी का प्रयोग कार्यालीय दैनंदिन कार्यों में अधिक से अधिक करें, जिससे राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अधिकाधिक वृद्धि हों। मैं आशा करती हूं, कि इस पत्रिका के प्रकाशन से कार्यालय में राजभाषा अनुप्रयोग के प्रति सार्थक माहौल बनेगा। पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन के लिए कार्यालय को मेरी ओर से हार्दिक शुभकमनाएं।

सचिव

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड

संदेश



(अंजन कुमार मिश्रा)

मुझे यह जानकार अपार खुशी हो रही है, कि पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड, भारत सरकार की गृह पत्रिका 'पीएनजीआरबी दर्पण' का प्रकाशन किया जा रहा है।

"भाषा" समाज एवं संस्कृति का एक अभिन्न अंग है और यह मनुष्य के जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विचारों के आदान-प्रदान तथा अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। समाज के निर्माण और उसकी विकास की यात्रा में मनुष्य ने अपनी बढ़ती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अनेक उपाय किए हैं और उन्हें अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए भाषा का सहारा लिया है।

भारत में अनेक भाषाएं, दर्शन, संस्कृति और परम्पराएं विद्यमान हैं, जिनसे अनेकता में एकता के दर्शन होते हैं और यही हमारी पहचान है। संविधान के अनुसार 'हिंदी' भारत संघ की राजभाषा है। हिंदी केवल एक भाषा ही नहीं है, अपितु वह समृद्ध, सांस्कृतिक, जीवंत और वैविध्यपूर्ण समाज का दर्पण है। हिंदी सरल और सुबोध भाषा है। उसमें अद्भुत संप्रेषण शक्ति है, जिसके कारण हिंदी भाषा का उपयोग संपर्क भाषा के रूप में सारे भारत में किया जाता है, इसलिए राजभाषा का कार्यान्वयन हम सबका कर्तव्य है जिसे प्रेरणा और प्रोत्साहन द्वारा किया जा सकता है।

बहुभाषी भारत में 'हिंदी भाषा' हृदय की भाषा है, अनुराग की भाषा है। भारत के आम लोगों की भाषा है। जन भाषा के रूप में हिंदी जन-जन के मन में प्रतिष्ठित तो है ही, साथ ही राजभाषा के रूप में वह सम्पूर्ण देश की एकता का प्रतिनिधित्व भी करती है। स्वर्गीय राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन के अनुसार 'हिंदी राष्ट्रीय एकता के मूल को सींचती और दृढ़ करती है'। हिंदी ही एक ऐसी भाषा है, जिसमें हमारे देश की सभी भाषाओं का समन्वय है।

मुझे पूरा विश्वास है कि यह पत्रिका हमारे कार्मिकों की रचनात्मकता का दर्पण बनेगी और सभी को राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक उपयोग करने के लिए प्रेरित करेगी। पत्रिका के नियमित और सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

संपादकीय



(पवन कुमार उनियाल)
लेफ्टिनेंट कर्नल

पीएनजीआरबी की गृह पत्रिका "पीएनजीआरबी दर्पण" का पंचम अंक सुधी पाठकों को सौंपते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

इस पत्रिका में पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड में होने वाली महत्वपूर्ण संगोष्ठियों कार्यक्रमों, सम्मेलनों, बाह्य गतिविधियों और आंतरिक गतिविधियों का संकलन किया गया है। यह पत्रिका संपूर्ण वर्ष में किए गए कार्यालयी नवाचार और नवोन्मेष को मूर्त रूप प्रदान करती है। यह एक माध्यम है, हमारे कार्यालय की गतिविधियों और हमारे विचारों को वाणी देने का एवं लिपिबद्ध करने का। यह पत्रिका अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सृजनशीलता और रचनात्मकता का माध्यम होने के साथ-साथ राजभाषा के प्रति गौरव का भाव भी जागृत करती है।

यह पत्रिका हमारे कार्यालय में राजभाषा में सरकारी कामकाज़ को बढ़ावा देने एवं हिंदी के प्रचार-प्रसार में किए गए प्रयासों का एक सशक्त माध्यम भी है। राजभाषा हिंदी के प्रयोग के संवैधानिक प्रावधानों के निर्वहन की दिशा में यह पत्रिका मील का पत्थर साबित होगी। अत: आपसे आग्रह है, कि इस अंक के बारे में अपने सुझाव और प्रतिक्रियाओं से हमें अवश्य अवगत कराएं, ताकि हम इस पत्रिका के आगामी अंकों को आपकी अपेक्षाओं के अनुरूप बना सकें। मुझे यह भी आशा है, कि इस अंक में प्रकाशित की जा रही रचनाएं सभी पाठकों को पसंद आएंगी। मैं संपादक मंडल एवं रचनाओं के लेखकों को हार्दिक बधाई देता हूं तथा पत्रिका के प्रकाशन की सफलता की कामना करता हूं।

शुभकामनाओं सहित !

माननीय मंत्री श्री हरदीप एस पुरी द्वारा पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड के नए कार्यालय का उद्घाटन

माननीय मंत्री श्री हरदीप एस पुरी ने आज वर्ल्ड ट्रेड सेंटर, नौरोजी नगर, नई दिल्ली में पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड (पीएनजीआरबी) के नए कार्यालय का उद्घाटन किया। इस अवसर पर पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय के सचिव श्री पंकज जैन तथा वरिष्ठ अधिकारी और उद्योग जगत के हितधारक भी उपस्थित थे।



बोर्ड और हितधारकों के बीच बातचीत को सुविधाजनक बनाने के लिए नए कार्यालय में कई बैठक कक्ष और एक बड़ा सम्मेलन कक्ष है। वर्ष 2007 में बोर्ड के गठन के समय पुराने कार्यालय को किराए पर लिया गया था और यह आवश्यकता को पूरा करने के लिए अपर्याप्त था। नए कार्यालय में राष्ट्रीय हाइड्रो-कार्बन अवसंरचना प्रबंधन प्रणाली (एनएचआईएमएस) भी होगी। यह केंद्र देश भर में पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस परिवहन के साथ-साथ पीएनजीआरबी द्वारा अधिकृत पाइपलाइन की वास्तविक समय प्रगति की जानकारी प्रदान करेगा।

श्री हरदीप पुरी ने राष्ट्रीय हाइड्रोकार्बन अवसंरचना निगरानी प्रणाली (एनएचआईएमएस) विकसित करने की पहल के लिए पीएनजीआरबी की सराहना की। यह सॉफ्टवेयर प्रौद्योगिकियों का एक संयोजन है जो पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस कंपनियों से वास्तविक समय के डेटा का उपयोग करता है और सड़कों, रेलवे और वन जल निकायों को एकीकृत करता है जिससे अधिक रणनीतिक योजना और कुशल निगरानी संभव हो पाती है। इसके अलावा हरदीप पुरी ने क्षेत्र में समन्वय बढ़ाने और शासन को अनुकूलित करने के लिए नियामक निकायों की स्वायत्तता सुनिश्चित करने के महत्व को रेखांकित किया।

पीएनजीआरबी के अध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार जैन ने इस अवसर पर पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस क्षेत्र में निष्पक्ष नियामक ढांचा सुनिश्चित करने और दीर्घकालीन विकास को प्रोत्साहन देने के लिए अनुकूल वातावरण को बढ़ावा देने के लिए पीएनजीआरबी की प्रतिबद्धता की पुष्टि की।









यह हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है और इसके लिए हम सबको महान प्रयत्न करना है –

कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी

कविता - अच्छी थी, पगडंडी अपनी



सदस्य- अंजनी कुमार तिवारी
पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड

"अच्छी थी, पगडंडी अपनी,
सड़कों पर तो, जाम बहुत है!!

फुर्र हो गई फुर्सत, अब तो,
सबके पास, काम बहुत है!!

नहीं जरूरत, बूढ़ों की अब,
हर बच्चा, बुद्धिमान बहुत है!!

उजड़ गए, सब बाग बगीचे,
दो गमलों में, शान बहुत है!!

मट्ठा, दही, नहीं खाते हैं,
कहते हैं, ज़ुकाम बहुत है!!

पीते हैं, जब चाय, तब कहीं,
कहते हैं, आराम बहुत है!!

बंद हो गई, चिट्ठी, पत्री,
व्हाट्सएप पर, पैगाम बहुत है!!

झुके-झुके, स्कूली बच्चे,
बस्तों में, सामान बहुत है!!

नही बचे, कोई सम्बन्धी,
अकड़, ऐंठ, अहसान बहुत है!!

सुविधाओं का,ढेर लगा है यार,
पर इंसान, परेशान बहुत है!

सामाजिक परिवेश एवं मानव विकास



घनश्याम
प्रधान सलाहकार (सांख्यिकी)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के साथ ही विधाता की अनुपम कृति भी है। सामाजिक परिवेश न केवल उसके जीवन, प्रगति एवं विकास का आधार है बल्कि उसके जीवन के उद्देश्य को भी निर्धारित करता है। जीवन मे हासिल होने वाली प्राप्तियां एवं उपलब्धियां जन्म के साथ ही मिले हुए परिवेश से तय होने लगती हैं। सौभाग्य से परिवेश यदि बेहतर मिल जाए तो मनुष्य को जीवन की सभी उपलब्धियां सुगमता से मिलने का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। ऐसे परिवेश में जन्मे व्यक्ति की असफलताओं के लिए स्वयं उसकी खुद की अकर्मण्यता ही जिम्मेदार होती है। इसके उलट यदि व्यक्ति विषम परिवेश वाले परिवार में जन्म ले ले तो उसकी चुनौतियां बचपन से ही गंभीर हो जाती हैं। ऐसा नहीं है कि परिवेश ही मनुष्य को ढालता है, मनुष्य भी परिवेश को बदल डालने का माद्दा रखता है। यहीं से साधारण, मध्यम तथा विलक्षण व्यक्तित्वों का विभाजन शुरू हो जाता है। कुछ लोग जन्म से मिले परिवेश को अपनी नियति मान लेते हैं, कुछ अन्य उसे नापसंद तो करते हैं परन्तु उसे बदलने की सामर्थ्य नहीं रखते तथा कुछ बिरले लोग अपने पुरूषार्थ से उसे बदल डालते हैं। वैश्विक स्तर पर ही नहीं भारतीय इतिहास में भी ऐसी महान विभूतियां प्रेरणा की स्रोत रही हैं जिन्होंने अति साधारण परिवेश में जन्म लेकर अपने निजी पुरूषार्थ से परिस्थितियों को अपना गुलाम बना दिया तथा देश और सरकार को सर्वोच्च स्तर से मार्गदर्शन देकर मिसाल कायम की।

यह निर्विवाद सत्य है कि विषम परिवेश से उभर कर आने वाला व्यक्ति सामान्य परिवेश से आने वालों की अपेक्षा अधिक मजबूत, संतुलित एवं संयमित रहता है व भविष्य के अवरोधों एवं झंझावातों को बखूबी झेलना जानता है। परिवेश और परिस्थितियों का यही अंतर सरोज और पंकज के रुप में हमें जीवन मे देखने को मिलता है, जिनकी आभा और लावण्यता के बीच अंतर स्थापित करना कठिन होता है। आत्ममंथन अवश्य करें कि हम सरोज हैं या पंकज और यदि सरोज हैं तो अपने इर्द-गिर्द मौजूद पंकजों को सम्मान दें क्योंकि सफलता में वे बेशक उन्नीस ही हों, परन्तु मजबूती में हम से इक्कीस ही होंगे। लोगों का सम्मान पद-प्रतिष्ठा के साथ-साथ उनकी क्षमताओं के समेकित मूल्यांकन के आधार पर करना ही उचित, उपयुक्त एवं न्यायसंगत है।

भारतीय नौसेना में एक अधिकारी के रूप में मेरा अनुभव



उप-निदेशक
लेफ्टिनेंट कमांडर विद्या सागर मेहता
प्रशासन प्रभाग

मैं कन्नूर जिले के एझिमाला में स्थित भारतीय नौसेना अकादमी (आईएनए) में सब-लेफ्टिनेंट के पद पर शामिल हुआ था। एक प्रतिष्ठित सेवा अकादमी के रूप में, आईएनए सशस्त्र बलों में एक लंबे करियर के लिए प्रारंभिक तैयारी करवाने वाला केंद्र है तथा इसलिए, यह अकादमी सेवा के विशिष्ट विषयों से परिचय कराती है। हालांकि अकादमी पर एक अलग से निबंध लिखा जा सकता है किंतु आज मैं भारतीय नौसेना पर अपना अनुभव आपके साथ साझा करूंगा और यह भी कि मैं इसमें क्यों शामिल हुआ।

बचपन से ही मेरा पालन-पोषण एक सैन्य वातावरण में हुआ और मैंने अपने दादा, पिता और चाचाओं को गर्व से वर्दी पहने देखा। 'गर्व' पहली भावना है, जो मन में आती है। यह कई स्तरों पर काम करता है। वर्दी पहनने और इससे पहचाने जाने से गर्व महसूस होता है। 'नौसेना की वर्दी 'व्यक्ति को एक विशिष्ट अहसास और पहचान प्रदान करती है।

स्नातक स्तर की पढ़ाई पूरी करने के बाद, मैं भारतीय नौसेना में सब-लेफ्टिनेंट-लॉजिस्टिक्स कार्डर में सीधे प्रवेश के माध्यम से इस पद पर चयनित हुआ था। भारतीय नौसेना में लॉजिस्टिक्स कैडर संपूर्ण नौसेना बल के लिए सामग्री प्रबंधन, आपूर्ति श्रृंखला और वित्तीय प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण कार्यों को संभालता है। इस संवर्ग के अधिकारी नौसेना इकाइयों और प्रतिष्ठानों को तट पर और जल में प्रावधानों, उपकरणों और अन्य आवश्यक संसाधनों की सुचारू तथा कुशल आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए उत्तरदायी हैं। वे भारतीय नौसेना की परिचालन तत्परता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

आईएनए में 06 महीने के आधारभूत प्रशिक्षण के उपरांत, मुझे INA HAMLA (आईएनएस हमला) में भारतीय नौसेना के प्रमुख प्रशिक्षण विद्यालय, मुंबई में प्रबंधन पाठ्यक्रम का 01 वर्ष का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण में क्रय, आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन, वित्तीय प्रबंधन, सूची प्रबंधन, परिवहन और वितरण, बुनियादी ढांचा प्रबंधन तथा कार्मिक प्रबंधन जैसे विभिन्न क्षेत्र शामिल थे।

अपना प्रशिक्षण पूरा करने के बाद, मुझे एक युद्धपोत, INA TALWAR (आईएनएस तलवार) पर एक लॉजिस्टिक्स ऑफिसर के रूप में तैनात किया गया था। मैं खुद को भाग्यशाली मानता हूं कि मुझे समुद्र में कुछ सबसे शानदार

दृश्य जैसे कि सूर्योदय और सूर्यास्त तथा कुछ बेहतरीन चंद्रोदय देखने का अवसर मिला। शांत समुद्र या समुद्र में उठता हुआ तूफान अपने तरीके से सुंदर प्रतीत होता हैं जैसे कि चांदनी आकाश, आकाश का अंधेरा। यह सब ब्रह्मांड के रहस्यों को जानने के लिए समान रूप से प्रेरित करते हैं। तारों भरी रातें या तूफानी, नीला समुद्र या धूसर, उज्ज्वल दिन या बादल भरी शाम हो या भोर, समुद्र में अद्वितीय दृश्य दिखाई देते हैं। समुद्र की भव्यता और महासागरों की विशालता से प्रभावित होने के लिए किसी का रोमांटिक होना ज़रूरी नहीं है, लेकिन यदि आप मेरे जैसे हैं, तो आपको समुद्र में या समुद्र के किनारे कुछ सबसे रोमांचकारी क्षणों को महसूस करने का सौभाग्य अवश्य मिलेगा।

अपनी समुद्री नियुक्ति पूरी करने के बाद, मुझे संपूर्ण भारत में फैली भारतीय नौसेना की विभिन्न इकाइयों में तैनात किया गया। नौसेना में यात्रा करने के अपार अवसरों का मतलब है, कि सेवा के कई वर्षों में, मुझे दुनिया भर के 20 से अधिक देशों तथा भारत के भीतर कई विशेष स्थानों, जिनमें कुछ 'दूरस्थ' कोने भी शामिल हैं, की यात्रा करने का सौभाग्य मिला है। विदेश यात्राओं और प्रवास ने हमें अन्य संस्कृतियों और प्रणालियों को आत्मसात करने, उनके प्रसिद्ध स्थलों और स्थानों को देखने, हमारे संपर्क को बढ़ाने और अपने क्षितिज को व्यापक बनाने का अवसर मिला। भारत के विभिन्न हिस्सों की यात्राओं ने हमें अपने देश को बेहतर ढंग से समझने में मदद की।

इस यात्रा का अद्भुत पहलू यह है, कि हम में से प्रत्येक के अनुभव 'समान रूप से भिन्न' होंगे। लोग, स्थान, कालक्रम, हमारे अनुभवों की प्रकृति भिन्न हो सकती है, लेकिन विशेषताएँ और निष्कर्ष अनिवार्य रूप से समान हैं।

निष्कर्ष निकालने के लिए, "मुझे लगता है कि नौसेना में शामिल होने का सबसे अच्छा कारण यह है कि कोई भी इसका भरपूर आनंद ले सकता है। सामान्य तौर पर जीवन के प्रति एक सकारात्मक, चंचलता और बेपरवाह रवैया होता है। हम अपने काम के प्रति गंभीर होते हैं लेकिन खुद को गंभीरता से नहीं लेते। भारतीय नौसेना व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करता है। किसी भी अप्रत्याशित आपातकालीन स्थिति का सामना करने के लिए व्यक्ति में लचीलापन और अनुकूलनशीलता प्रदान करती है। मैं जो कुछ भी हूँ, वह काफी हद तक नौसेना में बिताए गए अपने लंबे वर्षों की बदौलत हूँ। एक बार नौसेना में, तो हमेशा नौसेना में। कुछ अनुराग संबंध कभी खत्म नहीं होते।" मेरा भारतीय नौसेना का अनुराग भी कुछ ऐसा ही है।

नौसेना का जीवन एक व्यक्ति को पूरी तरह से बदल देता है। यही कारण है कि मैं एक प्रतिभाशाली अधिवक्ता, एक सफल खिलाड़ी या एक रॉकस्टार टीवी एंकर बन गया हूं, लेकिन अगर मुझे मौका मिले, तो मैं फिर से नौसेना में शामिल होना चाहूंगा।

हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेदभाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है-

पंडित मदन मोहन मालवीय

एक यादगार निरीक्षण: पियाला से जेवर तक एटीएफ पाइपलाइन का अवलोकन



श्री आशुतोष भट्ट
उप निदेशक
निगरानी

एक स्वच्छ और उज्ज्वल सुबह में हमारी टीम भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (BPCL) द्वारा निर्माणाधीन एविएशन टरबाइन फ्यूल (ATF) पाइपलाइन के स्थल निरीक्षण पर गई। यह पाइपलाइन लगभग 34 किलोमीटर लंबी है और हरियाणा के फरीदाबाद स्थित पियाला ईंधन टर्मिनल से लेकर नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे, जेवर तक जाती है। यह दौरा परियोजना की प्रगति, सुरक्षा, और पर्यावरणीय प्रभाव समझने के लिए बहुत महत्वपूर्ण था।

स्थल तक पहुँचने की यात्रा

हमारी यात्रा दिल्ली से शुरू हुई और फरीदाबाद होते हुए पियाला के पास जंक्शन तक पहुँची। रास्ते मुख्य रूप से अच्छे हाईवे से होकर गए, लेकिन जेवर के करीब ग्रामीण इलाकों में सड़कें छोटी और धूल भरी हो गईं। अंतिम हिस्सा खेतों और गाँवों की सड़कों से होकर गुजरता है, जहां पाइपलाइन जमीन के नीचे से गुजर रही थी।

इस बात ने खुशी दी कि पाइपलाइन खेतों के लगभग एक मीटर नीचे बिछाई गई है, जिससे किसान अपनी खेती जारी रख सकें। BPCL की टीम ने स्थानीय किसानों के साथ मिलकर मुआवज़े का सही प्रबंध किया और बढ़िया तालमेल बनाया जिससे काम में आसानी हुई।

स्थल की स्थिति और निर्माण की प्रगति

निर्धारित निरीक्षण स्थलों पर पहुँच कर हमने देखा कि काम व्यवस्थित और सावधानी से चल रहा है। बड़ी मशीनें और मजदूर तालमेल से काम कर रहे थे, और सुरक्षा के नियम पूरी कड़ाई से लागू थे। पाइपलाइन को जंग से बचाने के लिए खास कोटिंग और कैथोडिक प्रोटेक्शन का इस्तेमाल हो रहा था जिससे इसका जीवन लंबा रहे।

इस पाइपलाइन के बनने से सैकड़ों ईंधन टैंकर की सड़क यात्राएं कम होंगी, जो पर्यावरण के लिए बहुत अच्छा है क्योंकि इससे कार्बन उत्सर्जन भी घटेगा।

चुनौतियाँ और कठिनाइयाँ

यह पाइपलाइन दो राज्यों से होकर गुजरती है: हरियाणा और उत्तर प्रदेश। दोनों राज्यों के प्रशासनिक समन्वय में कभी-कभी दिक्कतें आईं। किसानों से भूमि अनुमति लेना एक लंबा और सावधानी पूर्वक किया गया काम था।

कुछ ज़मीन मालिक स्थान छोड़ चुके थे जिससे प्रक्रिया में देरी हुई। साथ ही, ग्रामीण इलाकों में बिजली और पानी

जैसी बुनियादी सुविधाएं तैयार करने में भी स्थानीय सहभागिता की ज़रूरत पड़ी।

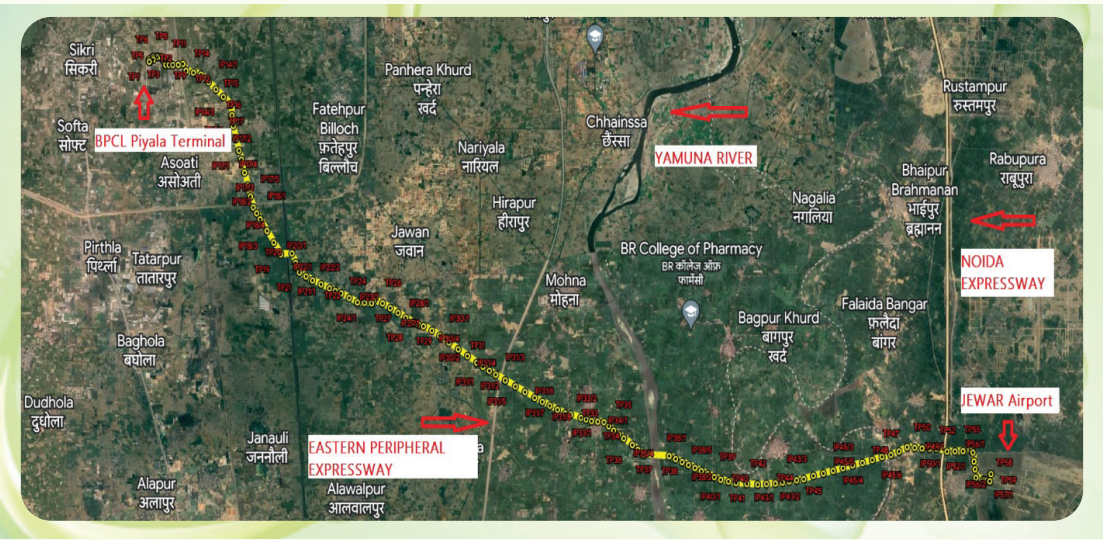
फिर भी, टीम और स्थानीय प्रशासन के संयुक्त प्रयासों से 2025 की शुरुआत तक 80 से 90 प्रतिशत काम पूरा हो चुका था।

निरीक्षण का महत्व

यह यात्रा केवल तकनीकी निरीक्षण नहीं थी, बल्कि यह समझाने वाली थी कि कैसे सामाजिक, पर्यावरणीय, और प्रशासनिक जटिलताओं के बावजूद बड़ी परियोजनाएं सफल हो सकती हैं। खेतों के नीचे चलती यह आधुनिक पाइपलाइन भारत के सतत विकास का प्रतीक है।

यह परियोजना न केवल नोएडा के नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के लिए ईंधन आपूर्ति बढ़ाएगी, बल्कि पर्यावरण पर इसके कम प्रभाव के कारण भी महत्वपूर्ण है। यह अनुभव आया कि बड़ी परियोजनाओं में स्थानीय लोगों का सहयोग, पर्यावरण का संरक्षण और योजनाबद्ध प्रबंधन अत्यंत जरूरी होता है।

जब हम वापस लौटे, तो मन में यही विचार था कि इस तरह की आधारभूत संरचनाएं केवल मशीनों से नहीं, बल्कि लोगों के भरोसे और सहयोग से बनती हैं।





















आज की सबसे पहली और सबसे बड़ी समाज सेवा यह है कि हम अपनी देशी भाषाओं की ओर मुड़ें और हिंदी को राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करें–

महात्मा गांधी

रिस्क मैनेजमेंट के लिए एक संपूर्ण दृष्टिकोण



युवराज सिंह राठौर
उप-परामर्शदाता
तकनीकी प्रभाग

प्रोसेस सेफ्टी से होने वाली अधिकतम घटनाओं में कुछ समान कारण पाए जाते हैं। बड़े हादसे कम होते हैं, लेकिन जब होते हैं तो उनके नतीजे बहुत गंभीर हो सकते हैं। जाँच से अक्सर पता चलता है कि खतरे आसानी से नज़र नहीं आते, असली कारण छिपे रहते हैं (जिन्हें लीडिंग और लैगिंग इंडिकेटर कहा जाता है), और मनुष्यों की एक आम आदत है कि वे छोटे-छोटे नियमों के उल्लंघन को धीरे-धीरे सामान्य मानने लगते हैं। प्रोसेस सेफ़्टी मैनेजमेंट (पीएसएम) और सेफ़्टी मैनेजमेंट सिस्टम (एसएमएस) पहले हुए हादसों से सीखे गए सबक के आधार पर काम करते हैं, ताकि आगे ऐसे हादसों को रोका जा सके।

➢ **प्रोसेस सेफ़्टी मैनेजमेंट (पीएसएम) – इतिहास और आवश्यकता**

हम लगातार जटिल होते जा रहे सिस्टम और प्रोसेस को डिज़ाइन, प्रबंधित और संचालित करने में लगे हुए हैं। इन्हें सुरक्षित तरीके से चलाने की हमारी क्षमता इस बात पर आधारित है कि हमने अब तक के अनुभवों और विफलताओं से क्या सीखा है। कई बड़ी घटनाओं ने मिलकर आज जिसे हम प्रोसेस सेफ़्टी मैनेजमेंट (पीएसएम) कहते हैं, उसे आकार दिया। आकार देने वाली कुछ मुख्य घटनाएं है - फ्लिक्सबरो, यूके (1974), थ्री माइल आइलैंड, अमेरिका (1979), भोपाल, भारत (1984), पाइपर अल्फा, यूके (1988), टेक्सास सिटी रिफाइनरी, अमेरिका (2005), डीपवॉटर होराइजन ऑयल स्पिल, मेक्सिको की खाड़ी (2010)

पीएसएम की शुरुआत 1984 की भोपाल गैस त्रासदी के बाद हुई, जब खतरनाक रसायनों को स्टोर और प्रोसेस करने वाली इकाइयों के लिए कड़े नियमों की ज़रूरत महसूस हुई। सुरक्षित और स्वास्थ्यकर कार्यस्थलों को सुनिश्चित करने में सहायता हेतु, ओशा (OSHA) ने अत्यधिक खतरनाक रसायनों के प्रोसेस सेफ्टी मैनेजमेंट मानक (29 CFR 1910.119) जारी किया।

▪ **पीएसएम क्यों आवश्यक है?**

- दुर्घटनाओं को रोकने के लिए
- सही उपयोग को बढ़ावा देने के लिए
- सुरक्षा प्रक्रियाओं को सरल बनाने के लिए
- कर्मचारियों की सुरक्षा करने के लिए
- समन्वय को बढ़ावा देने के लिए
- आम जनता की रक्षा करने के लिए

- **सेफ़्टी मैनेजमेंट सिस्टम (एसएमएस)** - इतिहास और आवश्यकता

सेफ़्टी मैनेजमेंट सिस्टम (एसएमएस) सुरक्षा जोखिमों को नियंत्रित करने और उनकी प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए एक औपचारिक, ऊपर से नीचे तक लागू किया जाने वाला संगठन-व्यापी तरीका है। इसमें सुरक्षा जोखिम प्रबंधन के लिए व्यवस्थित प्रक्रियाएँ, प्रथाएँ और नीतियाँ शामिल होती हैं।

एसएमएस एक संरचित तरीका प्रदान करता है जिससे खतरनाक उद्योगों में सुरक्षा जोखिमों का प्रबंधन और सुरक्षा में सुधार किया जा सके। **यूके के कोमाह (COMAH) नियमों** के अनुसार, किसी भी सेफ़्टी मैनेजमेंट सिस्टम में यह बातें शामिल होनी चाहिए:

क) इसमें संगठन की संरचना, जिम्मेदारियाँ, प्रथाएँ, प्रक्रियाएँ, तरीके और संसाधन शामिल हों, ताकि **मेज़र एक्सीडेंट प्रिवेंशन पॉलिसी (एमएपीपी)** को लागू किया जा सके।

ख) यह संगठन में मौजूद खतरों, गतिविधियों और जटिलताओं के अनुसार होना चाहिए।

ग) यह जोखिमों के आकलन पर आधारित होना चाहिए।

घ) इसे लिखित रूप में दर्ज किया जाना चाहिए और **सेफ़्टी रिपोर्ट** के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

सरल शब्दों में **एमएपीपी** - सुरक्षा सिद्धांत तय करने वाली नीति है, **एसएमएस** - वह प्रणाली जो इन सिद्धांतों को रोज़मर्रा के कामकाज में लागू करती है और **सेफ़्टी रिपोर्ट** - इस बात का सबूत है कि एसएमएस सही तरह से काम कर रहा है।

- **एसएमएस क्यों आवश्यक है?**

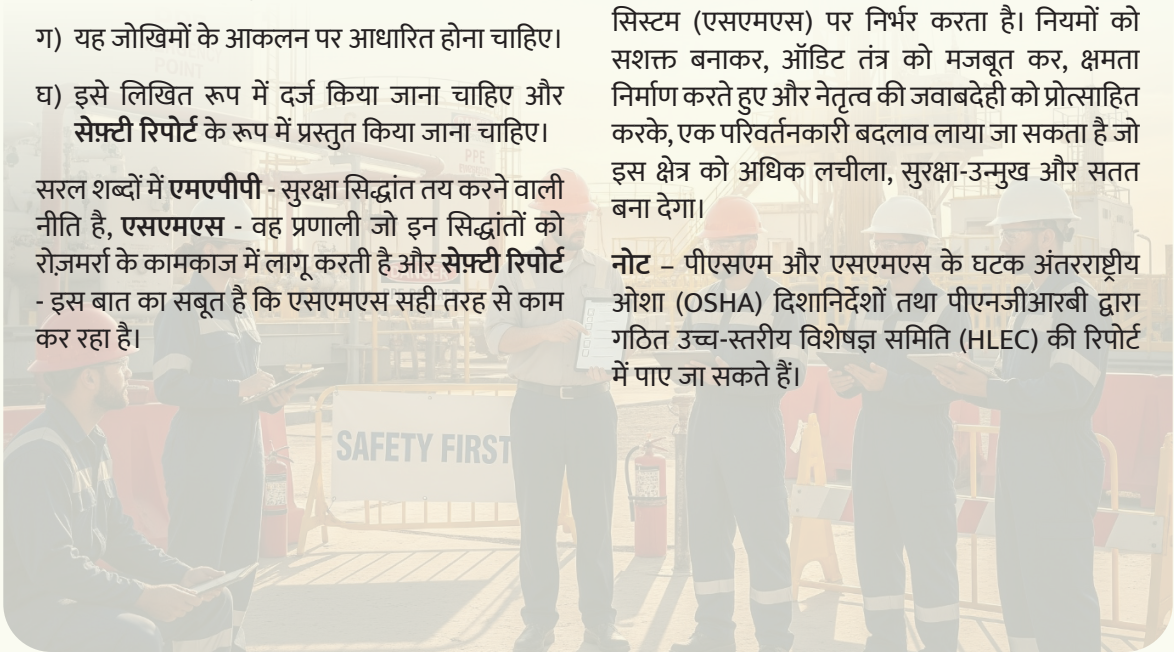
किसी संगठन के मैनेजमेंट सिस्टम का हिस्सा होने के नाते, सेफ़्टी मैनेजमेंट सिस्टम (एसएमएस) कई फायदे प्रदान करता है। इनमें से कुछ हैं:

- बेहतर निर्णय लेने के लिए आवश्यक डेटा उपलब्ध कराना
- दुर्घटनाओं के खतरे को कम करके संगठन में सुरक्षा बढ़ाना
- संसाधनों का सही उपयोग कर दक्षता बढ़ाना और लागत घटाना
- संगठन की संस्कृति को मजबूत करना
- संगठन की जिम्मेदारी और जवाबदेही को प्रदर्शित करना

उपसंहार

भारत के तेल एवं गैस क्षेत्र में सुरक्षा का भविष्य एक समन्वित, मानकीकृत और सक्रिय दृष्टिकोण पर आधारित प्रोसेस सेफ्टी मैनेजमेंट (पीएसएम) और सेफ्टी मैनेजमेंट सिस्टम (एसएमएस) पर निर्भर करता है। नियमों को सशक्त बनाकर, ऑडिट तंत्र को मजबूत कर, क्षमता निर्माण करते हुए और नेतृत्व की जवाबदेही को प्रोत्साहित करके, एक परिवर्तनकारी बदलाव लाया जा सकता है जो इस क्षेत्र को अधिक लचीला, सुरक्षा-उन्मुख और सतत बना देगा।

नोट – पीएसएम और एसएमएस के घटक अंतरराष्ट्रीय ओशा (OSHA) दिशानिर्देशों तथा पीएनजीआरबी द्वारा गठित उच्च-स्तरीय विशेषज्ञ समिति (HLEC) की रिपोर्ट में पाए जा सकते हैं।



प्राकृतिक नेतृत्व की भावनात्मक बुद्धिमत्ता



श्री शिव शंकर प्रसाद
उप परामर्शदाता
प्रशासन प्रभाग

1. नेतृत्व की भूमिका किसी भी संगठन की सफलता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। पारंपरिक रूप से, हम सोचते थे कि एक अच्छा लीडर वह होता है जिसके पास बहुत अधिक तकनीकी ज्ञान हो, जो तेज दिमाग का हो, और जो कठिन निर्णय ले सके।

2. डेनियल गोलमैन और उनके शोध ने यह साबित किया कि सर्वोत्तम लीडर वे होते हैं जो अपनी और दूसरों की भावनाओं को समझते हैं और उन्हें प्रभावी ढंग से प्रबंधित कर पाते हैं। प्राकृतिक नेतृत्व (Primal Leadership) के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence) के उपयोग के विचार को गोलमैन ने विकसित किया है। यह इस विचार पर आधारित है कि नेता न केवल कार्यों का प्रबंधन करते हैं, बल्कि वे अपनी टीमों और पूरे संगठन के भावनात्मक वातावरण (Emotional Climate) का भी निर्माण करते हैं और कर्मचारियों के बीच गहरा विश्वास और विश्वसनीयता स्थापित करता है। यह विश्वास टीम के भीतर सहयोग और वफादारी को बढ़ाता है।

3. प्राकृतिक नेता अपनी जिम्मेदारियों के हर स्तर पर भावात्मक बुद्धिमत्ता का प्रयोग करके अपेक्षित परिणाम प्राप्त करते हैं। ये नेता अपनी संवेदनाओं, समझदारी और सहानुभूति का उपयोग करके टीम के सदस्यों के साथ सकारात्मक संबंध बनाते हैं, जिससे कार्यस्थल का वातावरण मजबूत होता है। वे अपनी भावनाओं को नियंत्रित कर आत्मानुशासन बनाए रखते हैं और दूसरों की भावनाओं को समझ कर सही मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। इस प्रकार, वे न सिर्फ अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं बल्कि एक प्रामाणिक और प्रेरणादायक नेतृत्व का उदाहरण भी प्रस्तुत करते हैं। यह भावात्मक बुद्धिमत्ता उन्हें जटिल परिस्थितियों का सफलतापूर्वक सामना करने में सक्षम बनाती है, जिससे संगठन की समग्र प्रगति सुनिश्चित होती है।

4. एक ऑर्केस्ट्रा को संगीतकार सिर्फ नोट्स बजाने का निर्देश नहीं देता। वह अपनी ऊर्जा, अपने हाव-भाव और अपने जुनून से पूरे ऑर्केस्ट्रा में एक भावनात्मक तालमेल पैदा करता है। यही तालमेल सुंदर संगीत को जन्म देता है। ठीक इसी तरह, एक प्राइमल लीडर अपनी भावनात्मक ऊर्जा से टीम में उत्साह, प्रेरणा और जुड़ाव पैदा करता है।

5. हमारा दिमाग दो तरह से काम करता है:

   विश्लेषणात्मक (Analytical): यह लॉजिक, डेटा और तथ्यों पर आधारित होता है। यह हमारी बुद्धिमत्ता (IQ) का हिस्सा है।

   भावनात्मक (Emotional): यह हमारी भावनाओं, अंतर्ज्ञान और सामाजिक संबंधों से संबंधित होता है। यह हमारी भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) का हिस्सा है।

6. प्राइमल लीडरशिप के अनुसार कि सच्चा नेतृत्व तब होता है जब ये दोनों हिस्से संतुलित हों, लेकिन भावनात्मक हिस्सा ही लोगों को वास्तविक रूप से प्रेरित करता है। जब एक लीडर सकारात्मक भावनाएँ जगाता है – जैसे उत्साह, आशा, सहानुभूति – तो लोग अधिक मेहनत करते हैं, रचनात्मक होते हैं, और एक-दूसरे का सहयोग करते हैं। इसके विपरीत, एक लीडर जो नकारात्मक भावनाएँ (जैसे डर, गुस्सा, निराशा) पैदा करता है, वह लोगों को हतोत्साहित करता है और प्रदर्शन को गिराता है।

7. प्राइमल लीडर की आवश्यकता क्यों है?

8. आज के दौर में, जब दुनिया इतनी तेजी से बदल रही है, और हर जगह अनिश्चितता है, प्राइमल लीडर की जरूरत पहले से कहीं ज्यादा बढ़ गई है। इसके कई कारण हैं:

   (i) प्रेरणा और जुड़ाव बढ़ाना (Boosting Motivation & Engagement):

   - आज के कर्मचारी केवल वेतन के लिए काम नहीं करते; वे अर्थ (Meaning) और उद्देश्य (Purpose) चाहते हैं।
   - एक प्राइमल लीडर कर्मचारियों की व्यक्तिगत आकांक्षाओं और संगठन के लक्ष्यों के बीच एक भावनात्मक पुल बनाता है।
   - जब लीडर भावनात्मक रूप से लोगों से जुड़ते हैं, तो वे उन्हें प्रेरित करते हैं, जिससे कर्मचारी अपनी पूरी क्षमता के साथ काम करते हैं और संगठन के प्रति अधिक वफादार होते हैं।

   (ii) बेहतर प्रदर्शन और उत्पादकता (Enhanced Performance & Productivity):

   - एक सकारात्मक भावनात्मक माहौल लोगों को खुलकर सोचने, जोखिम लेने और नवाचार करने के लिए प्रोत्साहित करता है।
   - जब लोग खुश और सुरक्षित महसूस करते हैं, तो वे अपनी पूरी ऊर्जा काम में लगाते हैं, जिससे व्यक्तिगत और टीम का प्रदर्शन दोनों बेहतर होते हैं।
   - उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले नेता वाली टीमें अधिक उत्पादक होती हैं।

   (iii) परिवर्तन प्रबंधन (Managing Change Effectively):

   - परिवर्तन स्वाभाविक रूप से लोगों में अनिश्चितता और चिंता पैदा करता है।
   - एक प्राइमल लीडर इन भावनाओं को पहचानता है, सहानुभूति दिखाता है, और परिवर्तन के दौरान लोगों को सहारा देता है।
   - वे प्रभावी ढंग से संवाद करते हैं, भय को कम करते हैं, और लोगों को परिवर्तन को स्वीकार करने और उसके अनुकूल ढलने में मदद करते हैं। जब कंपनी में कोई बड़ा बदलाव होता है, तो प्राइमल लीडर कर्मचारियों को विश्वास दिलाता है कि वे उनके साथ हैं।

(iv) संघर्ष समाधान और संबंध निर्माण (Conflict Resolution & Relationship Building):

- कार्यस्थल पर संघर्ष आम बात है। प्राइमल लीडर अपनी भावनात्मक बुद्धिमत्ता का उपयोग करके संघर्षों को अधिक कुशलता से हल करते हैं।
- वे विभिन्न दृष्टिकोणों को समझते हैं, सहानुभूति दिखाते हैं, और ऐसे समाधान निकालते हैं जो सभी पक्षों के लिए स्वीकार्य हों।
- यह मजबूत, स्वस्थ और सहकारी कार्य संबंधों को बढ़ावा देता है, जिससे टीम का सामंजस्य बढ़ता है।

(v) लचीलापन और तनाव प्रबंधन (Resilience & Stress Management):

- आज के प्रतिस्पर्धी माहौल में तनाव एक बड़ी चुनौती है।
- प्राइमल लीडर न केवल अपनी भावनाओं को नियंत्रित करते हैं, बल्कि वे दूसरों को भी तनाव और दबाव का सामना करने में मदद करते हैं।
- वे खुद लचीलेपन का प्रदर्शन करते हैं और कठिन परिस्थितियों में भी शांत रहते हैं, जिससे उनकी टीमें भी अधिक लचीली और दबाव सहने में सक्षम बनती हैं।

(vi) विश्वास और विश्वसनीयता का निर्माण (Building Trust & Credibility):

- जब एक लीडर अपनी भावनाओं के प्रति जागरूक होता है, दूसरों के प्रति सहानुभूति दिखाता है, और अपने व्यवहार में स्थिरता बनाए रखता है, तो वह कर्मचारियों के बीच गहरा विश्वास और विश्वसनीयता स्थापित करता है।
- यह विश्वास टीम के भीतर सहयोग और वफादारी को बढ़ाता है, जो किसी भी संगठन की दीर्घकालिक सफलता के लिए आवश्यक है।

9. **भावनात्मक बुद्धिमत्ता के आयाम** : प्राइमल लीडर बनने के लिए, भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) के चार प्रमुख आयामों को समझना आवश्यक है।

(i) आत्म-जागरूकता (Self-Awareness):

अपनी भावनाओं, ताकत, कमजोरियों, मूल्यों और उद्देश्यों को समझना।

यह जानना कि भावनाएँ, विचारों और व्यवहार को कैसे प्रभावित कर रही हैं।

उदाहरण: जब आपको गुस्सा आए, तो यह समझना कि यह गुस्सा क्यों आया और इसका आप पर क्या असर हो रहा है।

(ii) आत्म-नियमन (Self-Regulation):

अपनी भावनाओं, आवेगों और प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित करना।

शांत रहना और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में सोच-समझकर प्रतिक्रिया देना।

उदाहरण: किसी तनावपूर्ण स्थिति में तुरंत प्रतिक्रिया देने के बजाय, एक पल रुकना और फिर प्रतिक्रिया देना।

(iii) सामाजिक जागरूकता (Social Awareness):

दूसरों की भावनाओं, जरूरतों और चिंताओं को समझना।

गैर-मौखिक संकेतों (Non-verbal cues) को पढ़ना और संगठन की गतिशीलता को समझना।

इसमें सहानुभूति (Empathy) शामिल है – खुद को दूसरे की जगह रखकर उनकी भावनाओं को महसूस करना।

उदाहरण: टीम के किसी सदस्य के तनाव में होने पर उसे पहचानना और उसकी मदद करना।

(iv) संबंध प्रबंधन (Relationship Management):

दूसरों के साथ प्रभावी ढंग से बातचीत करना और संबंध बनाना।

प्रेरित करना, प्रभावित करना, संघर्षों को सुलझाना और टीमें बनाना।

यह भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence) के पहले तीन आयामों का अंतिम परिणाम है।

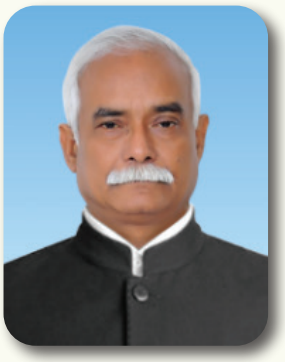
उदाहरण: अपनी टीम को किसी नए प्रोजेक्ट के लिए प्रेरित करना, या टीम के सदस्यों के बीच के मतभेदों को सुलझाना।

10. वास्तविक कार्य संस्कृति में हर स्तर की जिम्मेदारी पर भावात्मक बुद्धिमत्ता का प्रयोग किया जाता है। चाहे कर्मचारी हों, टीम लीडर या वरिष्ठ प्रबंधक, सभी अपने-अपने पदों पर भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने और सही तरीके से व्यक्त करने की क्षमता का उपयोग करते हैं। यह प्रभावी संचार, बेहतर टीम वर्क, संघर्ष समाधान और सकारात्मक कार्य वातावरण बनाने में मदद करता है। इस तरह, भावात्मक बुद्धिमत्ता हर स्तर पर कार्यक्षमता और संगठनात्मक सफलता के लिए आवश्यक मूलभूत कौशल बन जाती है।

11. यहां तक कि यदि कोई व्यक्ति सीधे भावात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence) को नहीं भी जानता, तो भी यह हर स्तर पर प्रदर्शन में सुधार लाता है। प्राकृतिक नेता अपने स्तर पर भावात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence) का उपयोग करके बेहतर परिणाम हासिल करते हैं और फिर बिना ध्यानाकर्षण के नई परियोजनाओं या वेंचरों की ओर बढ़ जाते हैं। यह उनका योगदान न तो हाईलाइट होता है और न ही प्रबंधन द्वारा सराहा जाता है, जिससे शीर्ष प्रबंधन, निम्न प्रबंधन और कर्मियों के बीच अलगाव, क्षोभ और असंतोष की स्थिति बन जाती है। यह स्थिति संगठन में भ्रम और अनिश्चितता को जन्म देती है, जो अंततः कार्यक्षमता को प्रभावित कर सकती है। उचित मान्यता और समर्पित प्रयास का अभाव, इस खामोशी और अस्पष्टता का कारण बनता है।

12. संक्षेप में, प्राकृतिक नेता (प्राइमल लीडरशिप) सिर्फ एक प्रबंधन तकनीक नहीं है, यह नेतृत्व का एक मूलभूत तरीका है। यह मानता है कि लोग भावनाओं से प्रेरित होते हैं, और एक सफल लीडर वह होता है जो इन भावनाओं को सकारात्मक दिशा में मोड़ना जानता हो। आज के बदलते समय में, हमारे संगठनों और समाज को ऐसे लीडर्स की जरूरत है जो केवल दिमाग से नहीं, बल्कि दिल से भी नेतृत्व कर सकें। ऐसे लीडर्स जो अपने आस-पास के लोगों में सर्वश्रेष्ठ को बाहर ला सकें, जो उन्हें प्रेरित कर सकें, और जो उन्हें एक साझा लक्ष्य के लिए एकजुट कर सकें।

कार्यस्थल और भाषा



श्री प्रेम कुमार जारुहार
उप-परामर्शदाता
प्रशासन प्रभाग

भाषा किसी व्यक्ति और समाज के साथ व्यवहार और संचार के रूप में जगत विशेष से भी जुड़ी होती है। कार्यस्थल और भाषा का परस्पर संबंध एक आकर्षक और बहुआयामी विषय है। भाषा कार्यस्थल की गतिशीलता को आकार देने, संचार, सम्बन्धों, संस्कृतियों और उत्पादकता को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। किसी भी कार्यस्थल का मूल संचार भाषा होता है। भाषा विचारों, सूचनाओं और निर्देशों के आदान-प्रदान को सुगम बनती है। चाहे वह ई-मेल, मीटिंग, फोन कॉल या अनौपचारिक बातचीत के माध्यम से हो, जिस तरह से भाषा का उपयोग किया जाता है, वह संदेश की स्पष्टता और प्रभावशीलता को बहुत प्रभावित कर सकता है। स्पष्ट और सटीक भाषा गलतफ़हमी को रोक सकती है। कार्यप्रवाह में सुधार कर सकती है और यह सुनिश्चित कर सकती है कि सभी की समझ एक जैसी हो। असपष्ट भाषा या खराब संचार भाषा भ्रम, देरी और गलतियों का कारण बन सकता है।

कार्यस्थल में भाषा को कर्मचारियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि द्वारा आकार दिया जा सकता है। विभिन्न क्षेत्रों, देशों या यहां तक कि स्थानीय उप-संस्कृतियों के लोग अपने स्वयं के मुहावरों, अभिव्यक्तियां और संचार के तरीकों को अपना सकते हैं।

भाषा की विविधता:-

भाषा विविधता एक समृद्ध कार्यस्थल संस्कृति को भी जन्म दे सकती है, जहां विभिन्न दृष्टिकोणों को महत्व दिया जाता है, लेकिन इसके लिए भाषा प्रशिक्षण या अनुवाद के मामले में अतिरिक्त प्रयास की आवश्यकता हो सकती है। कार्यस्थल अक्सर अपना विशिष्ट शब्दजाल या शब्दावली विकसित करते है, जो उद्योगों (जैसे कानूनी, तकनीकी, प्रशासनिक) में मिल सकते हैं। विशेष भाषा के उपयोग के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव हो सकते हैं।

सकारात्मक प्रभाव:-

व्यवसायिक शब्दजाल कर्मचारियों को अपने क्षेत्र में कुशलतापूर्वक और सटीक रूप से संवाद करने की अनुमति देता है, जिससे उनके अपनेपन और विशेषज्ञता की भावना पैदा होती है।

नकारात्मक प्रभाव:- शब्दजाल का अत्यधिक उपयोग, खासकर जब यह अस्पष्ट हो या दूसरों को अलग-थलग कर दें, उन लोगों के लिए संचार को और अधिक कठिन बना सकता है जो शब्दों से अपरिचित हैं।

गैर-मौखिक संचार:-

भाषा केवल शब्दों के बारे में नहीं है। गैर-मौखिक संकेत जैसे कि शारीरिक भाषा, आवाज़ का लहज़ा और चेहरे का भाव-कार्यस्थल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। ये कभी-कभी शब्दों से कहीं ज़्यादा संदेश दे सकते है, जिससे संदेशों कि व्याख्या कैसे की जाती है, यह तय होता है। आवाज़ का लहज़ा एक दोस्तना, शांत लहज़ा सकारात्मक कार्य वातावरण को बढ़ावा दे सकता है। शारीरिक भाषा खुले हाव-भाव सहयोग का संकेत दे सकते है, जबकि बंद शारीरिक भाव असहजता या प्रतिरोध का संकेत दे सकती है।

भाषा पर तकनीकी प्रभाव:-

कार्यस्थल पर डिजिटल संचार के उदय जैसे कि ई-मेल, वीडियो कॉल ने भाषा के उपयोग के तरीके को काफी प्रभावित किया है। ई-मेल और टेक्स्ट आधारित संचार के लिए भाषा के प्रति एक अलग दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, जहां संक्षिप्तता पर ज़ोर दिया जाता है।



पाइप्ड नेचुरल गैस (पीएनजी) बनाम रेट्रोफिटेड एलपीजी स्टोव : दक्षता, उत्सर्जन और सुरक्षा का तुलनात्मक मूल्यांकन



अंबिकेश तिवारी
सहायक परामर्शदाता
तकनीकी प्रभाग

भारत का घरेलू ऊर्जा परिदृश्य तेजी से बदल रहा है। परंपरागत रूप से प्रमुख रसोई ईंधन रहे तरलीकृत पेट्रोलियम गैस (एलपीजी) के स्थान पर अब पाइप्ड नेचुरल गैस (पीएनजी) एक स्वच्छ, सुरक्षित और अधिक टिकाऊ विकल्प के रूप में उभर रही है। दक्षता, वहनीयता, सुरक्षा तथा पर्यावरणीय प्रभाव के लिहाज़ से पीएनजी के स्पष्ट लाभ हैं, जो इसे भारत की स्वच्छ ऊर्जा परिवर्तन यात्रा का प्रमुख वाहक बनाते हैं।

इस बदलाव के केंद्र में पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड (पीएनजीआरबी) है, जिसकी स्थापना पीएनजीआरबी अधिनियम, 2006 के अंतर्गत की गई थी। बीते दशक में बोर्ड ने सिटी गैस डिस्ट्रीब्यूशन (सीजीडी) नेटवर्क के विस्तार को प्राथमिकता दी है और अब तक 307 भौगोलिक क्षेत्रों (जीए) को अधिकृत किया है, जो लगभग पूरे देश को—34 राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों के 733 ज़िलों को— शामिल करते हैं। अपने न्यूनतम कार्य कार्यक्रम (एमडब्ल्यूपी) लक्ष्यों के अंतर्गत पीएनजीआरबी का उद्देश्य वर्ष 2032 तक लगभग 12.63 करोड़ पीएनजी कनेक्शन प्रदान करना है। 31 अगस्त 2025 तक सीजीडी संस्थाओं द्वारा लगभग 1.5 करोड़ पीएनजी कनेक्शन दिए जा चुके हैं, जो इस लक्ष्य की ओर निरंतर प्रगति को दर्शाता है।

हालाँकि, एलपीजी से पीएनजी में यह बदलाव केवल ईंधन का परिवर्तन नहीं है, बल्कि इसके लिए सुरक्षित एवं दक्ष उपयोग हेतु विशेष रूप से डिज़ाइन और अनुकूलित रसोई उपकरणों की आवश्यकता भी होती है। आज भी बड़ी संख्या में परिवार पीएनजी उपयोग के लिए रेट्रोफिटेड एलपीजी स्टोव पर निर्भर हैं, जो दक्षता घटाने, ईंधन खपत बढ़ाने, उत्सर्जन बढ़ाने और सुरक्षा जोखिम उत्पन्न करने का कारण बनते हैं। यह स्थिति भारतीय मानक (आईएस 17153) के अनुरूप पीएनजी स्टोव के व्यापक उपयोग की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है, ताकि पीएनजी के लाभों का पूर्ण और सतत् रूप से लाभ उठाया जा सके।

तुलनात्मक अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष

1. थर्मल एफिशिएंसी (ऊष्मीय दक्षता)

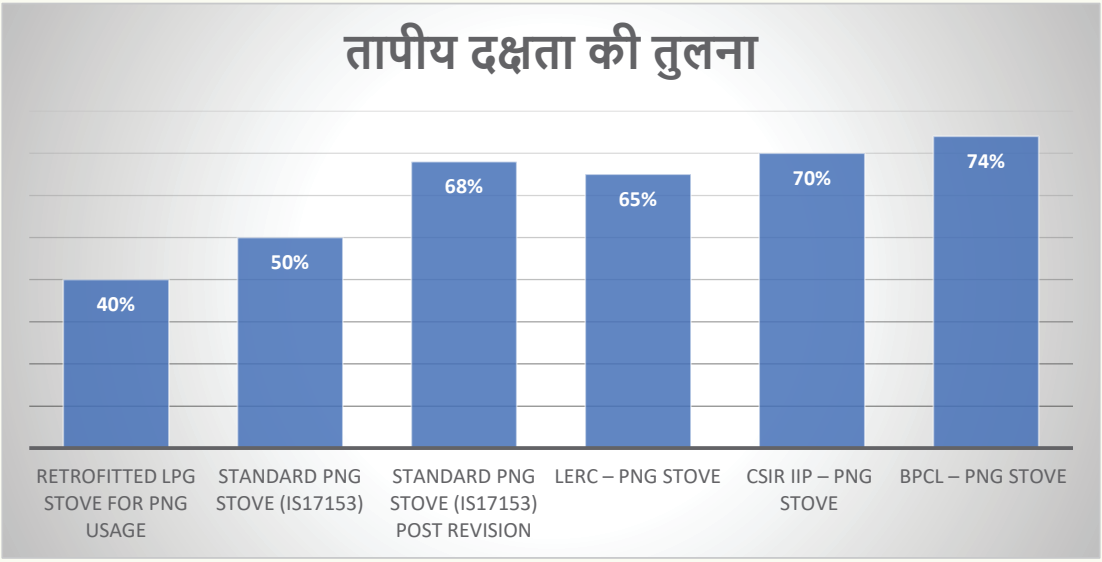
थर्मल एफिशिएंसी बताती है कि ईंधन से उत्पन्न ऊर्जा कितनी मात्रा में वास्तव में भोजन पकाने में उपयोग हो रही है।

- **रेट्रोफिटेड एलपीजी स्टोव** – 40% तक दक्षता, यानी अधिक गैस खर्च और धीमी गति से कुकिंग|
- **मानक पीएनजी स्टोव (IS 17153)** – 50% तक दक्षता। (68% में संशोधित किया जाना है)
- **अनुसंधान आधारित उन्नत पीएनजी स्टोव (CSIR-IIP, LERC, BPCL)** – 65% से 74% तक दक्षता, जो आधुनिक रसोई के लिए सर्वोत्तम है।

3. सुरक्षा पहलू

रेट्रोफिटेड स्टोव में अस्थायी नोज़ल और ड्रिलिंग जैसी प्रक्रियाएँ की जाती हैं। इससे:

- गैस रिसाव की संभावना बढ़ती है।
- लौ अस्थिर हो जाती है, जिससे अचानक **फ्लैशबैक या बैकफायर** हो सकता है।



चार्ट – 1 – उपलब्ध पीएनजी स्टोवों की तापीय दक्षता की तुलना

2. CO/CO_2 उत्सर्जन

- रेट्रोफिटेड स्टोव में अधजली गैस से **कार्बन मोनोऑक्साइड (CO)** अधिक निकलता है। यह गैस स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक है और लंबे समय तक साँस में लेने पर गंभीर बीमारियों का कारण बन सकती है।
- मानक पीएनजी स्टोव में उत्सर्जन BIS मानकों (<0.02) के भीतर रहता है, जिससे वायु गुणवत्ता बेहतर रहती है।
- आग लगने और दुर्घटना का जोखिम बढ़ जाता है।

इसके विपरीत, **मानक पीएनजी स्टोव (IS 17153:2019)** में डिज़ाइन वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित होता है। इसमें स्थिर लौ, नियंत्रित गैस दबाव और लंबे समय तक सुरक्षित संचालन की गारंटी मिलती है।

4. आर्थिक विश्लेषण

- पीएनजी उपयोग के लिए रेट्रोफिटेड एलपीजी स्टोव में गैस की खपत दक्ष नहीं होती, जिसके परिणामस्वरूप गैस बिल बढ़ जाता है।

- सीएसआईआर-आईआईपी, बीपीसीएल तथा एलईआरसी द्वारा विकसित मानक पीएनजी स्टोव की कीमत लगभग ₹2,500 है, लेकिन **ईंधन की बचत से लगभग 12 महीनों में इसकी कीमत वसूल हो जाती है।**

भविष्य की दिशा

भारत के लिए स्वच्छ ऊर्जा की ओर यह बदलाव सिर्फ पर्यावरणीय दृष्टि से ही नहीं, बल्कि घरेलू सुरक्षा और आर्थिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है।

- **नीति-निर्माताओं और नियामकों** को चाहिए कि मानक पीएनजी स्टोव के उपयोग को अनिवार्य करें ।
- **उपभोक्ताओं** को भी जागरूक होकर रेट्रोफिटेड स्टोव छोड़कर BIS मानक वाले पीएनजी स्टोव अपनाने चाहिए।
- **निर्माताओं और शोध संस्थानों** को ऐसे स्टोव विकसित करने चाहिए जो और भी अधिक दक्ष, सस्ते तथा उपयोग में सरल हों।

निष्कर्ष

स्पष्ट है कि रेट्रोफिटेड एलपीजी स्टोव अल्पकालिक समाधान मात्र हैं। ये स्टोव **असुरक्षित, अलाभप्रद और प्रदूषणकारी** हैं। वहीं, मानक-समर्थित पीएनजी स्टोव ऊर्जा दक्षता, सुरक्षा और पर्यावरणीय लाभ सभी दृष्टियों से श्रेष्ठ हैं।

इसलिए, भारत में **12 करोड़ से अधिक पीएनजी कनेक्शनों** के लक्ष्य को हासिल करने के साथ-साथ यह सुनिश्चित करना भी उतना ही ज़रूरी है कि हर घर में केवल **मानक पीएनजी स्टोव** ही उपयोग में आए। यही कदम भारत को सुरक्षित, स्वच्छ और सतत ऊर्जा भविष्य की ओर ले जाएगा।



सांख्यिकी – निर्णय लेने का विज्ञान



श्री अमित त्रिपाठी
सहायक परामर्शदाता
सांख्यिकी प्रभाग

प्रस्तावना:

आधुनिक युग में हम हर जगह आँकड़ों से घिरे हुए हैं — राजनीति हो, व्यापार हो, शिक्षा या चिकित्सा। इन आँकड़ों को समझने, उनका विश्लेषण करने और निर्णय लेने के लिए जिस विद्या का उपयोग होता है, उसे सांख्यिकी कहा जाता है। यह केवल संख्याओं का खेल नहीं, बल्कि तथ्यों को समझने और उनके आधार पर तर्कसंगत निर्णय लेने की एक महत्वपूर्ण विधा है।

सांख्यिकी का अर्थ और परिभाषा:

सांख्यिकी एक गणितीय शाखा है जो आँकड़ों के संग्रह, संगठन, विश्लेषण, व्याख्या और प्रस्तुति से संबंधित होती है। यह हमें अस्थिर और अनिश्चित तथ्यों के बीच पैटर्न और प्रवृत्तियाँ पहचानने में मदद करती है।

सांख्यिकी का महत्व:

1. नीतिगत निर्णयों में सहयोग: सरकारें जनगणना, सर्वेक्षण और आर्थिक आँकड़ों के माध्यम से नीतियाँ बनाती हैं। उदाहरण: गरीबी दर, बेरोजगारी दर आदि।
2. व्यवसायिक क्षेत्र में उपयोग: कंपनियाँ बिक्री, उपभोक्ता पसंद, उत्पाद की गुणवत्ता आदि का विश्लेषण सांख्यिकी द्वारा करती हैं।
3. शिक्षा में मूल्यांकन: परीक्षा परिणामों, ग्रेडिंग सिस्टम और शैक्षणिक प्रदर्शन को आंकने के लिए सांख्यिकी आवश्यक है।
4. चिकित्सा और अनुसंधान: किसी दवा की प्रभावशीलता या बीमारी की दर को समझने के लिए सांख्यिकीय विश्लेषण किया जाता है।

सांख्यिकी के मुख्य प्रकार:

1. वर्णनात्मक सांख्यिकी: इसमें आँकड़ों को सारणी, ग्राफ, माध्य, माध्यिका, बहुलक आदि के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।
2. अनुमानात्मक सांख्यिकी: इसमें नमूनों के आधार पर पूरी जनसंख्या के बारे में निष्कर्ष निकाले जाते हैं।

सांख्यिकी के प्रमुख अनुप्रयोग क्षेत्र:

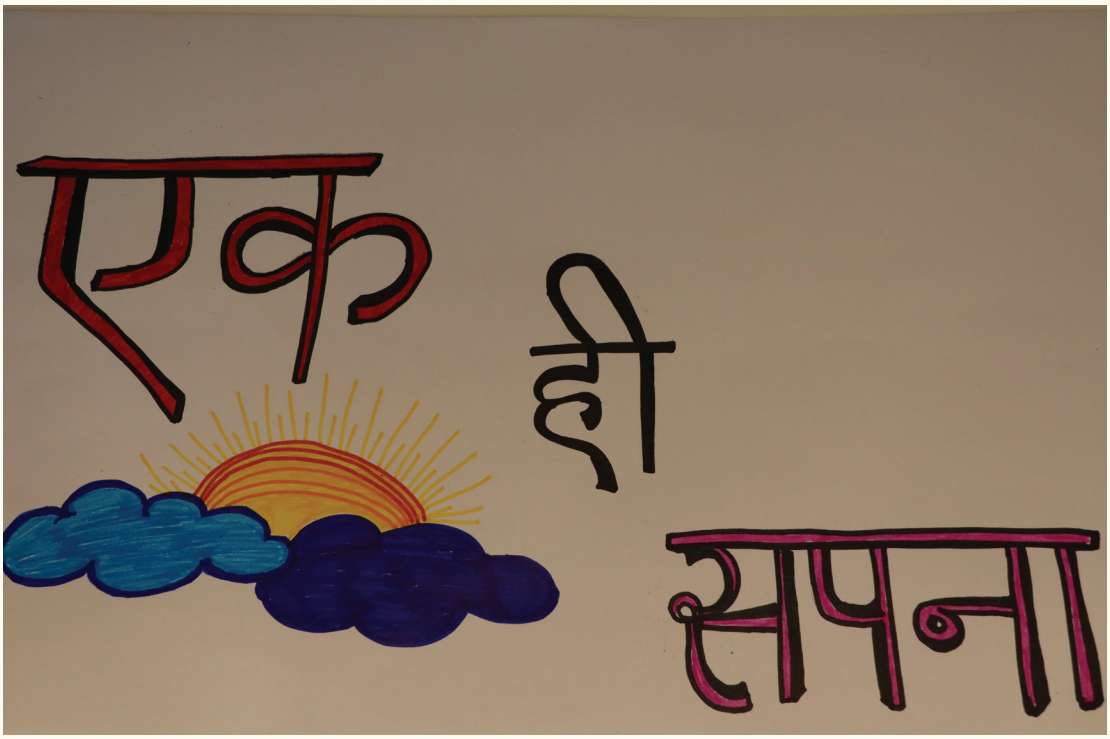
- जनगणना और सामाजिक अध्ययन
- स्वास्थ्य और जैव सांख्यिकी
- अर्थशास्त्र और बाजार विश्लेषण
- मशीन लर्निंग और डेटा विज्ञान
- पर्यावरण अध्ययन

चुनौतियाँ और सावधानियाँ:

- आँकड़ों की गलत व्याख्या भ्रम उत्पन्न कर सकती है।
- झूठे आँकड़ों से ग़लत निर्णय हो सकते हैं (जैसे "डेटा मैनिपुलेशन")।
- सांख्यिकीय विश्लेषण निष्पक्ष और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष:

सांख्यिकी केवल एक विषय नहीं, बल्कि एक सोचने का तरीका है। यह अनिश्चितता में निश्चितता खोजने का विज्ञान है। जिस समाज में आँकड़ों को समझा जाता है, वहाँ निर्णय अधिक वैज्ञानिक और सफल होते हैं। इसलिए आज के डेटा-आधारित युग में सांख्यिकी का ज्ञान हर व्यक्ति के लिए अनिवार्य हो गया है।



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस - 8 मार्च 2025

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड (पीएनजीआरबी) में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2025 का आयोजन किया गया। यह एक ऐसा दिन है जब महिलाओं को राष्ट्रीय, जातीय, सांस्कृतिक, आर्थिक या राजनीतिक सीमाओं में उनकी उपलब्धियों के लिए मान्यता दी जाती है। अतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2025 का विषय- सभी महिलाओं और लड़कियों के लिए अधिकार, समानता सशक्तिकरण है। यह विषय सबके लिए समान अधिकार, शक्ति और अवसर प्रदान करने तथा एक समवेशी भविष्य के लिए कार्य करने का आह्वान करता है जहां कोई भी पीछे न छूटे। इस दृष्टिकोण का मुख्य लक्ष्य अगली पीढ़ी यानि युवाओं, विशेष रूप से युवा महिलाओं और किशोरियों को स्थायी परिवर्तन के उत्प्रेरक के रूप में सशक्त बनाना है।

इस अवसर पर पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस नियामक बोर्ड (पीएनजीआरबी) ने वाईडब्ल्यूसीए ऑफ इंडिया के विशेषज्ञों के सहयोग से लैंगिक संवेदनशीलता और कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न की रोकथाम अधिनियम, 2013 (पीओएसएच) पर कार्यशाला का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इससे सुरक्षित और समावेशी कार्यस्थल के प्रति हमारी प्रतिबद्धता और मज़बूत हुई। इस सत्र का विषय था — "वी एमपावर: किसी को पीछे न छोड़ना" था, जिसमें डब्ल्यू का अर्थ महिला और एम का उपनाम के रूप में प्रयोग, समावेशिता पर बल देता है। सत्र की शुरुआत विशेषज्ञों के स्वागत के साथ हुई। गुलदस्ता भेंट करके विशेषज्ञों का अभिनंदन किया गया, जिसने एक सार्थक और प्रभावशाली चर्चा का माहौल निर्मित किया। विशेषज्ञ समूह ने प्रतिभागियों को सहभागी गतिविधियों और सूझबूझ भरी परिचर्चा में शामिल किया, जिसमे समानता, न्याय और न्यायसंगतता पर चर्चा की गई। उन्होंने कार्यस्थल पर विभिन्न प्रकार के उत्पीड़न और उसकी रोकथाम की रणनीतियों पर भी प्रकाश डाला, जिससे एक सुरक्षित और समावेशी कामकाज़ी परिवेश को बढ़ावा मिल सकें।

पीएनजीआरबी की ओर से महिला अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए मध्याह्न भोजन का प्रबंध कनॉट प्लेस के उम्दा भोजनालय में किया गया। महिलाओं को सरप्राइज उपहार उनके डेस्क पर प्रदान किए गए। इस दिन को महिलाओं के लिए खास बनाया गया ताकि वे अपनी प्रतिभा और विलक्षणता को उजागर कर सकें। इस उत्सव को सार्थक और यादगार बनाने के लिए सबको हार्दिक धन्यवाद दिया गया।





पॉश कार्यशाला की झलकियां





राष्ट्रीय अखंडता, सांस्कृतिक एकता तथा आपसी सद्भावना के लिए केवल एक ही संपर्क भाषा है वह हिंदी- फादर कामिल बुल्के

विश्व पर्यावरण दिवस 2025

वैश्विक स्तर पर प्रतिवर्ष विश्व पर्यावरण दिवस 2025 का आयोजन किया जाता है। पर्यावरण संबंधी जिम्मेदारी के लिए प्रतिबद्ध एक बल के रूप में, पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड, भारत सरकार पीएनजी और सीएनजी को तेजी से अपनाने और सतत तौर-तरीकों के माध्यम से अपने पारिस्थितिक पदचिह्न को कम करने के लिए लगातार प्रयास कर रहा है। बोर्ड पर्यावरण संरक्षण को बनाए रखने के अपने मिशन में दृढ़ है, भारत के समृद्ध समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा करते हुए स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए अथक प्रयास कर रहा है। इस विश्व पर्यावरण दिवस पर, पीएनजीआरबी स्वच्छ और हरित भविष्य के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है। इस वर्ष इस दिवस का विषय 'विश्व स्तर पर प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करना' है।



प्रधानमंत्री जी द्वारा शुरू किए गए #एक_पेड़_माँ_के_नाम #Plant4Mother अभियान के तहत पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड में दिनांक 02 जून 2025 को अध्यक्ष, सदस्य-I, सदस्य- I I और सदस्य-I I I द्वारा पौधारोपण करके विश्व पर्यावरण दिवस 2025 का शुभारंभ किया गया।

इस अवसर पर कार्यालय में पर्यावरण से संबंधित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता और पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन क्रमश: दिनांक 3 जून 2025 और दिनांक 05 जून 2025 को किया गया। प्रशिक्षु एवं कार्मिकों द्वारा बुकमार्क बनाए गए। कार्यरत कर्मियों ने बढ़चढ़ कर प्रतियोगिता में भाग लिया। विश्व पर्यावरण दिवस 2025 के समापन समारोह में विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। सभी कर्मचारियों के बीच पौधे और बुकमार्क भी वितरित किए गए।



अध्यक्ष और बोर्ड के सदस्य शपथ दिलाते हुए और शपथ लेते पीएनजीआरबी के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण



विश्व पर्यावरण दिवस 2025 के अवसर पर व्याख्यान देते अध्यक्ष महोदय

विश्व पर्यावरण दिवस 2025 के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताओं के पुरस्कृत प्रतिभागी



विश्व पर्यावरण दिवस 2025 के अवसर पर बुकमार्क बनाते कार्मिक



बोर्ड के सदस्य द्वारा पुरस्कार ग्रहण करते बुकमार्क के प्रतिभागी



पर्यावरण समारोह की झलकियां

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर कार्यशाला का आयोजन

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड (पीएनजीआरबी) में दिनांक 03 जून 2025 को संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता बोर्ड के सदस्य श्री अंजनी कुमार तिवारी द्वारा की गई। पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण के महत्व पर श्री तिवारी ने पर्यावरण पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा, पर्यावरण की रक्षा करना हम सभी की ज़िम्मेदारी है। हमारे वन संसाधनों को बचाएं रखने के लिए हमें अधिक से अधिक पेड़ व पौधे लगा कर वनों का संरक्षण करना चाहिए और साथ ही साथ बंजर भूमि को भी उपजाऊ बना कर खेती करनी चाहिए, जिससे कि प्रकृति में हरियाली लाई जा सकें। पूरे ब्रह्मांड में सिर्फ पृथ्वी पर ही जीवन है, तो कहीं न कहीं धरती के अंदर मौजूद जो भी खनिज संपदाएं हैं, इस पृथ्वी को जीवित रखने में बहुत बड़ी भूमिका हो सकती है। उन्होंने कहा कि पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाना, जीवनशैली को प्रकृति के अनुकूल बनाना और प्लास्टिक का प्रयोग कम करना अत्यंत आवश्यक है। अपने आसपास पोधे रोपें, ताकि पर्यावरण संतुलित रह सके। दैनिक जीवनशैली में छोटे-छोटे बदलावों और कुछ जीवनशैली संबंधी आदतों को अपनाने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जिससे पर्यावरण को होने वाले नुकसान को कम किया जा सकें।



पीएनजीआरबी में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2025 का आयोजन

संयुक्त राष्ट्र महासभा में भारत के प्रधानमंत्री द्वारा पहली बार दिनांक 27 सितंबर 2014 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने का प्रस्ताव रखा गया था। महासभा ने इस प्रस्ताव को दिनांक 11 दिसंबर 2014 को स्वीकृति देते हुए प्रतिवर्ष 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की। इसके अनुपालन में वैश्विक स्तर पर तथा भारत सरकार और उसके अधीनस्थ कार्यालयों में प्रतिवर्ष अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय, भारत सरकार के तहत पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड में दिनांक 21 जून 2025 को सुबह पूर्वाह्न 10 बजे के समिति कक्ष -1 में **"11वें अंतर्राष्ट्रीय योग 2025"** दिवस उत्सव का आयोजन किया गया।

योग के बहुत सारे लाभ है। योग तनाव को प्रबंधित करने में मदद करता है और जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाता है। बहुत सारे रोगों से निजात दिलाने में सहयोग करता है। शरीर के वज़न को संतुलित करता है तथा मांसपेशियों को मज़बूत बनाता है। वास्तव में योग, शरीर का मन से और मन का आत्मा से सामंजस्य स्थापित करके, प्रभावशाली ढंग से जीवन में समरसता उत्पन्न करता है। योग प्रशिक्षक सुश्री जी ने पीएनजीआरबी के कर्मियों को योग के सरल व्यायामों का प्रशिक्षण प्रदान किया।

बिना योग एवं प्राणायाम के जीवन को तनावमुक्त नहीं रखा जा सकता है। योग एवं प्राणायाम को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाकर ही हम अपने जीवन से तनाव और बहुत सारी परेशानियों को दूर भगा सकते हैं। योग को जीवन में अपनाएं और रोग को हमेशा के लिए दूर भगाएँ।



अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर कार्यशाला का आयोजन

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड (पीएनजीआरबी), भारत सरकार ने समिति कक्ष में योग कार्यशाला का आयोजन किया, जिसका संचालन डॉ. हिमानी, वरिष्ठ सलाहकार (योग), मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार ने किया।





उन्होंने योग में निरंतरता को समग्र कल्याण की कुंजी बताते हुए, योग के सार — शरीर और मन के सामंजस्य — को बेहतर ढंग से समझाया। सत्र में अष्टांग योग की आठ शाखाओं पर भी प्रकाश डाला गया और जीवन में संतुलन प्राप्त करने में उनके महत्व को रेखांकित किया गया। पीएनजीआरबी की महिला कर्मचारियों ने प्राणायाम, भ्रामरी और अन्य योग अभ्यासों में सक्रिय रूप से भाग लिया, जिससे बैठे रहने वाली जीवनशैली के दुष्प्रभावों को कम किया जा सके। यह सत्र वास्तव में एक मंत्रमुग्ध करने वाला और तरोताज़ा कर देने वाला अनुभव रहा, जिसने सभी को ऊर्जावान और ताज़गी से भर दिया।





महिला कर्मचारीगण

पीएनजीआरबी में हैप्पी लिविंग का आयोजन

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड (पीएनजीआरबी) ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर "हैप्पी लिविंग" विषय पर एक परिवर्तनकारी आरोग्य सत्र का आयोजन किया, जिसे ब्रहमा कुमारी के साथ मिलकर आयोजित किया गया — एक वैश्विक आध्यात्मिक आंदोलन जो कि राजयोग ध्यान के माध्यम से व्यक्तियों को सशक्त बनाने के लिए जाना जाता है। श्री बी.के. पीयूष, सिस्टर दीपिका और सिस्टर बी.के. गिरीजा के नेतृत्व में आयोजित इस सत्र ने कर्मचारियों को जीवन की चुनौतियों के बीच एक सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया, जिसमें समग्र कल्याण, आध्यात्मिक जीवन और भावनात्मक दृढ़ता पर जोर दिया गया। दैनिक जीवन में ध्यान का महत्व, समय और सजग मौन का महत्व, पर्यावरण जागरूकता की आवश्यकता, तनाव-मुक्त, आनंदमय घर और कार्यस्थल बनाना। यह एक प्रेरणादायक याद दिलाने वाला अवसर था कि हमें अपने कार्यस्थलों के भीतर और बाहर — स्वस्थ, समृद्ध और खुशहाल रहना चाहिए।



पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड में स्वच्छता पखवाड़े का आयोजन



भारत सरकार द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के अनुसार, भारत सरकार की एक नवरत्न उद्यम एनएचपीसी लिमिटेड द्वारा 01 जुलाई से 15 जुलाई 2025 तक 'स्वच्छता पखवाड़ा 2025' का आयोजन किया। स्वच्छता पखवाड़ा 2025 की शुरुआत दिनांक 01 जुलाई, 2025 को एक शपथ समारोह के साथ हुई, जिसमें डॉ. अनिल कुमार जैन ने सभी अधिकारियों/कार्मिकों को 'स्वच्छता शपथ' दिलाई। इस अवसर पर श्री अंजनी कुमार तिवारी, श्री रमना कुमार, सुश्री सुधा रानी रेलांगी, (पीएनजीआरबी बोर्ड के सदस्य),श्री अंजन कुमार मिश्रा, सचिव और अधिकारी तथा पीएनजीआरबी के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे। पखवाड़े के दौरान, पीएनजीआरबी द्वारा कार्यालय में स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम, सफाई किट वितरण, स्वच्छता थीम पर निबंध प्रतियोगिता और स्लोगन प्रतियोगिता एवं पोस्टर प्रतियोगिता आदि जैसी विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा। एकल प्लास्टिक को त्यागने पर सामाजिक जागरूकता प्रसारित करने के उद्देश्य से कार्मिकों के सम्मुख स्किट प्रस्तुत की गई। अधिकारियों और कर्मचारियों को 'स्वच्छ भारत, हरित भारत' विषय को अपने जीवन में आत्मसात् करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले और जीतने वाले प्रतिभागियों को प्रोत्साहन हेतु पुरस्कार में स्मृति चिह्न प्रदान किए गए। स्वच्छता पखवाड़ा के तहत कार्यालय प्रांगण और दफ्तर परिसर में विशेष स्वच्छता अभियान चलाया गया। इस अभियान में अधिकारियों और कर्मचारियों ने मिलकर झाड़ियों की कटाई, खरपतवार हटाना और परिसर को सुंदर व स्वच्छ बनाने में सक्रिय भाग लिया।



स्वच्छता पखवाड़े के दौरान अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण

लाइव फायर मॉकड्रिल

जागरूकता के माध्यम से सुरक्षा को सुदृढ़ करना!

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस विनियामक नियामक बोर्ड (PNGRB) ने अपने परिसर के बाहर खुले क्षेत्र में **लाइव फायर ड्रिल डेमोंस्ट्रेशन** का आयोजन किया, जिससे कार्यस्थल की सुरक्षा और आपातकालीन तैयारी के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया। मूनलाइट फायर एक्सटिंग्विशर के श्री सार्थक भारद्वाज के नेतृत्व में यह सत्र एक ज्ञानवर्धक सिद्ध हुआ। उन्होंने आवश्यक **PASS तकनीक** —**Pull** **Aim** **Squeeze** **Sweep** — के बारे में बताया, जो कि आग बुझाने वाले यंत्र (फायर एक्सटिंग्विशर) का प्रभावी उपयोग करने की एक महत्वपूर्ण विधि है। प्रतिभागियों ने विभिन्न प्रकार के फायर एक्सटिंग्विशर और वास्तविक परिस्थितियों में उनके विशेष उपयोग के बारे में व्यावहारिक जानकारी भी प्राप्त की। इस ड्रिल में पीएनजीआरबी के अधिकारियों और कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और प्रदर्शन के दौरान साझा किए गए व्यावहारिक ज्ञान की सराहना की।



'आप जिस तरह बोलते है, बातचीत करते है, उसी तरह लिखा भी कीजिए।
भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए-

महावीर प्रसाद द्विवेदी

पीएनजीआरबी में वर्ष 2024-25 के दौरान राजभाषा से संबंधित गतिविधियां

राजभाषा विभाग द्वारा जारी निर्देशानुसार हिंदी में कार्य करने में आ रही कठिनाईयों को दूर करने के लिए हर तिमाही कार्यशाला आयोजित की जाती है। इन कार्यशालाओं में मुख्य रूप से सरकारी काम हिंदी में किए जाने का अभ्यास करवाया जाता है। प्रत्येक वर्ष 4 कार्यशालाएं अर्थात् प्रत्येक तिमाही में 01 हिंदी कार्यशाला की जाती है। दिनांक 10 मई 2024 को राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थिति एवं प्रावधान, दिनांक 21 जून 2024 को फाइलों में होने वाली लघु टिप्पणियां एवं अभिव्यक्तियां, दिनांक 09 अगस्त 2024 को सरकारी कामकाज में सरल एवं सहज हिंदी, दिनांक 25 सितंबर 2024 को सरकारी नीतियों के कार्यान्वयन में हिंदी का महत्व, दिनांक 17 अक्तूबर 2024 को कार्यालयी पत्र लेखन और सरल हिंदी और दिनांक 27 जनवरी 2025 को राजभाषा नीति एवं कार्यान्वयन विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। राजभाषा अनुभाग, पीएनजीआरबी ने दिनांक 18 फरवरी, 2025 को एक हिन्दी कार्यशाला का आयोाजन किया गया, जिसमें हिन्दी में टिप्पण एवं मसौदा लेखन का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। कार्यशाला में समान भागीदारी लेते हुए उपस्थित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने अपने विचार एवं प्रश्न भी रखें। कार्यशाला बहुत ही रोचक और ज्ञानवर्धक रही। इसके पश्चात् अंग्रेजी-हिन्दी वाक्यांश प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, जिसमें कार्मिकों ने बढ़चढ़कर भाग लिया। इस प्रतियोगिता में भी प्रतिस्पर्धात्मक रुप से सफलता प्राप्त कार्मिकों को वस्तु रुप में पुरस्कार प्रदान किए गए। अंत में धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला का समापन किया गया।



कार्यशाला का आयोजन

कंठस्थ 2.0 पर एक दिवसीय अभ्यास आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम की रिपोर्ट



राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय भारत सरकार द्वारा सी डैक पुणे के सहयोग से कंठस्थ 2.0 संस्करण को विकसित किया गया है। इसका लोकार्पण दिनांक 14 सितंबर 2022 को आयोजित हिंदी दिवस समारोह एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन सूरत में माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री द्वारा किया गया था।

कंठस्थ 2.0 पर एक दिवसीय अभ्यास आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 12 से 14 फरवरी, 2025 के दौरान नई दिल्ली में आयोजित किया गया। पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड से 10 कार्मिकों ने दिनांक 12 फरवरी, 13 फरवरी और 14 फरवरी 2025 को आयोजित कंठस्थ 2.0 प्रशिक्षण में सहभागिता की।

कंठस्थ 2.0 ट्रांसलेशन मेमोरी तथा न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित मशीन साधित अनुवाद प्रणाली है। इस अनुवाद सिस्टम से अनुवाद की प्रक्रिया में सहायता मिलती है। स्मृति आधारित इस अनुवाद सिस्टम की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें उपयोगकर्ता द्वारा किए गए अनुवाद कार्य को संग्रहीत किया जाता है, जिसे किसी नई फाइल के अनुवाद के लिए पुन: उपयोग किया जा सकता है। इसके प्रयोग से हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने तथा पत्र का प्रारूप तैयार करने में मदद मिलेगी।

कंठस्थ राजभाषा में किए गए अनुवाद को मेमोरी में स्टोर करता है जिससे भविष्य में सिमिलर टेक्स्ट, सेंटेन्स आने पर उपयोगकर्ता द्वारा ही पूर्व में किए गए अनुवाद को प्रस्तुत करता है। 'ई-ऑफिस के साथ 'कंठस्थ-2.0' (अनुवाद टूल) का इंटीग्रेशन' होता है। इससे स्वदेशी प्रणाली का डेता-बेस बढ़ेगा ताकि भविष्य में इस सोफ्टवेयर से अधिकतम लाभ मिल सकें।

सभी कर्मचारियों के पंजीकरण के पश्चात् उनके सरकारी कामकाज़ से संबंधित सॉफ्ट कॉपी फाइलों को लेकर 'कंठस्थ 2.0' पर अनुवाद प्रक्रिया से उन्हें अवगत कराया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को अनुवाद मानवीय भाषा, मशीनी भाषा, मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग, न्यूरल नेटवर्क, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ट्रांसलेशन मेमोरी, लोकल मेमोरी, ग्लोबल मेमोरी जैसे शब्दों से अवगत कराते हुए मशीन अनुवाद की परिभाषा व प्रकार, कंठस्थ 2.0 सॉफ्टवेयर तथा इसके मोबाइल ऐफ का परिचय, पंजीकरण, प्रमुख विशेषताएं एवं कार्यप्रणाली आदि से संबंधित सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों प्रकार की जानकरियां प्रदान की। अभ्यास के उपरांत उपयोगकर्ताओं/कार्मिकों ने अपने सुझाव कंठस्थ में उपलब्ध फीडबैक टैब पर भेजें। केंद्र सरकार के कामकाज़ में नियमित आधार पर किए जाने वाले अनुवाद कार्य में लगने वाले मानव संसाधन और

समय को बचाने के उद्देश्य से इस अनुवाद टूल का निर्माण किया गया है। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से आह्वान किया कि इस सॉफ्टवेयर का ज़्यादा से ज़्यादा उपयोग करना सुनिश्चित करें।

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड से 10 कार्मिकों ने 'कंठस्थ 2.0' कार्यक्रम में प्रशिक्षण प्राप्त किया। सबने अनुवाद की बारीकियों को सीखा, समझा और जाना तथा कंठस्थ टूल के उपयोग को सुनिश्चित करने के प्रति अपनी सहमति दर्ज़ की।

राजभाषा प्रयोग की दृष्टि से क्षेत्र वर्गीकरण

संपूर्ण देश को राजभाषा प्रयोग के आधार पर तीन क्षेत्रों में रखा गया है ।

"क" क्षेत्र : उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, बिहार, झारखण्ड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, उत्तराखण्ड, अंडमान-निकोबार व दिल्ली ।

"ख" क्षेत्र : महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब व चण्डीगढ़, संघ-राज्य ।

"ग" क्षेत्र : आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, असम, तमिलनाडु, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय, गोवा, कर्नाटक, जम्मू-कश्मीर, केरला, नागालैंड, उड़ीसा, सिक्किम, त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल, दादर एवं नगर-हवेली, दमण-दीव, लक्ष्यदीव, पाण्डिचेरी ।

जापानियों ने जिस ढंग से विदेशी भाषाएं सीखकर अपनी मातृभाषा को उन्नति के शिखर पर पहुंचाया है उसी प्रकार हमें भी मातृभाषा का भक्त होना चाहिए-

श्यामसुंदर दास

कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा, 2025 का आयोजन

पीएनजीआरबी में दिनांक 16 सितंबर, 2025 से 30 सितंबर, 2025 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार इस वर्ष हिंदी पखवाड़े का उद्घाटन की उपस्थिति में माननीय गृह मंत्री मंत्री श्री अमित शाह के संदेश के माध्यम से हुआ। इस समारोह में पीएनजीआरबी के उप-निदेशक, (प्रशासन), सह डीईओ और सहायक परामर्शदाता (राजभाषा) की भी प्रतिभागिता रही।

पखवाड़े के दौरान निम्नलिखित प्रतियोगिताएं आयोजित की गई :-

दिनांक 18.09.2025 को राजभाषा एवं सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, इस प्रतियोगिता में राजभाषा नियम, अधिनियम, नीति एवं हिन्दी पुस्तकों के लेखकों से संबंधित और सामान्य ज्ञान के प्रश्न पूछे गए और इस प्रतियोगिता में 38 कार्मिकों ने भाग लिया।

दिनांक 19.09.2025 को हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 22.09.2025 को वाद-प्रतिवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 23.09.2025 को हिंदी कार्यशाला विषय "राजभाषा नीति एवं कार्यान्वयन" का आयोजन किया गया। जिसमें कार्मिकों को राजभाषा नियम, अधिनियम और नीति की जानकारी देने के साथ-साथ हिन्दी में टिप्पण एवं आलेखन का प्रशिक्षण दिया गया।

दिनांक 25.09.2025 को हिंदी श्रुतलेखन प्रतियोगिता (डिक्टेशन अर्थात् सुनकर लिखना) (केवल बहु कार्यकारी कर्मचारी/एमटीएस के लिए) का आयोजन किया गया, जिसमें 13 कार्मिकों ने भाग लिया।

दिनांक 26.09.2025 को हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें कार्मिकों ने बढ़-चढ़ के भाग लिया।

दिनांक 29.09.2025 को हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें कार्मिकों ने भाग लिया।

दिनांक 30.09.2025 को हिन्दी पखवाड़े का समापन समारोह आयोजित किया गया। माननीय अध्यक्ष एवं बोर्ड के सदस्यों ने अपने कर-कमलों से उपरोक्त सभी प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार और प्रमाण पत्र प्रदान किए।

इसके पश्चात् माननीय श्री अंजनी कुमार तिवारी, ने अपने संबोधन में सभी विजेताओं को शुभकामनाएं दी और इस पखवाड़े के दौरान आयोजित कार्यक्रमों की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताएं न केवल पखवाड़े में बल्कि पूरे वर्ष आयोजित की जाएं, ताकि कार्मिकों की राजभाषा हिन्दी के प्रति रुचि बढ़े और कार्यालय में राजभाषा के कार्यान्वयन में वृद्धि हों। इस अवसर पर उन्होंने ने स्वरचित कविता सुनाकर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया, जिसे सभी उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों ने करतल ध्वनि से सराहा।

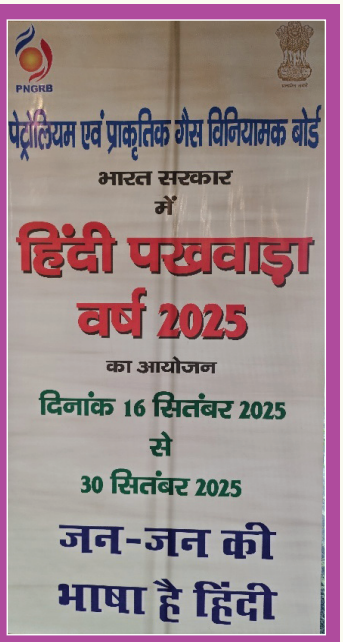
तत्पश्चात् माननीय अध्यक्ष महोदय का संभाषण हुआ, उन्होंने अपने संभाषण में कहा कि मुझे अपार खुशी है कि कार्यालय में हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई सभी प्रतियोगिताओं में कार्मिकों नें उत्साहपूर्वक भाग लिया। सबसे पहले तो मैं विजेताओं को हार्दिक बधाई देता हूँ। राजभाषा में कार्य करना हमारा संवैधानिक कर्तव्य है। हमें न केवल हिन्दी पखवाड़े में बल्कि पूरे वर्ष राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देना है। अत: इस अवसर पर आप सबको

पुन: शुभकामनाएँ देते हुए यह कामना करता हूं कि आप सभी भविष्य में राजभाषा में अधिक से अधिक कार्य करते रहेंगे।

इसके पश्चात् कविता पाठ प्रतियोगिता में प्रथम एवं द्वितीय और तृतीय पुरस्कार प्राप्त करने वाले विजेताओं ने अपनी-अपनी कविता पढ़ कर सुनाई तथा इस अवसर पर निदेशक (प्रशा.) ने सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएं दी और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ निम्नानुसार हैं :-












पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड
हिंदी पखवाड़े का आयोजन
दिनांक 16 सितंबर 2025 से 30 सितंबर 2025
हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता
दिनांक - 22/09/2025
गोदावरी कक्ष
समय: अपराह्न 3.00 बजे


पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड
हिंदी पखवाड़े का आयोजन
दिनांक 16 सितंबर 2025 से 30 सितंबर 2025
हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता
दिनांक - 24/09/2025
कृष्णा कक्ष
समय: अपराह्न 3.00 बजे


पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड
हिंदी पखवाड़े का आयोजन
दिनांक 16 सितंबर 2025 से 30 सितंबर 2025
हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता
दिनांक - 22/09/2025
गोदावरी कक्ष
समय: अपराह्न 3.00 बजे






पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड
हिंदी पखवाड़े का आयोजन
दिनांक 16 सितंबर 2025 से 30 सितंबर 2025
हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता
दिनांक - 24/09/2025
कृष्णा कक्ष
समय: अपराह्न 3.00 बजे


पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड
हिंदी पखवाड़े का आयोजन
दिनांक 16 सितंबर 2025 से 30 सितंबर 2025
हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता
दिनांक - 24/09/2025
कृष्णा कक्ष
समय: अपराह्न 3.00 बजे

भाषा अधिगम और शिक्षण में अनुवाद की भूमिका



योगेन्द्र पाल भट्ट
उप-परामर्शदाता
प्रशासन प्रभाग

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य विचार विनिमय एवं संपर्क के लिए संकेत, स्पर्श इत्यादि कई साधनों का उपयोग करता है, लेकिन विचारों के आदान-प्रदान का सबसे सशक्त माध्यम भाषा है। भाषा एक सामाजिक क्रिया है। वह ध्वनि-संकेतों का व्यवहारिक रूप है। भारत में अनेक भाषाएँ एवं बोलियाँ बोली और समझी जाती है। हिंदी को राष्ट्रभाषा और राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। वास्तव में हिंदी का मतलब 'हिंद की भाषा' से है और यह भाषा सम्पूर्ण भारत में बोली, समझी और उपयोग की जाती है। स्वतंत्रता संग्राम अथवा आजादी की लड़ाई के दौरान हिंदी भाषा ने सम्पूर्ण भारत को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया है।

मानव विकास का मूल साधन शिक्षा है। मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ न कुछ सीखता रहता है। सीखना अर्थात् अधिगम एक जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। अधिगम का शाब्दिक अर्थ है- सीखना। मनुष्य जन्म के तुरंत बाद से ही सीखना आरंभ करता है और जीवन पर्यन्त प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कुछ न कुछ सीखता ही रहता है। यह व्यवहार परिवर्तन, जीवनपर्यंत, ज्ञान अर्जन और सार्वभौमिक एवं व्यापक प्रक्रिया है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमे अनुभव एवं प्रशिक्षण के माध्यम से अधिगमकर्ता के व्यवहार में स्थाई परिवर्तन आता है।

शिक्षण का अर्थ है शिक्षा देना या प्रशिक्षण देना। शिक्षण का अंतिम लक्ष्य किसी का संपूर्ण विकास करना होता है। परंतु शिक्षण केवन ज्ञान देना ही नहीं है अपितु मनुष्य के जीवन में निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। अपने व्यापक अर्थ में शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति को अपने परिवार, विद्यालय, मित्रता, मनोरंजन और व्यवसाय से अपने वातावरण को अनुकूलन करने के लिए आजीवन शिक्षण प्राप्त करना होता है। डॉ राधाकृष्णन ने कहा है कि "शिक्षा को मनुष्य और संपूर्ण समाज का निर्माण करना चाहिए इस कार्य को किए बिना शिक्षा आनुविक और अपूर्ण है"। जब बाल्यावस्था में माता अपने बच्चे से बात करती हैं तो बालक उनकी बात को दोहराता है। यह अनुवाद और शिक्षण का ही एक उदाहरण है। माता बालक को शिक्षित करने के उद्देश्य से किसी परिप्रेक्ष्य में तथ्य एवं कथ्य उसे समझाती है। शिक्षकों द्वारा कक्षा में बालकों को पाठ समझाना और उसे अभिव्यक्त करना शिक्षण और अनुवाद की भूमिका को उजागर करता है। हर मनुष्य के लिए प्रत्येक भाषा सीखना और आत्मसात

करना संभव नहीं है। अनुवाद के माध्यम से हम शिक्षित होते हैं हर भाषा के रचना संसार से परिचित हो पाते हैं।

अनुवाद दो भाषाओं के बीच अभिव्यक्ति का माध्यम है। यह एक ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा किसी भाषा में दूसरी भाषा के भाव-विचार, सांस्कृतिक वैज्ञानिक, तकनीकी एवं सभी प्रकार के शब्दों का आयात होता है, जिससे न केवल उसका शब्द भंडार ही समृद्ध होता है, बल्कि प्रगतिशील विश्व के परिप्रेक्ष्य में वह अपने-आपको समकालीन भी बनाए रखती है। इसी प्रक्रिया में वह शब्दानुकूलन भी करती है, अन्य भाषाओं तथा उनके समाजों में अधिक घुल-मिल जाती है और अपने अस्तित्व को चिरंतन बनाए रखती है। अनुवाद शिक्षण का सबसे सशक्त और सार्थक माध्यम भी है। अनुवाद शिक्षण और भाषा अध्ययन में एक साधन की भूमिका का निर्वाह करता है। बालावस्था में माता द्वारा अपने बालकों के लिए कथा वाचन करना अनुवाद एवं शिक्षण पद्धति का उत्कृष्ट उदहारण है।

अनुवाद के माध्यम से हम अपने भाषिक भंडार में विस्तार करते हैं। उसमें नए शब्दों को समाहित, गुथते, गढ़ते और निर्मित करते हैं। अनुवाद के जरिए कोई कथ्य, सूचना, चिकित्सीय ज्ञान, ऐतिहासिक, राजनीतिक और सामाजिक संदर्भ, कृति विश्व के धरातल पर पहुंचती है तथा हमारे रचना संसार, भाषा और शिक्षा पद्धति को उन्नत एवं सुदृढ़ बनती है। भाषा निरंतर सतत रहने वाली प्रक्रिया है।



झकझोरता सवाल : मैडम, आप 'मेकअप' क्यों नहीं करती...



श्रीमती मेघा सिंह
निजी सचिव
अध्यक्ष कार्यालय

खचाखच भरा कॉलेज का सभागार, विशेष अतिथि ... कलेक्टर टीचर सुश्री रानी सोयामोई... कॉलेज के छात्र-छात्राओ से बातचीत कर रही हैं । उन्होंने कलाई घड़ी के अलावा कोई आभूषण नहीं पहना है। सबसे ज्यादा आश्चर्य तो तब हुआ कि उन्होंने 'फेस पाउडर' का भी इस्तेमाल नहीं किया है । भाषण अंग्रेजी में था। उन्होंने केवल एक या दो मिनट ही बोला, लेकिन उनके शब्द दृढ़ संकल्प से भरे थे। फिर प्रश्न-उत्तर का सिलसिला शुरू हुआ। उन्होंने कुछ बच्चों से उनके नाम पूछते हुए कुछ सामान्य जानकारी ली।

फिर बच्चों ने उन से कुछ सवाल पूछे।

विद्यार्थिओं को संतुष्ट करने के बाद उन्होंने कहा ...और कुछ पूछना है?

तभी दर्शकों में से एक दुबली-पतली लड़की खड़ी हुई।

"पूछो, बच्चे..." --- "मैडम, आप मेकअप क्यों नहीं करतीं?" टीचर का चेहरा अचानक पीला पड़ गया। उनके पतले माथे पर पसीना आ गया। उनके चेहरे की मुस्कान फीकी पड़ गई। दर्शक अचानक चुप हो गए। उन्होंने टेबल पर रखी पानी की बोतल खोली और थोड़ा पानी पिया। फिर उसने धीरे से छात्र को बैठने का इशारा किया।

वह धीरे से बोलने लगी - "तुमने एक परेशान करने वाला सवाल पूछा है। यह ऐसा सवाल है जिसका जवाब एक शब्द में नहीं दिया जा सकता। मुझे जवाब में तुम्हें अपनी जीवन कहानी सुनानी है। मुझे बताओ कि क्या तुम मेरी कहानी के लिए अपने कीमती दस मिनट निकालने को तैयार हो?"

आकस्मक दहाड़ने जैसी एक ध्वनि हुई "तैयार..." कुछ सेकण्ड्स के लिए हैरान करने वाली शांति छा गई।

मेरा जन्म ओडिशा के एक आदिवासी इलाके में हुआ था। कलेक्टर ने रुककर दर्शकों की ओर देखा।

"मेरा जन्म कोडरमा जिले के आदिवासी इलाके में एक छोटी सी झोपड़ी में हुआ था, जो _'मीका'_ खदानों से भरा हुआ था। मेरे पिता और माता खनिक थे। मेरे दो बड़े भाई और एक छोटी बहन थी। हम एक छोटी सी झोपड़ी में रहते थे जिसमें बारिश होने पर पानी टपकता था। मेरे माता-पिता कम वेतन पर खदानों में काम करते थे क्योंकि

उन्हें कोई और काम नहीं मिल पाया था। यह बहुत गंदा काम था। जब मैं चार साल की थी, तब मेरे पिता, माता और दो भाई कई बीमारियों के कारण बिस्तर पर पड़े थे। उस समय उन्हें यह नहीं पता था कि यह बीमारी खदानों में मौजूद घातक 'मीका धूल' को अंदर लेने से होती है। जब मैं पाँच साल की थी, मेरे भाई बीमारी से मर गए।" एक छोटी सी आह भरकर कलेक्टर ने बोलना बंद कर दिया और अपने रूमाल से अपनी आँखें पोंछ लीं। "ज़्यादातर दिनों में हमारा भोजन सादा पानी और एक या दो रोटियाँ हुआ करता था। मेरे दोनों भाई गंभीर बीमारी और भूख के कारण इस दुनिया से चले गए। मेरे गाँव में, डॉक्टर तो छोड़िए, स्कूल भी नहीं था। क्या आप ऐसे गाँव की कल्पना कर सकते हैं जहाँ स्कूल, अस्पताल या शौचालय न हो, बिजली न हो?

एक दिन मेरे पिता ने मेरा भूखा, चमड़ी और हड्डियों से लथपथ हाथ पकड़ा और मुझे टिन की चादरों से ढकी एक बड़ी खदान में ले गए। यह एक अभ्रक की खदान थी जिसने समय के साथ बदनामी हासिल कर ली थी। यह एक पुरानी खदान थी जिसे खोदा गया, और खोदा गया, जो अंतहीन रूप से पाताल में फैली हुई थी। मेरा काम नीचे की छोटी-छोटी गुफाओं में रेंगना और अभ्रक अयस्क इकट्ठा करना था। यह केवल दस साल से कम उम्र के बच्चों के लिए ही संभव था। अपने जीवन में पहली बार, मैंने पेट भर रोटियाँ खाईं। लेकिन उस दिन मुझे उल्टी हो गई। जिस समय मुझे प्रथम श्रेणी में होना चाहिए था, मैं अंधेरे कमरों में अभ्रक इकट्ठा कर रही थी, और 'जहरीली धूल' में साँस ले रही थी ।

कभी-कभार 'भूस्खलन' में दुर्भाग्यपूर्ण बच्चों का मर जाना असामान्य नहीं था। और कभी-कभी कुछ 'घातक बीमारियों' से भी मर जाते थे। दिन में आठ घंटे काम करने के बाद, आप कम से कम एक बार के भोजन के लिए कमा पाते थे। मैं भूख और हर दिन जहरीली गैसों के साँस लेने के कारण दुबली और निर्जलित हो गई थी। एक साल बाद मेरी बहन भी खदान में काम करने लगी। जैसे ही वे (पिता) थोड़े ठीक हुए, ऐसा समय आया कि मेरे पिता, माँ, बहन और मैं एक साथ काम करते थे और अब हम बिना भूख के रह सकते थे।लेकिन किस्मत ने हमें दूसरे रूप में परेशान करना शुरू कर दिया था। एक दिन जब मैं तेज बुखार के कारण काम पर नहीं जा रही थी, अचानक बारिश हुई। खदान के नीचे काम करने वाले श्रमिकों पर खदान गिरने से सैकड़ों लोग मारे गए। उनमें मेरे पिता, माँ और बहन भी थे। रानी की दोनों आँखों से आँसू बहने लगे। दर्शकों में हर कोई साँस लेना भी भूल गया। कई लोगों की आँखें आँसुओं से भर गईं। "आपको याद रखना होगा कि उस समय मैं सिर्फ़ छह साल की थी।

आखिरकार मैं सरकारी अगाती मंदिर पहुँची। वहाँ मेरी शिक्षा हुई। मैंने अपने गाँव से ही अपनी पहली अक्षर-पद्धति सीखी थी। यहाँ तो टीचर आपके सामने हैं। आप सोच रहे होंगे कि इसका और इस बात का क्या संबंध है ? कि मैं मेकअप का इस्तेमाल नहीं करती।" उसने दर्शकों की तरफ देखते हुए कहा। "अपनी शिक्षा के दौरान ही मुझे एहसास हुआ कि उन दिनों अँधेरे में रेंगते हुए मैंने जो सारा अभ्रक इकट्ठा किया था, उसका इस्तेमाल मेकअप उत्पादों में किया जा रहा था। अभ्रक पहला प्रकार का मोती जैसा सिलिकेट खनिज है। कई बड़ी कॉस्मेटिक कंपनियों द्वारा पेश किए जाने वाले खनिज मेकअप में, आपकी त्वचा के लिए सबसे चमकीला रंग बहुरंगी अभ्रक से आता है, जिसे 20,000 छोटे बच्चे अपनी जान जोखिम में डालकर निकालते हैं। गुलाब की कोमलता उनके जले हुए सपनों, उनके बिखरते जीवन और चट्टानों के बीच कुचले गए उनके मांस और खून के साथ आपके गालों पर फैलती है। खदानों से बच्चों के हाथों से उठाए गए लाखों डॉलर के अभ्रक का इस्तेमाल आज भी किया जाता है। हमारी सुंदरता को बढ़ाने के लिए।"

अब आप ही बताइए, मैं अपने चेहरे पर मेकअप कैसे लगाऊं? मैं अपने भाइयों की याद में पेट भरकर कैसे

खाऊं जो भूख से मर गए? मैं अपनी मां की याद में महंगे रेशमी कपड़े कैसे पहनूं जिन्होंने कभी फटे कपड़ों के बारे में सपने में भी नहीं सोचा था?"

जब रानी चली गईं तो पूरा दर्शक अनजाने में ही खड़ा हो गया, उनके होठों पर हल्की मुस्कान थी, आँखों में आँसू पोंछे बिना, उनका सिर ऊँचा था।

(ओडिशा में अभी भी उच्चतम गुणवत्ता वाला अभ्रक खनन किया जाता है। 20,000 से अधिक छोटे बच्चे स्कूल जाए बिना वहां काम करते हैं। वे मर जाते हैं, कुछ भूस्खलन में और कुछ बीमारी से...)

कई साल बाद..... वह महिला, भारत गणराज्य की पहली नागरिक बनीं

महामहिम : द्रौपदी मुरूमु
भारत गणराज्य की राष्ट्रपति



सबको हिंदी सीखनी चाहिए। इसके द्वारा भाव विनियम में सारे भारत को सुविधा होगी-

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी



श्री लाल बहादुर
वेब डिज़ाइनर
सूचना प्रौद्योगिकी प्रभाग

स्क्रीन शेयरिंग ऐप/रिमोट एक्सेस का उपयोग करके धोखाधड़ी







क्या करें:

- ✔ संबंधित संस्था की आधिकारिक वेबसाइट पर ऑफ़र की प्रामाणिकता की पुष्टि करें।
- ✔ अपने मोबाइल फोन पर एंटीवायरस/स्पैम अवरोधक सॉफ्टवेयर इंस्टॉल करें।
- ✔ इस घटना की जानकारी अपने नजदीकी साइबर क्राइम पुलिस स्टेशन और नेशनल साइबर क्राइम रिपोर्टिंग पोर्टल https://cybercrime.gov.in पर दें।

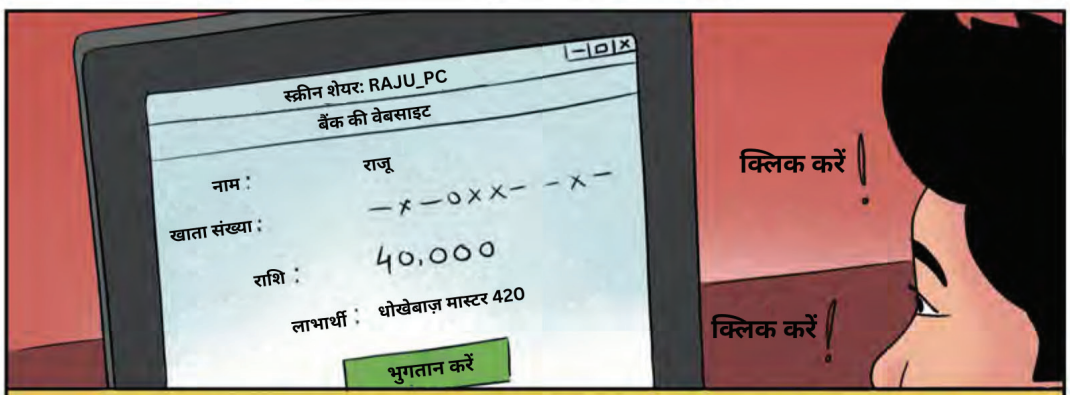


धोखेबाज़ ने राजू के मोबाइल में सफलतापूर्वक स्क्रीन-शेयरिंग ऐप इंस्टॉल कर लिया और उसके फोन पर एक्सेस प्राप्त कर लिया। वह राजू के मोबाइल पर मैसेज पढ़ सकता था और उसके कीपैड को ट्रैक कर सकता था।



राजु ने सोचा कि यह तो सिर्फ 10 रुपये की बात है और उसने नेट बैंकिंग से पैसे ट्रांसफर कर दिए। कुछ ही देर में उसे 35000 रुपये, 20000 रुपये और 40000 रुपये के डेबिट मैसेज आने लगे।





स्क्रीन-शेयरिंग एप्लिकेशन इंस्टॉल होने के बाद, धोखेबाज़ को राजू द्वारा भुगतान (10 रुपये का) करने के लिए दर्ज किया गया नेट बैंकिंग पासवर्ड मिल गया।

क्या न करें:

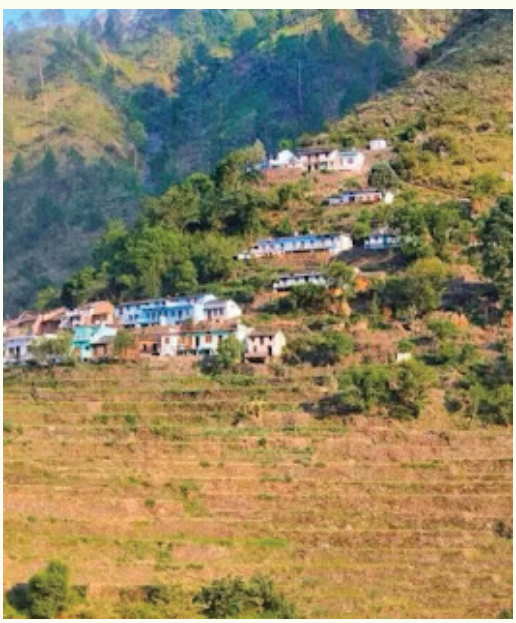
- ✕ एसएमएस, ईमेल या इंस्टेंट मैसेजिंग ऐप के ज़रिए भेजे गए लिंक से कोई भी एप्लीकेशन डाउनलोड न करें।
- ✕ किसी अनजान व्यक्ति द्वारा शेयर किए गए स्क्रीन-शेयरिंग एप्लिकेशन डाउनलोड न करें। इन ऐप्स द्वारा जेनरेट किए गए स्क्रीन शेयरिंग कोड किसी अनजान व्यक्ति के साथ शेयर नहीं करने चाहिए।

अनियंत्रित शहरीकरण के चलते गांवों का भविष्य दांव पर?



श्री अशोक कुमार पासी
सहायक परामर्शदाता
प्रशासन प्रभाग

दुनिया में शायद ही कोई व्यक्ति होगा जिसने गांव के बारे में न सुना हो। हमारे देश की कुल आबादी का 99% को गांव में रहने का मौका मिला होगा और संभवतः 50% लोग तो अभी भी गांव में रह रहे होंगे। यदि किसी को गांव में रहने का मौका नहीं भी मिला हो तो कम से कम गांव को देखने का अवसर तो मिला ही होगा।



दरअसल गांव से ही समाज की शुरुआत होती है। सवाल यह है कि क्या गांव रहन-सहन, खान-पान तथा संसाधनों की दृष्टि से आज भी वैसे ही हैं जैसे 50 साल पहले हुआ करते थे या फिर गांवों के बारे में जो अवधारणा बनी हुई है? उत्तर है बिलकुल नहीं, कारण - पहला- विकास, दूसरा- जनसंख्या वृद्धि, तीसरा- संसाधनों की उपलब्धता, चौथा- शहरीकरण, पांचवां- परंपरागत कृषि व्यवसाय से हटकर नए-नए व्यवसायों के प्रति आकर्षण।

समय के साथ - साथ गांवों की जमीन कम होती जा रही है इसलिए खेती से हटकर सिर्फ मकान भर की जमीन तथा छोटी-छोटी फुलवारी या सब्जी उगाने भर की जगह शेष रही तो गाय, भैंस जैसे दुधारू पशुओं को पालने का संकट महसूस होने लगा इसलिए अब जानवर पालने की जहमत कोई नहीं उठाता। इसके साथ ही लोगों ने परिस्थितियों के अनुरूप परंपरागत व्यवसाय की जगह नए-नए व्यवसायों का रुख कर लिया है । आज स्थिति यह है कि गांव के लोग भी शहरियों की तरह दूध, दही, राशन, फल इत्यादि सहित पानी के लिए भी शहरों

पर आश्रित हो गए हैं।

दरअसल अब कोई गांव में रहना ही नहीं चाहता और अगर रहता भी है तो शहरों में रहने वालों की तरह ही जीवनयापन करना चाहता है । खासकर महानगरों के आसपास जो कभी गांव हुआ करते थे उन सब ने छोटे-मोटे शहरों का रूप ले लिया है, यदि गांव के तौर पर मौजूद भी हैं तो केवल कुछ अनियमित ढंग से बने मकानों के समूह मात्र हैं, उनमें गांवों के कोई लक्षण शेष नहीं हैं। ऐसे शहरों की हालत यह है कि इनमें रहने वालों को हवा के लिए भी पार्कों पर निर्भर रहना पड़ता है। हमारी जीवन शैली व रहन-सहन तथा व्यवसाय में हुए आमूल-चूल परिवर्तन को विकास का सूचक माना जाता है।

कुछ लोगों का मानना है कि गांव में सुख-सुविधा के पर्याप्त साधन नहीं होते इसीलिए उन्हें गांव करके जाना जाता है लेकिन खुले वातावरण सहित कुछ वस्तुएं ऐसी होती हैं जो सिर्फ गांवों में ही संभव हैं। इस लिहाज से विचारणीय है कि भविष्य के मद्देनजर गांव को गांव रहने दिया जाए अथवा जिस तरह तेजी से गांवों का शहरीकरण हो रहा है उससे आनंदित हुआ जाए? जो लोग किसी भी वजह से शहर पहुँच जाते हैं तब उन्हें गांव का महत्व समझ आता है। वहीं दूसरी ओर अभी भी गांव में रह रहा व्यक्ति शहरों की चकाचौंध से लालायित हो शहर जाना चाहता है बेशक उसे अपनी जमीन क्यों न बेचनी पड़े।

उपरोक्त परिस्थितियों में विचारणीय विषय यह है कि क्या अब फैसला करने का समय आ गया है कि हमें गांवों को उनके मूल स्वरूप में बने रहने देना चाहिए या उन्हें शहरों के तौर पर विकसित करने में सहायक होना चाहिए? इस संबंध में जो लोग गांवों से निकलकर शहरों में स्थापित हो गए हैं और गांवों के प्रति उनका लगाव अभी भी बना हुआ है, उनकी राय महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है क्योंकि ये लोग गांव और शहर में रहने के हानि लाभ से अच्छी तरह परिचित हो चुके हैं। यह तथ्य सर्वविदित है कि महानगर हो अथवा बड़ा शहर में रहने वालों की दैनिक जरूरतों की पूर्ति आज भी आसपास के गांवों से ही होती है।

यह सही है कि गांवों के पास भौतिक संसाधनों की कमी आज भी महसूस की जा सकती है किन्तु जो प्राकृतिक सौंदर्य वहां मौजूद है क्या शहर भी उसका दावा कर सकते हैं? जिन लोगों का गांव से संबंध रहा है उन्हें याद होगा कि कितनी ही गर्मी क्यों न हो गांव में पेड़ की छाँव में जो सुकून मिलता है वह शहरों के वातानुकूलित कमरों में कभी नहीं मिल सकता।

राष्ट्र की एकता को यदि बनाकर रखा जा सकता है, तो उसका मध्यम हिंदी में ही हो सकता है –

सुब्रह्मण्य भारती

जिजीविषा



श्री नवीन कुमार
वरिष्ठ परामर्शदाता
वाणिज्यिक प्रभाग

एक व्यक्ति जिसने पढ़ाई पूरी करके एक नौकरी ज्वाइन की । 3-4 कार्य करने के बाद कोविड के दौरान नौकरी चली गई। तब से वह नौकरी की तलाश में था लेकिन हर जगह सिफारिश या पैसा ही काम आता है यह सोच कर वह प्रतिदिन मायूस होता जा रहा था।

इस संबंध में, मैं अपना उदाहरण दूंगा। एक प्रतिष्ठित PSU से उच्च पद से 32 वर्ष की सेवा के बाद रिटायर हुआ। सोचा कि अब आराम करूंगा। 5-6 माह बाद ही पता चल गया कि खाली बैठकर आराम करना भी एक सजा है। नौकरी के लिए मैने प्रयास करने शुरू किए लेकिन मेरा जो अनुभव था उस क्षेत्र में नौकरी नहीं मिल रही थी । घर के खर्चे बदस्तूर हो रहे थे। मुझे एक ऑफिस मैं नौकरी मिली। मेरी सैलरी, जिस सैलरी से रिटायर हुआ था यह उसकी लगभग 1/6 भाग ही थी। लेकिन मुझे अपने आप पर और अपनी मेहनत करने की आदत पर भरोसा था। कार्य भी मेरे अनुभव से अलग था, लेकिन सीखा और सकारात्मक भाव बनाए रखा। काफी बड़े असाइनमेंट्स भी पूरे किए । मेरे नियोक्ता भी काफी प्रभावित थे। लेकिन मुझे जब पीएनजीआरबी मैं कार्य करने का अवसर मिला और मुझे वह ऑफिस छोड़ना पड़ा। उस वक्त भी मेरे नियोक्ता ने कहा था कि हम आपको फेयरवेल नहीं दे रहे है ये आपकी नई नौकरी की खुशी की मिठाई है। आप इस ऑफिस मैं जब वापस आना चाहे बगैर सोचे आ जायेगा। आपका स्वागत है।

अगर हमारे मन में यह विचार जड़ें जमा चुका है, "हर स्थान पर केवल पैसा या सिफारिश के बल पर ही नौकरी मिलती है," तो निश्चित रूप से हम बार-बार ऐसे ही संगठनों में पहुंचेंगे, जहाँ यही सब होता है और हमको अन्य संस्थाएँ दिखाई ही नहीं देंगीं जहाँ प्रतिभा का आदर होता है। हमारे भीतर जो भी घटित हो रहा होता है, हम उसे ही बाहर देख पाते हैं।

मनुष्य का मन तो मनुष्य का ही मन होता है। थोड़ा सा मनःस्थिति का परिवर्तन से हम पाएंगे कि हमारे व्यक्तित्व में परिवर्तन आया है । हम हमारा जीवन, तभी और तभी बदल सकते हैं, जब काम उसे बदल दें, जो हमारे मन में चल रहा है। हम अवचेतन रूप से ही, अपने जीवन से उन सभी संभावनाओं को लात मारकर बाहर करते जा रहे हैं। जीवन, हमारे निष्क्रिय विचार ढाँचे के साथ भी पूरा तालमेल रखता है। हम मन ही मन जो सोचते है, वही पाते हैं। हम सारा दिन जो सोचते रहते हैं, वही बन जाते हैं।

हम किसी बात पर केंद्रित हो सकते हैं। पर ऐसी कोई चीज़ पर नहीं, जिस पर 'केंद्रित नहीं' हो सकते हों। मिसाल के लिए, जब हम अपने मन में ऐसे विचार रखते हैं, "मुझे कार पार्क करने के लिए कोई जगह नहीं मिलेगी।" तो वास्तव में हमको कार खड़ी करने के लिए कोई उपयुक्त

जगह नहीं दिखेगी। परंतु हम यह नहीं देख पाते कि ज्यों ही हम भरी हुई जगह देखकर आगे जाते

है तो पीछे से कोई कार बैंक करके निकालता है और उसी दौरान वहीं दूसरा व्यक्ति अपनी कार लगा देता है। मेरा विश्वास करें, दूसरे व्यक्ति का विचार निश्चित रूप से यह रहा होगा, "मुझे पता है कि आज मुझे कार लगाने के लिए जगह मिल जाएगी। मेरे लिए कोई न कोई खाली जगह प्रतीक्षा कर रही है। जीवन उसके लिए कार खड़ी करने को स्थान बना देता है।

एक नौजवान नाविक पहली बार समुद्र में उतरा। उसका जहाज, उत्तरी अटलांटिक में भारी तूफान की चपेट में आ गया। नाविक को आदेश दिया कि यह ऊपर जाकर पाल समेटे। ज्यों ही यह ऊपर गया तो उसने अचानक नीचे देखा और वह अपना संतुलन खोने लगा। तभी नीचे से एक बूढ़े नाविक ने चिल्लाकर कहा, "ऊपर देखो, जल्दी ऊपर देखो। ज्यों ही नौजवान ने ऊपर की और देखा तो उसका संतुलन कायम हो गया और वह आराम से काम करके नीचे आ गया। फिर बूढ़े नाविक ने कहा, "मेरे बच्चे! जब आउटलुक अच्छा नहीं हो, तो हमेशा अप-लुक के लिए कोशिश करनी चाहिए।"

केवल यही मानसिक चित्रण न करें कि हम क्या है, हमको निरंतर यह भी सोचते रहना होगा कि हम क्या होंगे। मैं आपसे विश्वास और विज्ञान, दोनों ही की बात कर रहा हूँ। दरअसल, हम इसे अपने जीवन में ही आजमा सकते है। अपने-आप से बात करना आरंभ करें। हर दिन का आरंभ इस विश्वास के साथ करें कि आज सब कुछ बदल जाने वाला है। सुबह उठकर यह मानकर चले कि आज सब बदल जाएगा। दाँत साफ़ कर, बालों में कंघी करते हुए, मानकर चलें कि आज सब कुछ बदल जाने वाला है। साक्षात्कार के लिए जाते समय यही सोचे कि सब कुछ बदल जाने वाला है।

अमल किए बिना केवल विचार रखने से कुछ होने वाला नहीं है। तो अपने विश्वास के साथ कर्म को शामिल करें। अवसरों को ऐसे देखें, मानो आपका पूरा जीवन उन्हीं पर टिका हो। अपनी ओर से कोई कमी न छोड़े। जब मन का विस्तार होता है, तो जीवन का भी विस्तार होता है। हमारा अवसर पहले से ही कहीं हमारे लिए प्रतीक्षा कर रहा है। हमको केवल उसे अपने जीवन में समाहित करना है।



पीएनजीआरबी का नया कार्यालय: एक स्मार्ट ऑफिस : भविष्य का कार्यस्थल



मीता सिंह
सहायक परामर्शदाता
प्रशासन प्रभाग

पीएनजीआरबी का नया कार्यालय एक स्मार्ट ऑफिस है, जो तकनीक और नवाचार का उपयोग करके कार्य को अधिक कुशल, उत्पादक और सुविधाजनक बनाता है। यह कार्यालय में काम करने के तरीके को बदल देता है और कर्मचारियों को अधिक प्रभावी ढंग से काम करने में मदद करता है। स्मार्ट ऑफिस तकनीक नियमित कार्यों को स्वचालित करके और विभिन्न टूल और प्लेटफ़ॉर्म को एकीकृत करके उत्पादकता में काफी सुधार कर सकती है। बुद्धिमान प्रणालियों जैसे कि आभासी सहायक, समय प्रबंधन उपकरण और कार्यप्रवाह स्वचालन सॉफ़्टवेयर को लागू करके, कर्मचारी उच्च प्राथमिकता वाले कार्यों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं और समय लेने वाली मैनुअल प्रक्रियाओं को समाप्त कर सकते हैं।

इसके अलावा, संचार और सहयोग प्लेटफ़ॉर्म को एकीकृत करने से सूचना साझा करना सुव्यवस्थित होता है, जिससे कर्मचारियों के लिए परियोजनाओं पर संगठित और अद्यतन रहना आसान हो जाता है। स्मार्ट ऑफिस में कई विशेषताएं होती हैं जो इसे पारंपरिक ऑफिस से अलग बनाती हैं। इनमें से कुछ प्रमुख विशेषताएं हैं:

1. आधुनिक तकनीक: कार्यालय में आधुनिक तकनीक का उपयोग किया गया है, जैसे कि वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग और डिजिटल साइनेज।स्मार्ट ऑफिस में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग की सुविधा दी गई है, जिससे दूरस्थ टीमों के साथ संवाद करना आसान हो जाता है। स्मार्ट ऑफिस में डिजिटल साइनेज का उपयोग करके महत्वपूर्ण जानकारी को प्रदर्शित किया गया है, जैसे कि मीटिंग रूम की उपलब्धता और आगंतुकों के लिए निर्देश। कनेक्टिविटी के माध्यम से सहयोग बढ़ाना। रिमोट और हाइब्रिड कार्य मॉडल को अपनाने में वृद्धि के साथ, सब से अधिक महत्वपूर्ण यह है कि कार्यालय के वातावरण बनाए जाएं जो निर्बाध सहयोग की सुविधा प्रदान करें। स्मार्ट ऑफिस तकनीक वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग सिस्टम, इंटरैक्टिव व्हाइटबोर्ड और ई- ऑफिस -आधारित फ़ाइल शेयरिंग प्लेटफ़ॉर्म, जैसे समाधान प्रदान करती है जो कर्मचारियों को एक साथ प्रभावी ढंग से काम करने की अनुमति देते हैं, चाहे वे कार्यालय में हों या दूर से काम कर रहे हों। ये उपकरण न केवल टीम वर्क की भावना को बढ़ावा देते हैं बल्कि कर्मचारियों को वैश्विक प्रतिभा पूल में टैप करने में भी सक्षम बनाते हैं, उनकी पहुंच और क्षमताओं का विस्तार करते हैं।

उच्च-गुणवत्ता वाले वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग सिस्टम जैसे ज़ूम या माइक्रोसॉफ्ट टीम्स रिमोट बैठकों को अधिक व्यक्तिगत और इंटरैक्टिव बनाते हैं, शारीरिक रूप से उपस्थित न होने के नुकसान को कम करते हैं। इसके अलावा, उन्नत फ़ाइल शेयरिंग प्लेटफ़ॉर्म जैसे गूगल ड्राइव या ड्रॉपबॉक्स दस्तावेज़, प्रस्तुतियों और अन्य कार्य सामग्री पर वास्तविक समय में सहयोग की सुविधा प्रदान करते हैं। ये उपकरण संगठन की उत्पादकता और कार्य अनुभव को बेहतर बनाने में मदद करते हैं। पीएनजीआरबी कार्यालय में 6 कॉन्फ्रेंस /मीटिंग हाल हैं।

2. ऊर्जा संचयन और सुरक्षा प्रणाली: कार्यालय में ऊर्जा संचयन के लिए विशेष व्यवस्था की गई है, जैसे कि एलईडी लाइटिंग इत्यादि। स्मार्ट ऑफिस में विभिन्न कार्यों को स्वचालित करने के लिए तकनीक का उपयोग किया जाता है, जैसे कि लाइटिंग, तापमान और सुरक्षा प्रणाली। कार्यालय में सुरक्षा प्रणाली का उपयोग किया गया है, जैसे कि सीसीटीवी कैमरे, फ़ाइर फाइटिंग सिस्टम और एक्सेस कंट्रोल सिस्टम।

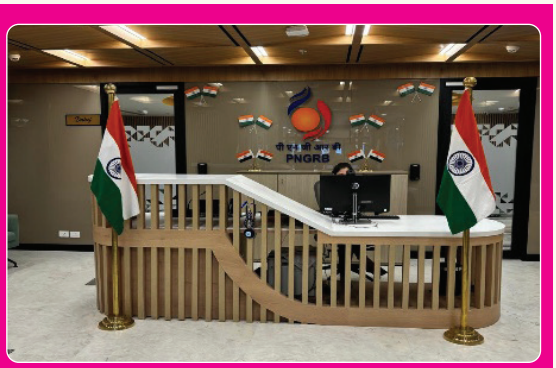
3. कर्मचारी कल्याण और कर्मचारी संतुष्टि: कार्यालय में कर्मचारी कल्याण के लिए विशेष व्यवस्था की गई है, जैसे कि चिकित्सक कक्ष, पुस्तकालय, वॉटर कूलर और जलपान गृह इत्यादि। स्मार्ट ऑफिस में काम करने से कर्मचारियों को अधिक संतुष्टि मिलती है, क्योंकि वे अधिक प्रभावी ढंग से काम कर सकते हैं। स्मार्ट ऑफिस तकनीक कर्मचारी कल्याण पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकती है, अधिक आरामदायक और व्यक्तिगत कार्य वातावरण बनाकर। कर्मचारियों को ध्यान और माइंडफुलनेस अभ्यासों के माध्यम से तनाव प्रबंधन और मानसिक कल्याण में सुधार करने में मदद कर सकते हैं। ये तकनीकें न केवल कर्मचारियों के शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार करती हैं, बल्कि उनके मानसिक स्वास्थ्य और उत्पादकता को भी बढ़ाती हैं।

पीएनजीआरबी का नया कार्यालय एक स्मार्ट ऑफिस है जो तकनीक और नवाचार का उपयोग करके कार्य को अधिक कुशल, उत्पादक और सुविधाजनक बनाता है। यह कार्यालय में काम करने के तरीके को बदल देता है और कर्मचारियों को अधिक प्रभावी ढंग से काम करने में मदद करता है। एक प्रतिस्पर्धी नौकरी बाजार में, एक तकनीकी रूप से उन्नत कार्यक्षेत्र प्रदान करना शीर्ष प्रतिभाओं को आकर्षित करने और बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है। कर्मचारी उन कंपनियों की ओर आकर्षित होते हैं जो नवीनतम तकनीक में निवेश करती हैं और नवाचार को प्राथमिकता देती हैं। स्मार्ट ऑफिस तकनीक को अपनाकर, व्यवसाय एक अग्रगामी कार्य वातावरण बना सकते हैं जो कुशल पेशेवरों को आकर्षित करता है और उन्हें प्रतिस्पर्धियों से अलग करता है।

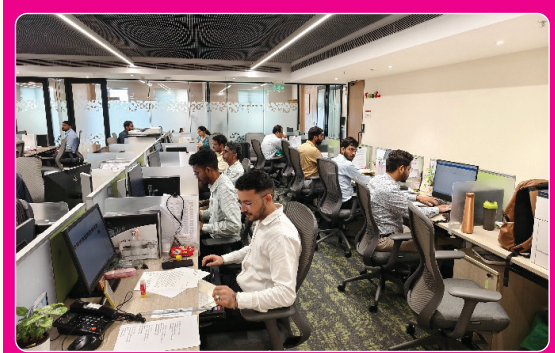
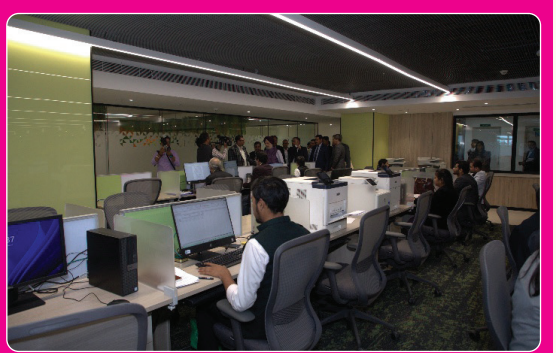
इससे न केवल संस्था की प्रतिष्ठा बढ़ती है, बल्कि यह कर्मचारियों की संतुष्टि और उत्पादकता को भी बढ़ावा देता है। एक तकनीकी रूप से उन्नत कार्यक्षेत्र कर्मचारियों को नवीनतम तकनीकों के साथ काम करने और अपने कौशल को विकसित करने का अवसर प्रदान करता है, जिससे वे अपने क्षेत्र में अद्यतित रहते हैं।

इस प्रकार, स्मार्ट ऑफिस तकनीक न केवल व्यवसाय को प्रतिस्पर्धी बनाती है, बल्कि यह कर्मचारियों के लिए भी एक आकर्षक कार्य वातावरण प्रदान करती है।

भारतवर्ष के लिए हिंदी भाषा ही सर्व साधारण की भाषा होने के उपयुक्त है-
शरदचरण मिश्र





नए कार्यालय परिसर में कार्य करते हुए कर्मचारी

जीवन में महत्वपूर्ण व्यक्ति कैसे बनें?



सुशील कुमार गुप्ता
निदेशक
वाणिज्यिक प्रभाग

जीवन में केवल दो ही विकल्प होते हैं। उच्चतम लक्ष्यों को पाने के लिए छोटी बातों को उपेक्षित करें या छोटी बातों के लिए बड़े लक्ष्यों को गौण कर दें। अगर आप जीवन में कुछ बनना चाहते हैं, अगर आप भीड़ से परे हटना चाहते हैं, अगर आप कोई ऐसा व्यक्ति बनना चाहते हैं, जिसकी ओर देखा जा सकता है, तो आपके लिए केवल एक ही चुनाव बचता है। आपको अपनी पसंद और नापसंद से परे हटना होगा, छोटी बातों को उपेक्षित करना होगा और बड़े लक्ष्यों पर स्वयं को केंद्रित रखना होगा।

मुझे सोना बहुत अच्छा लगता है। मुझे व्यायाम करना पसंद नहीं है। मुझे तला हुआ भोजन पसंद है। मुझे अंकुरित भोजन और सलाद नहीं है। अपनी इस सारी पसंद और नापसंद के बावजूद, मैं यह जानता हूँ कि अगर मैं पूरी तरह फ़िट और स्वस्थ रहा तो जीवन में बहुत कुछ पा सकता हूँ। तब, मैं अधिक सोने और तला-भुना खाने की आदत का गौण बनाते हुए, व्यायाम, अंकुरित भोजन और सलाद खाने की आदत को अपने जीवन में शामिल कर लूँगा ताकि मुझे एक स्वस्थ जीवन मिल सके। फिर मैं अपने शरीर को वह सब देता हूँ, जो कि स्वस्थ और चुस्त रहने के लिए आवश्यक है। विकल्प यही है कि आपको एक स्वस्थ और तंदुरुस्त जीवन के लिए उतना ही खाना और सोना चाहिए, जितना कि आपके लिए आवश्यक है।

यह तो निश्चित है, विश्वनाथन आनंद अपनी किशोरावस्था में आम दोस्तों की भीड़ में शामिल नहीं थे। यदि ऐसा होता, तो वे आज विश्व चैंपियन न होते। दावतें, मौज-मस्ती, डिस्कोथेक, मूवी, बाहर घूमना, बाइक पर मटरगश्ती आदि बढ़ती हुई उम्र के खास शगल होते हैं। यदि उनके पास भी अपनी बढ़ती उम्र के लिए ऐसे ही साधन होते तो वे वैसे लिएंडर पेस या सचिन तेंदुलकर न बन पाते, जिन्हें हम जानते हैं। हम स्वतंत्र भारत का आनंद इसलिए ले सके क्योंकि असंख्य नाम तथा पहचान से परे भारतीयों ने अपनी पसंद, नापसंद, परिवार और यहाँ तक कि अपने जीवन को भी झोंक दिया ताकि अंग्रेज़ों को देश से बाहर निकाला जा सके।

अधिकतर लोग सफलता की सीढ़ियों तक इसलिए चढ़ सके क्योंकि जब हममें से अधिकतर सोना चाहते थे, वे तब भी काम कर रहे थे। यदि मैं जीवन से सब कुछ पाना चाहता हूँ तो मुझे पहले वह सब देना होगा, जो मैंने जीवन पाने के लिए लिया है। विंस्टन चर्चिल ने कहा था, "मेरे पास देने के लिए अपने रक्त, परिश्रम, स्वेद और अश्रुओं के

अतिरिक्त कुछ नहीं है।" हमें वह सब देने की आवश्यकता नहीं है। हमें केवल अपनी कुछ पसंद और नापसंद को दरकिनार करना होगा ताकि हम उन इच्छाओं को पा सके, जिन्हें हम हृदय से चाहते हैं।

यदि मुझे किसी ऐसे स्थान पर जाना है, जहाँ मैं पहले कभी नहीं गया, तो मुझे ऐसा रास्ता ही चुनना होगा, जिस पर मैंने पहले कभी क़दम नहीं रखा। अगर मुझे ऐसा कुछ हासिल करना है जिसे मैं कभी हासिल नहीं कर सका, तो मुझे ऐसे काम करने होंगे जो मैंने कभी नहीं किए। अगर कुछ ऐसा पाना है, जो आज तक कोई नहीं पा सका, तो कुछ ऐसा करना होगा, जो किसी ने कभी नहीं किया है।

बहुत सीधी सी बात है: या तो अपने जीवन के उद्देश्य के आगे पसंद और नापसंद को गौण कर दो या अपने जीवन के उद्देश्य को पसंद या नापसंद के लिए गौण बना दो।

यही बात स्पष्ट कर देती है कि पिरामिड के निचले तल पर इतनी भीड़ क्यों होती है। कुछ लोगों के लिए, जिन्होंने खुद को भीड़ से अलग रखने का निर्णय लिया होता है, उनके लिए अपनी पसंद-नापसंद और यहाँ तक कि उनका अपना जीवन भी जीवन के उद्देश्य की तुलना में महत्त्वहीन हो जाता है।

आप पूर्व जाने की इच्छा रखते हुए, पश्चिम नहीं जा सकते। आपको स्वस्थ और तंदुरुस्त रहने की क़ीमत अदा करनी ही होगी। अनुशासन! जब तक आप अपने प्रति सहज व सरल नहीं हो सकेगा।

अगर नया रास्ता पाना चाहते हैं तो सबसे आगे चलने का साहस संजोना होगा। खतरा उठाएँ। जब तक आप अपनी पसंद-नापसंद से ऊपर उठने का साहस नहीं करते, तब तक आप जीवन के उद्देश्य को पूरा नहीं कर सकते। एक महान हस्ती बनने की इच्छा रखते हैं तो अपने भीतर छिपी प्रतिभा को सामने लाएँ। जो दूसरे जानते हों, उनसे अधिक जानने की चेष्टा करें। जो दूसरे करते हैं, उनसे अधिक करने की चेष्टा करें। दूसरे आपसे जो भी अपेक्षा करते हों, अपने-आप से उनसे अधिक अपेक्षा करने की कोशिश करें।

हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

- स्वामी दयानंद

कार्यालयों में AI का उपयोग



फरहान अख्तर
सहायक परामर्शदाता
तकनीकी प्रभाग

परिचय

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence या **AI**) आज हर क्षेत्र में तेजी से अपना प्रभाव दिखा रही है। कार्यालयों में भी, विशेषकर सरकारी विभागों में, AI आधारित उपकरण कर्मचारियों के कार्य करने के तरीके को बदल रहे हैं। चैटजीपीटी जैसे जनरेटिव AI मॉडलों के आने के बाद ज्ञान-आधारित कार्यों में स्वतः समाधान पाने की क्षमता मुख्यधारा में आ गई है।

AI: कार्यालय के लिए एक वरदान

कार्यालयी कामकाज में AI अनेक प्रकार से वरदान साबित हो रहा है। ये उपकरण मानव-कार्यक्षमता को बढ़ाकर समय और संसाधनों की बचत करते हैं। एक अध्ययन में पाया गया है कि जनरेटिव AI के प्रयोग से कर्मचारियों की प्रति घंटे उत्पादकता औसतन 33% तक बढ़ गई।

AI टूल्स दफ्तर के रोज़मर्रा के कार्यों को आसान बनाकर कर्मचारियों का बोझ कम करते हैं। **उदाहरण के लिए, AI निम्नलिखित कार्यों में सहायक हो सकता है:**

- बैठक को स्वचालित रूप से रिकॉर्ड करना और उसका ट्रांस्क्रिप्शन तैयार करना, जिसमें मुख्य चर्चा और निर्णय दर्ज हों।
- बैठक के आधार पर विस्तृत कार्य-वृत्त (नोट्स) तथा अनुवर्ती कार्यों की सूची बनाना।
- ईमेल, रिपोर्ट और ज्ञापन (मेमो) जैसे पाठ्य दस्तावेज़ों को संक्षिप्त करना, भाषा स्पष्ट करना और उन्हें परिष्कृत करना।
- प्रारंभिक मसौदे तैयार करना – जैसे किसी रिपोर्ट का खाका या पत्र का ड्राफ्ट – ताकि लेखन की प्रक्रिया तेज़ हो सके।
- बड़े डेटा सेट का त्वरित विश्लेषण कर प्रासंगिक निष्कर्ष निकालना, जिससे निर्णय लेने में आसानी हो।

उपरोक्त तरीकों से AI कर्मचारी का एक डिजिटल **सहायक** बन जाता है। कुछ विशेषज्ञ तो कहते हैं कि AI को हर कर्मचारी के लिए एक इंटर्न की तरह मानना चाहिए, जो उन कार्यों को तेजी से कर सकता है जिनमें सामान्यतः कर्मचारी का काफी समय लग जाता है (जैसे जानकारी खोजना या बैठक के नोट तैयार करना)। इस



दृष्टिकोण से, मानव कर्मचारी अपने मुख्य कार्य पर अधिक ध्यान केंद्रित कर पाता है और थकाऊ काम AI पर छोड़ सकता है।

AI का स्मार्ट उपयोग कैसे करें?

AI को अपनाने का अर्थ यह नहीं कि मानव बुद्धि को किनारे कर दिया जाए। वास्तव में, AI का **स्मार्ट उपयोग** यही है कि मनुष्य और मशीन मिलकर बेहतरीन परिणाम दें। नीचे कुछ सिद्धांत दिए गए हैं जिनपर चलते हुए कर्मचारी AI का बुद्धिमानी से इस्तेमाल कर सकते हैं:

1. **AI को सहायक रखें, मालिक नहीं:** AI को कॉ-पायलट या सहायक की तरह प्रयोग करें। यह आपके काम को बढ़ा सकता है लेकिन इसका उद्देश्य मानव निर्णय को पूरी तरह प्रतिस्थापित करना नहीं होना चाहिए।
2. **मानवीय रचनात्मकता को प्राथमिकता:** हमेशा याद रखें कि आखिरी मूल्यवान तत्व आपकी स्वयं की रचनात्मक सोच है। AI द्वारा दिए गए आइडिया को आधार बनाएं, पर उसमें अपना मौलिक इनपुट ज़रूर जोड़ें। पर्ड्यू (Purdue) विश्वविद्यालय के संचार दिशा-निर्देशों में कहा गया है कि "रचनात्मकता सर्वप्रथम" – AI का उपयोग मानव रचनात्मकता को समर्थन देने के लिए होना चाहिए, न कि उसे दबाने के लिए।
3. **क्रमिक सुधार की रणनीति:** AI टूल से बेहतरीन परिणाम एक ही बार में नहीं मिल जाते। प्रश्न (प्रॉम्प्ट) को ढंग से बनाना एक कला है। यदि AI का उत्तर पूरी तरह संतोषजनक नहीं है, तो इनपुट को संशोधित कर दोबारा प्रयास करें। चरणबद्ध तरीके से AI के आउटपुट को परिशोधित करते हुए अंत में अपनी जरूरत के अनुरूप परिणाम हासिल करें। यह एक परीक्षण-त्रुटि की प्रक्रिया हो सकती है, पर इससे

आपको AI की क्षमताओं का बेहतर अंदाज़ा होगा।

4. **डेटा गोपनीयता:** AI टूल का प्रयोग करते समय किसी भी संवेदनशील या गोपनीय जानकारी को उनमें दर्ज न करें, क्योंकि इससे डेटा असुरक्षित हो सकता है। अपनी संस्था की गोपनीयता नीतियों का पालन करें.

उपरोक्त बातों को अपनाकर AI को अपने कार्य प्रवाह में शामिल करें। याद रखें कि AI का सर्वोत्तम इस्तेमाल तभी संभव है जब मानव और मशीन दोनों अपनी-अपनी भूमिका में संतुलित तरीके से योगदान दें। सही उपयोग से AI एक शक्ति-वर्धक साधन है जो आपकी दक्षता कई गुना बढ़ा सकता है।

AI के आउटपुट की जाँच-परख क्यों जरूरी?

AI की उपयोगिता के साथ-साथ उसकी सीमाओं को समझना भी महत्वपूर्ण है। AI मॉडल कभी-कभी ऐसे उत्तर पैदा करते हैं जो सुनने-पढ़ने में बिल्कुल विश्वसनीय लगते हैं पर वास्तव में गलत या मनगढ़ंत होते हैं। AI के इस प्रवृत्ति को तकनीकी शब्दों में **"हैलुसिनेशन" (hallucination)** कहा जाता है। सरल शब्दों में, जब कोई AI आत्मविश्वास के साथ ऐसा जवाब दे जो तथ्यात्मक रूप से गलत हो या पूरी तरह गढ़ा हुआ हो, तो वह एक हैलुसिनेशन है। इस प्रकार के भ्रामक उत्तर उपयोगकर्ता को भारी भ्रम में डाल सकते हैं।

कार्यालयी संदर्भ में कल्पना कीजिए, यदि AI किसी सरकारी योजना के बारे में ग़लत जानकारी दे दे और उसे बिना जाँचे आगे प्रसारित कर दिया जाए – परिणाम गंभीर हो सकते हैं। इसलिए, **AI द्वारा प्रदान किया गया प्रत्येक आउटपुट मानव निरीक्षण और सत्यापन के बाद ही उपयोग में लिया जाना चाहिए**। AI टूल कितने ही उन्नत क्यों न हों, अंतिम जाँच-पड़ताल मनुष्य द्वारा किया जाना बेहद ज़रूरी है।

पूर्वानुमान विश्लेषण (Predictive Analysis) और अनुपालन

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का एक महत्त्वपूर्ण उपयोग **पूर्वानुमान विश्लेषण** में है। Predictive Analysis की सहायता से किसी भी संगठन के पिछले डेटा, घटनाओं और पैटर्न का अध्ययन कर भविष्य की संभावित स्थितियों का अनुमान लगाया जा सकता है। कार्यालयों एवं नियामक निकायों के लिए यह विशेष रूप से उपयोगी है क्योंकि इससे न केवल कार्यकुशलता बढ़ती है, बल्कि संभावित जोखिमों का पूर्वाभास भी मिल जाता है। उदाहरण के लिए, **ऑडिट और अनुपालन** (Audit & Compliance) की प्रक्रिया में AI ऐतिहासिक रिकार्ड्स का विश्लेषण कर यह पहचान सकता है कि किस प्रकार की **गैर-अनुपालन** (अनुपालन न करने की स्थिति) अधिक बार सामने आती है। इससे अधिकारी पहले से सतर्क रहकर सुधारात्मक कदम उठा सकते हैं। नियामक ढाँचों जैसे टी4एस (**T4S**) और ईआरडीएमपी **(ERDMP)** के संदर्भ में AI और **पूर्वानुमान विश्लेषण** का योगदान और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है। उदाहरणस्वरूप, AI उपकरण पाइपलाइन संचालन, सीएनजी स्टेशन या हाइड्रोजन ब्लेंडिंग से जुड़े डेटा का गहन विश्लेषण कर उन क्षेत्रों को चिन्हित कर सकते हैं जहाँ T4S मानकों से विचलन की संभावना है। इसी प्रकार, ईआरडीएमपी के तहत आपातकालीन प्रतिक्रिया की तैयारियों को AI मॉडल वास्तविक समय के सिमुलेशन और परिदृश्य-विश्लेषण के माध्यम से परख सकते हैं। इससे न केवल **गैर-अनुपालन की प्रारंभिक पहचान** संभव होती है, बल्कि यह भी समझ आता है कि नियामक प्रावधानों के उल्लंघन से कौन से परिचालनिक या सुरक्षा संबंधी खतरे पैदा हो सकते हैं।

सरल शब्दों में, **पूर्वानुमान विश्लेषण** अधिकारियों को केवल वर्तमान की स्थिति जानने तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उन्हें संभावित भविष्य की चुनौतियों के लिए पहले से तैयार करता है। इससे PNGRB जैसे विनियामक निकाय अपने **सुपरवाइजरी और नियामक निरीक्षण** को और सशक्त बना सकते हैं।

जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाएँ



शीतला प्रसाद
लेखाकार
वाणिज्यिक प्रभाग

वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन (Climate Change) पूरी दुनिया के लिए सबसे बड़ी चुनौती बन चुका है। बढ़ते औद्योगिकीकरण, वनों की कटाई, प्रदूषण और अनियंत्रित विकास ने वातावरण का संतुलन बिगाड़ दिया है। इसका सीधा असर प्राकृतिक आपदाओं के रूप में दिखाई देता है — कभी बाढ़, कभी सूखा, तो कभी चक्रवात और भू-स्खलन। जलवायु परिवर्तन और आपदाओं का संबंध

1. तापमान वृद्धि – धरती का औसत तापमान लगातार बढ़ रहा है, जिससे ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं। इसका नतीजा है कि नदियाँ उफान पर रहती हैं और बाढ़ की घटनाएँ बढ़ती हैं।

2. अनियमित वर्षा – मानसून के पैटर्न में बदलाव आ गया है। कभी अचानक भारी बारिश (क्लाउडबर्स्ट) तो कभी लंबे समय तक सूखा पड़ता है।

3. चक्रवात और तूफान – समुद्र का तापमान बढ़ने से चक्रवात ज्यादा तीव्र और बार-बार आने लगे हैं।

4. कृषि पर प्रभाव – बार-बार की बाढ़ और सूखे से फसलें नष्ट होती हैं, जिससे किसानों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है।

हाल ही की प्राकृतिक आपदाएँ (2025)

1. उत्तराखंड – बादल फटना सितंबर 2025 में देहरादून और आसपास के क्षेत्रों में अचानक भारी वर्षा और बादल फटने की घटनाएँ हुईं। इससे पुल टूट गए, सड़कें बंद हुईं और कई घरों में पानी भर गया। हजारों लोग प्रभावित हुए।

2. असम – बाढ़ की दूसरी लहर असम में बाढ़ का दूसरा चरण देखने को मिला। इस दौरान लगभग 22,000 लोग प्रभावित हुए, कई गांव डूब गए और लोगों को सुरक्षित स्थानों पर ले जाना पड़ा।

3. उत्तर प्रदेश – गंगा का खतरा बिजनौर जिले में गंगा का जलस्तर बढ़ने से लगभग 40 गांवों और शहर को खतरा पैदा हो गया। लोगों को लगातार सुरक्षित जगहों पर स्थानांतरित किया जा रहा है।

4. उत्तरकाशी (उत्तराखंड) – फ्लैश फ्लड अगस्त 2025 में उत्तरकाशी जिले में बादल फटने/ग्लेशियर झील फटने जैसी घटना से भारी तबाही हुई। होटल बह गए, गांव डूबे और कई लोग लापता हो गए।



उत्तराखंड में बादल फटने से बहते घर और पेड़ असम में डूबे गांव व नावों से रेस्क्यू करते लोग

आंकड़ों की भयावह स्थिति

2025 के पहले सात महीनों में लगभग 1,626 लोगों की मौत हुई है बाढ़, तूफान, बिजली गिरने और अन्य मौसमी आपदाओं के कारण।

इसी अवधि में लगभग 1.57 लाख हेक्टेयर की फसलें नष्ट हुईं। छह महीनों में 1.6 लाख से ज्यादा लोग बेघर हुए आपदाओं के कारण।

निष्कर्ष में जलवायु परिवर्तन केवल भविष्य की समस्या नहीं, बल्कि वर्तमान की सच्चाई है। यदि हम समय रहते पर्यावरण संरक्षण, नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग, वनों की रक्षा और प्रदूषण नियंत्रण जैसे कदम नहीं उठाएँगे, तो प्राकृतिक आपदाओं की तीव्रता और विनाशकारी प्रभाव और बढ़ते जाएंगे।

प्रकृति दोहन पर कुछ पंक्तियां:- (स्वरचित)

भैया काटो न पेड़ पौधे और डाली। भैया काटो न.....

छेड़-छाड़ प्रकृति से करना नही ठीक है। भैया।
प्रकृति से हमको जीवन मिलता, मिलती प्राणदायिनी वायु।
मधुर-मधुर फल हमको मिलते, मिले मनोहर हरियाली।।

भैया काटो न पेड़-पौधे और डाली.....
पेड़ काट दिये जंगल काटे, दिया निमंत्रण संकट को।
बना-बना कर महल अंटारी, खुश करते तुम लोभी मन को।।

लगा-लगा कर झाड़-झाड़ियां घर को खूब सजाते हो।
यदि दो पेड़ लगाओ भैया, मिलती मन को खुशहाली।।
भैया काटो न पेड़ पौधे और डाली.....

पीएनजीआरबी की कार्य योजना मे समन्वय प्रभाग की केंद्रीय भूमिका



पंकज बिष्ट
उप-परामर्शदाता
समन्वय प्रभाग

प्रभाग का संक्षिप्त परिचयः

समन्वय प्रभाग पीएनजीआरबी के विभिन्न परिचालन प्रभागों और सेल के बीच समन्वय और संपर्क स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

यह प्रभाग कार्यों के ओवरलैप होने की स्थिति में उचित प्रभाग को विषयों का आवंटन करने के लिए जिम्मेदार है।

इसके अतिरिक्त, यह प्रभाग विभिन्न वैधानिक निकायों और मंत्रालयों के साथ समन्वय और संपर्क स्थापित करने का कार्य करता है ताकि प्रभावी संचार सुनिश्चित किया जा सके।

हाइड्रोजन को प्राकृतिक गैस के साथ मिश्रण तथा पाइपलाइन के माध्यम से इसके परिवहन के पीएनजीआरबी के रोडमैप के हिस्से के रूप में, हाइड्रोजन सेल भी समन्वय प्रभाग के अंतर्गत कार्य करता है ।

वर्ष 2025-26 के लिए लक्षित कार्ययोजना

1. केंद्रीकृत समन्वय तंत्र

- पीएनजीआरबी के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय, अन्य मंत्रालयों और पेट्रोलियम तथा विस्फोटक सुरक्षा संगठन(पीईएसओ), भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस), तेल उद्योग सुरक्षा निदेशालय(ओआईएसडी) जैसे वैधानिक निकायों के साथ समन्वय।
- हितधारकों (तेल विपणन कंपनियों और अन्य संस्थाओं) के साथ समन्वय।

2. पीएनजीआरबी एमओयू एवं ज्ञान प्रसार

- सभी प्रभागों के साथ फॉलो-अप करना ताकि एमओयू के सहयोगात्मक बिंदुओं पर कार्यान्वयन और ठोस कार्रवाई हो सके।
- तकनीकी पत्रों की स्वीकृति और वेब होस्टिंग हेतु संरचित प्रक्रिया लागू करना।
- अन्य नियामकों के साथ कार्यशालाओं का आयोजन और उनमें भागीदारी करना ताकि सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा किया जा सके और साझा चुनौतियों का समाधान किया जा सके।

3. संसद संबंधी कार्य

- आगामी सत्र से, समन्वय प्रभाग द्वारा संसद से संबंधित कार्यों का निष्पादन विभाग द्वारा किया जायेगा।

4. हाइड्रोजन सेल

- आईसीएफ (एक वैश्विक परामर्श और सलाहकार फर्म) रिपोर्ट का विमोचन, जो हाइड्रोजन विस्तार और पीएनजीआरबी की केंद्रीय भूमिका को दर्शाती है, तथा हितधारकों की प्रतिक्रिया प्राप्त करने के लिए कार्यशाला का आयोजन इसके कार्य करता है।
- चल रहे और आगामी पायलट प्रोजेक्ट स्थलों के लिए दिशानिर्देशों का मानकीकरण करना, यह सुनिश्चित करते हुए कि हाइड्रोजन और प्राकृतिक गैस का मिश्रण पीएनजीआरबी के तकनीकी और सुरक्षा मानकों के अनुरूप हो।
- एनजीएचएम (राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन), भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम और अनुसंधान एवं अन्य विकास प्रयोगशालाओं जैसी संस्थाओं के संसाधनों और अवसंरचना का उपयोग करके हाइड्रोजन परीक्षण लूप बेड की स्थापना करना विभाग की जिम्मेदारी है।

देश की आत्मा को समझने के लिए उसकी भाषा को समझना चाहिए, मुझे जान पड़ा है कि आधुनिक भारत की आत्मा को समझने के लिए मुझे हिंदी भाषा और उसमें प्रकाशित होने वाले साहित्य को पढ़ना चाहिए। हिंदी वर्तमान भारत की समृद्धतम भाषा है, ऐसी भाषा को आधुनिक बहुभाषी राष्ट्र की सभी आवश्यकताओं को संतोषजनक ढंग से पूरा कर सकती है।

—डॉ. ऑडोनल स्मैकल

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है –

सुमित्रानन्दन पंत

वैश्विक ऊष्मीकरण: कारण, दुष्परिणाम एवं समाधान



आकाश नेगी
एमटीएस,
प्रशासन प्रभाग

वैश्विक ऊष्मीकरण वर्तमान युग में मानवता के सामने खड़ा सबसे गंभीर पर्यावरणीय संकट है। यह पृथ्वी के सतही तापमान में दीर्घकालीन और निरंतर वृद्धि को दर्शाता है, जो मुख्यतः मानव-जनित ग्रीनहाउस गैसों के बढ़ते उत्सर्जन के कारण हो रहा है। कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन और नाइट्रस ऑक्साइड जैसी गैसें वायुमंडल में सूर्य की गर्मी को फंसा कर 'ग्रीनहाउस प्रभाव' उत्पन्न करती हैं, जिससे पृथ्वी का तापमान बढ़ता है।

वैश्विक ऊष्मीकरण के कारण

वैश्विक ऊष्मीकरण के पीछे कई मानवीय गतिविधियां जिम्मेदार हैं। सबसे प्रमुख कारण जीवाश्म ईंधनों का दहन है, जैसे कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस, जो ऊर्जा उत्पादन के लिए जलाए जाते हैं और भारी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जित करते हैं। इसके अलावा, वनों की कटाई भी एक महत्वपूर्ण कारण है क्योंकि वृक्ष कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं; उनकी कटाई से इस क्षमता में कमी आती है। कृषि एवं पशुपालन भी मीथेन और नाइट्रस ऑक्साइड जैसी ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में योगदान देते हैं। औद्योगिक क्रियाकलापों से भी भारी मात्रा में प्रदूषक गैसें वायुमंडल में जाती हैं, जो जलवायु परिवर्तन को तेज करती हैं।

वैश्विक ऊष्मीकरण के दुष्परिणाम

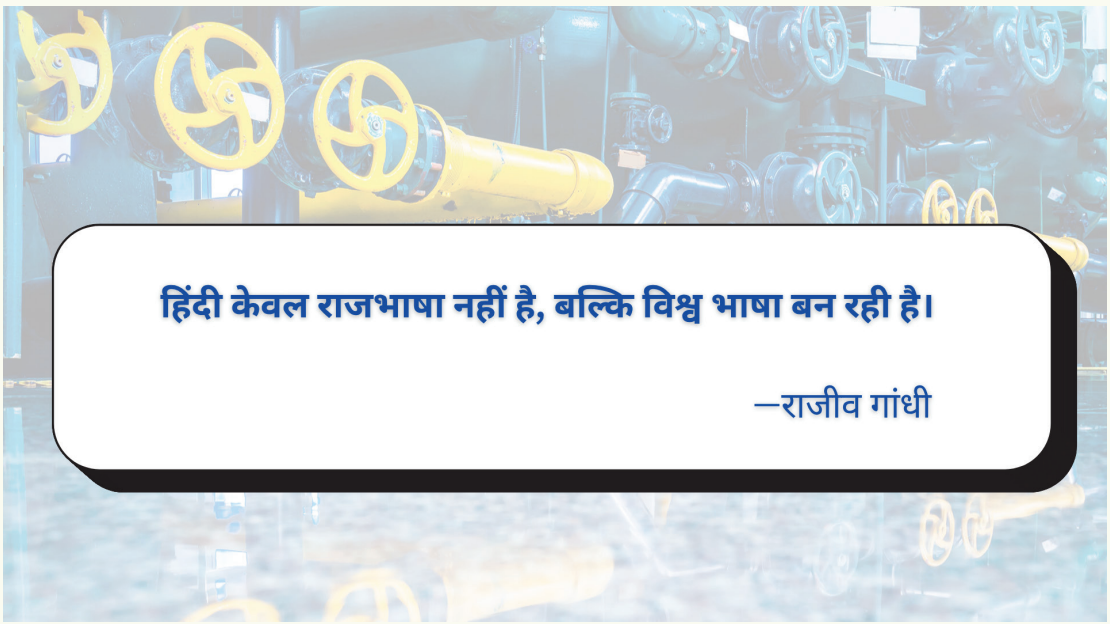
तापमान में वृद्धि के कारण पृथ्वी पर भीषण गर्मी की घटनाएं बढ़ रही हैं। औद्योगिक युग से अब तक लगभग 1.1 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो चुकी है, जिसके परिणामस्वरूप पर्यावरणीय असंतुलन, हिमाच्छादन का क्षरण और समुद्र के स्तर में वृद्धि हुई है। ध्रुवीय हिमखंडों और पर्वतीय हिमनदों के पिघलने से तटीय एवं निम्नभूमि क्षेत्र खतरे में हैं। इसके साथ ही, चक्रवात, बाढ़, सूखा और वनाग्नि जैसी प्राकृतिक आपदाओं की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि हुई है, जिससे सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था प्रभावित होती है। पारिस्थितिकी तंत्र असंतुलित होता जा रहा है, जैव विविधता घट रही है और कई प्रजातियां विलुप्ति की ओर बढ़ रही हैं। इसके अलावा, जनस्वास्थ्य पर भी इसका गंभीर प्रभाव पड़ रहा है, जैसे गर्मी से जुड़ी बीमारियां और रोगवाहक जीवाणुओं की सक्रियता में वृद्धि।

समाधान एवं निराकरणात्मक उपाय

वैश्विक ऊष्मीकरण की समस्या से निपटने के लिए प्रभावी कदम उठाना आवश्यक है। सबसे पहले, नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों जैसे सौर, पवन और जलविद्युत का अधिक से अधिक उपयोग किया जाना चाहिए ताकि जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता कम हो। ऊर्जा दक्षता बढ़ाना भी आवश्यक है जिससे ऊर्जा की खपत नियंत्रित हो सके। वनों का संरक्षण और पुनः वनीकरण पृथ्वी की कार्बन अवशोषण क्षमता को बढ़ाने में मदद करता है। इसके अतिरिक्त, सरकारों को कार्बन कर, उत्सर्जन व्यापार योजनाएं (cap-and-trade) जैसे विनियामक उपाय लागू करने चाहिए, जो उद्योगों को उत्सर्जन कम करने के लिए प्रेरित करें। कृषि क्षेत्र में सतत एवं पर्यावरण-हितैषी विधियों को अपनाना, खाद्य अपव्यय कम करना और पौध-आधारित आहार को बढ़ावा देना भी आवश्यक है। साथ ही, जनजागरूकता बढ़ाना एवं पर्यावरणीय शिक्षा को प्रोत्साहित करना भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

वैश्विक ऊष्मीकरण कोई दूर की समस्या नहीं, बल्कि आज का जीवंत संकट है। यदि इसके निराकरण हेतु ठोस कदम न उठाए गए, तो इसका प्रभाव पृथ्वी के पारिस्थितिकी तंत्र, मानव स्वास्थ्य और सामाजिक-आर्थिक जीवन पर विनाशकारी होगा। इसलिए, वैज्ञानिक नवाचार, कानूनी नियम, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और नागरिक जिम्मेदारी मिलकर ही इस वैश्विक संकट से उबरने का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। हमें समय रहते सतत और समन्वित प्रयास करना होंगे, ताकि पृथ्वी को आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित एवं स्थायी बनाया जा सके।



'स्मार्ट वर्क' बनाम 'हार्ड वर्क': कौन ज्यादा ज़रूरी है?



अंकिता सोनी
उप-परामर्शदाता
वाणिज्यिक प्रभाग

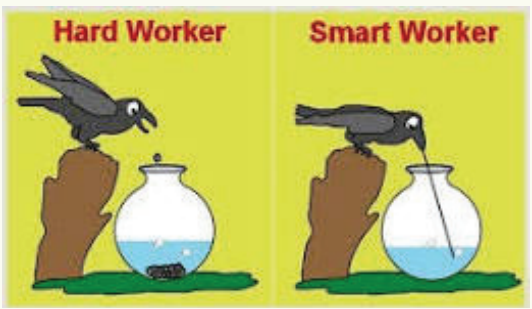


हम सबने बचपन से सुना है – "कड़ी मेहनत का कोई विकल्प नहीं होता।" लेकिन जैसे-जैसे काम करने के तरीके बदल रहे हैं, एक नया सवाल उठता है: **"क्या सिर्फ मेहनत करना काफी है, या हमें समझदारी से भी काम करना चाहिए?"**

आजकल, स्मार्ट शब्द का मतलब बिल्कुल अलग हो गया है। स्मार्ट टीवी, स्मार्टफोन और स्मार्ट गैजेट्स हमारे घरों में अपनी जगह बना रहे हैं, ऐसे में स्मार्ट शब्द का मतलब बिल्कुल नया हो गया है।

स्मार्ट टीवी और स्मार्टफोन की तरह, स्मार्ट वर्क और हार्ड वर्क नाम से एक नई अवधारणा सामने आई है। तो, स्मार्ट वर्क और हार्ड वर्क क्या है?

स्मार्ट वर्क को कम से कम समय में सबसे प्रभावी ढंग से की जाने वाली गतिविधि के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जबकि हार्ड वर्क वह प्रयास है जो आप किसी गतिविधि में लगाते हैं। आइए समझते हैं कि **हार्ड वर्क** और **स्मार्ट वर्क** क्या है, और आज के दौर में किसकी ज़रूरत ज्यादा है।



कड़ी मेहनत बनाम स्मार्ट वर्क, कौन सा अधिक प्रभावी है

जब स्मार्ट वर्क और हार्ड वर्क के बीच फैसला करने की बात आती है, तो हमेशा दो विवादास्पद पक्ष होते हैं । कुछ लोग कह सकते हैं कि कड़ी मेहनत अंततः फल देती है,

जबकि दूसरी ओर, कुछ लोग कह सकते हैं कि स्मार्ट वर्क त्वरित परिणाम देता है।

तो, आपके लिए सबसे अच्छा क्या काम करता है? आप कह सकते हैं कि स्मार्ट वर्क और हार्ड वर्क, दोनों का संयोजन ही सबसे अच्छे परिणाम दे सकता है। काम करने के दोनों तरीके सर्वोत्तम परिणाम पाने के लिए ज़रूरी हैं।

जहाँ कड़ी मेहनत यह सुनिश्चित करती है कि आप वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए सर्वोत्तम प्रयास करें, वहीं स्मार्ट वर्क यह सुनिश्चित करता है कि आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सभी संभव कारकों का उपयोग करें। यहाँ स्मार्ट वर्क में दूसरों को काम सौंपना या काम पूरा करने के लिए उपयुक्त समय निकालना भी शामिल हो सकता है।

आप स्मार्ट वर्क और हार्ड वर्क के बीच अंतर कैसे करते हैं?

हालाँकि स्मार्ट वर्क और हार्ड वर्क में मामूली अंतर हो सकता है, लेकिन वे ध्यान देने योग्य हैं। आइए स्मार्ट वर्क और हार्ड वर्क के कुछ अंतरों पर नज़र डालें।

जब आप कड़ी मेहनत करते हैं, तो आप किसी काम को पूरी लगन से करते हैं। वहीं दूसरी ओर, जब आप समझदारी से काम करते हैं, तो आप उसी काम को करने के कारगर तरीके खोज लेते हैं।

कड़ी मेहनत का मतलब है कि आप किसी काम को एक खास शैली या तरीके से करते हैं। जबकि, जब आप स्मार्ट तरीके से काम करते हैं, तो आप काम को पूरा करने के लिए नए-नए तरीके ढूँढ़ने की कोशिश करते हैं । आपको एक ही काम को करने के एक से ज़्यादा तरीके मिल सकते हैं।

चूंकि स्मार्ट तरीके से काम करने का मतलब है कि आप काम को कुशलतापूर्वक पूरा करने का प्रयास करते हैं, इसलिए आप काम शुरू करने से पहले सोचते हैं।

आप किसी खास काम करने के तरीके के फायदे और नुकसान का मूल्यांकन और आकलन करते हैं। जब आप कड़ी मेहनत करते हैं, तो हो सकता है कि आप कोई योजना न बनाएँ क्योंकि आपका लक्ष्य काम को पूरी मेहनत से पूरा करना होता है।

उपरोक्त स्मार्ट वर्क बनाम हार्ड वर्क उदाहरण से यह स्पष्ट है कि कड़ी मेहनत करते समय आप बहुत अधिक शारीरिक शक्ति लगाते हैं।

जबकि जब आप स्मार्ट तरीके से काम करते हैं, तो आप अपनी मानसिक क्षमता का इस्तेमाल करके शारीरिक मेहनत कम करते हैं। इसलिए स्मार्ट तरीके से काम करने पर कम ऊर्जा खर्च होती है।



“सिर्फ मेहनत नहीं, समझदारी से मेहनत करें।”

स्मार्ट तरीके से काम करने को शॉर्टकट समझने की भूल न करें। सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता। स्मार्ट तरीके से काम करने से समय की बचत तो होती है, लेकिन यह सफलता पाने का कोई शॉर्टकट तरीका नहीं है। यह सफलता पाने का एक कारगर तरीका है। चालाकी से काम करने को आलसी लोगों से नहीं जोड़ा जाना चाहिए । जो व्यक्ति चालाकी से काम करता है वह बुद्धिमान होता है, आलसी नहीं।

आइए, स्मार्ट वर्क बनाम हार्ड वर्क का एक और आसान उदाहरण लेते हैं। आपको एक भारी ईंट को कमरे में इधर-उधर सरकाना है। आप या तो कड़ी मेहनत करके अपनी

पूरी ऊर्जा ईंट को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने में लगा सकते हैं या फिर आप समझदारी से सोचकर ईंट को बिना ज़्यादा मेहनत और कम समय में सरकाने का तरीका निकाल सकते हैं।

जो व्यक्ति चतुराई से सोचता है, वह भारी ईंट को पहियों पर या लुढ़कती हुई चीज़ों पर रखकर उसे आसानी से कमरे में सरकाने के बारे में सोच सकता है। गौर कीजिए कि चतुराई से सोचने से आपकी शारीरिक मेहनत और समय की कितनी बचत हुई है।

इसलिए, हम सही कह सकते हैं कि यद्यपि कड़ी मेहनत से परिणाम मिलता है, लेकिन बहुत सारा समय और ऊर्जा बर्बाद हो जाती है।

जबकि, जब आप स्मार्ट तरीके से काम करते हैं, तो आपको वही परिणाम मिलते हैं, लेकिन साथ ही, आपकी ऊर्जा और समय की भी बचत होती है। स्मार्ट वर्क और हार्ड वर्क के बीच यही सबसे बड़ा अंतर है।

सारांश : कड़ी मेहनत बनाम स्मार्ट वर्क - कौन है विजेता?



यद्यपि इसमें कोई स्पष्ट विजेता नहीं है, क्योंकि दीर्घावधि में अनिवार्यतः कड़ी मेहनत और स्मार्ट वर्क दोनों की आवश्यकता होती है, फिर भी हम कह सकते हैं कि स्मार्ट तरीके से काम करना थोड़ा अधिक लाभप्रद है।

दोनों का संयोजन - कड़ी मेहनत और स्मार्ट वर्क किसी काम को पूरा करने का सबसे अच्छा तरीका है कड़ी मेहनत के साथ-साथ समझदारी से सोचना। दोनों को मिलाकर काम करने से आपको बेहतरीन नतीजे मिलेंगे।

यह निष्कर्ष सही है कि अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत और स्मार्ट वर्क, दोनों की आवश्यकता होती है । हालाँकि, स्मार्ट तरीके से काम करने से आपका समय और ऊर्जा दोनों बचेंगे। व्यस्त रहने से ज़्यादा ज़रूरी है उत्पादक होना। दूसरे शब्दों में, समझदारी से की गई कड़ी मेहनत में शामिल होना अच्छा है ।

हिंदी ही एक ऐसी भाषा है, जिसमें सभी भारतीय भाषाओं का समन्वय है।

—राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन

सोशल मीडिया: संगठन की दृश्यता बढ़ाने का आज का सबसे बड़ा माध्यम



गरिमा मल्होत्रा
परामर्शदाता–जनसंपर्क एवं सोशल मीडिया
सूचना प्रौद्योगिकी प्रभाग

आज के डिजिटल युग में सोशल मीडिया ने हमारी दुनिया को इतना छोटा और जुड़ा हुआ बना दिया है, कि एक क्लिक में सूचना, खबर और संवाद दुनियाभर में पहुंच जाते हैं। चाहे कोई व्यवसाय हो, शिक्षा संस्थान हो या सरकारी संगठन, सभी के लिए सोशल मीडिया एक अहम और अनिवार्य मंच बन चुका है।

PNGRB जैसे नियामक बोर्ड के लिए भी सोशल मीडिया की भूमिका अब केवल विकल्प नहीं, बल्कि 'ज़रूरत का हिस्सा' बन चुकी है।

सोशल मीडिया क्यों है आवश्यक?

- **दृश्यता और पहुंच** – सोशल मीडिया पर सक्रिय रहने से संगठन की गतिविधियाँ, नीतियाँ, और उपभोक्ता हितों के प्रति उसकी प्रतिबद्धता सीधे जनता तक पहुंचती है। इससे जनता में विश्वास और पारदर्शिता बढ़ती है।
- **तत्काल संवाद** – सोशल मीडिया हमें वास्तविक समय में जनता की प्रतिक्रिया सुनने और उनके सवालों का जवाब देने का मौका देता है। यह पारंपरिक माध्यमों की तुलना में कहीं ज्यादा प्रभावी और त्वरित है।
- **उपभोक्ता-केंद्रित छवि** – जब एक नियामक बोर्ड सोशल मीडिया के जरिए उपभोक्ताओं से जुड़ता है, तो यह दर्शाता है कि वह उनकी आवाज़ को महत्व देता है और उनकी समस्याओं का समाधान खोजने में तत्पर है।
- **सूचना का विस्तार** – नई नीतियों, नियमों, योजनाओं, और जागरूकता अभियानों की व्यापक पहुँच सोशल मीडिया से संभव होती है।

नियामक संस्थाओं के लिए सोशल मीडिया का महत्व

अक्सर यह सोचा जाता है कि नियामक बोर्ड केवल नियम बनाने और लागू करने तक सीमित होते हैं। परन्तु आज की अपेक्षाएं बढ़ चुकी हैं। जनता जानना चाहती है कि ये संस्थाएं कैसे उनके हितों की रक्षा कर रही हैं।

PNGRB जैसे संगठन जब सोशल मीडिया पर अपनी उपलब्धियाँ, योजनाएँ और उपभोक्ता सुरक्षा के प्रयास साझा करते हैं, तो वे उपभोक्ताओं के दिल में विश्वास और जुड़ाव पैदा करते हैं।

यह प्लेटफॉर्म नियामक संस्थाओं को अपने कार्यों में

पारदर्शिता लाने, जनभागीदारी बढ़ाने, और डिजिटल युग के साथ कदम से कदम मिलाने का अवसर प्रदान करता है।

कैसे करें प्रभावी सोशल मीडिया प्रबंधन?

- नियमित और सटीक जानकारी साझा करें।
- सरल भाषा में नीतियों और योजनाओं को समझाएं।
- उपभोक्ताओं के सवालों और शिकायतों का समय पर जवाब दें।
- प्रेरक और शिक्षाप्रद कंटेंट के जरिए जागरूकता बढ़ाएं।
- वीडियो, इन्फोग्राफिक्स और लाइव सेशंस से संवाद को रोचक बनाएं।

निष्कर्ष

सोशल मीडिया केवल 'फेसबुक' या 'ट्विटर' का नाम नहीं, बल्कि यह आधुनिक युग में संवाद और विश्वास का एक मजबूत पुल है। एक नियामक बोर्ड के लिए यह जरूरी है कि वह इस पुल को मजबूती से पकड़े और अपने उपभोक्ताओं के बीच अपनी विश्वसनीयता और उपस्थिति को बढ़ाए।

PNGRB की सोशल मीडिया उपस्थिति न केवल संगठन की छवि को सुदृढ़ करेगी, बल्कि यह यह भी दर्शाएगी कि हम उपभोक्ता-केंद्रित हैं, उनकी समस्याओं को समझते हैं और समाधान के लिए हमेशा तत्पर हैं।

आइए, हम सोशल मीडिया को अपनाएं और अपनी पहुंच को नए आयाम दें—क्योंकि समय की मांग यही है!

भारतीयता का दूसरा नाम हिंदी है-

भगवती चरण वर्मा

हिंदी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं है-

मौलाना हसरत मोहानी

ब्रह्माण्ड और आकर्षण का नियम



दीक्षा कश्यप
निजी सहायक
निगरानी प्रभाग

आकर्षण का नियम एक दर्शन है जो बताता है कि सकारात्मक विचार व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक परिणाम लाते हैं, जबकि नकारात्मक विचार नकारात्मक परिणाम लाते हैं। दूसरे शब्दों में, एक सकारात्मक सोच, नकारात्मक सोच की तुलना में अधिक सफलता और खुशी आकर्षित करेगी। और यह "नियम" स्वास्थ्य, वित्त और रिश्तों सहित जीवन के सभी क्षेत्रों पर लागू होता है।

आकर्षण के नियम

आकर्षण का नियम कैसे काम करता है? मूलतः, आपके विचारों की ऊर्जा आपके अनुभवों को प्रकट करती है। इसलिए सकारात्मक विचार सकारात्मक अनुभवों को प्रकट करते हैं और सकारात्मक विचार सकारात्मक अनुभवों को प्रकट करते हैं। इसके पक्षधरों का सुझाव है कि आकर्षण के नियम को बनाने वाले कुछ सार्वभौमिक सिद्धांत हैं:

- **समान समान को आकर्षित करता है** : यह नियम बताता है कि समान वस्तुएँ एक-दूसरे की ओर आकर्षित होती हैं। इसका अर्थ है कि लोग अपने जैसे लोगों को आकर्षित करते हैं—लेकिन यह यह भी बताता है कि लोगों के विचार समान परिणाम आकर्षित करते हैं। ऐसा माना जाता है कि नकारात्मक सोच नकारात्मक अनुभवों को आकर्षित करती है, जबकि सकारात्मक सोच वांछनीय अनुभवों को जन्म देती है।
- **प्रकृति शून्यता को नापसंद करती है** : आकर्षण का यह नियम बताता है कि अपने जीवन से नकारात्मक चीज़ों को हटाकर, उनकी जगह सकारात्मक चीज़ों के लिए जगह बनाई जा सकती है। यह इस धारणा पर आधारित है कि आपके मन और जीवन में पूरी तरह से खाली जगह होना असंभव है। चूँकि इस जगह को हमेशा कुछ न कुछ भरता रहेगा, इसलिए इस जगह को सकारात्मकता से भरना ज़रूरी है, इस दर्शन के समर्थकों का कहना है।
- **वर्तमान हमेशा परिपूर्ण होता है** : यह नियम इस विचार पर केंद्रित है कि वर्तमान क्षण को बेहतर बनाने के लिए आप हमेशा कुछ न कुछ कर सकते हैं। हालाँकि ऐसा हमेशा लग सकता है कि वर्तमान में कुछ खामियाँ हैं, यह नियम यह प्रस्तावित करता है कि भय या दुःख महसूस करने के बजाय, आपको

अपनी ऊर्जा वर्तमान क्षण को सर्वोत्तम बनाने के तरीके खोजने पर केंद्रित करनी चाहिए।

आकर्षण के नियम का उपयोग कैसे करें

- आभारी होना
- अपने लक्ष्यों की कल्पना करें
- किसी स्थिति में सकारात्मकता की तलाश करें
- नकारात्मक सोच को पहचानना सीखें
- सकारात्मक पुष्टि का प्रयोग करें
- नकारात्मक घटनाओं को अधिक सकारात्मक रूप में प्रस्तुत करें

हालाँकि आकर्षण का नियम जीवन की सभी चुनौतियों का तत्काल समाधान नहीं हो सकता, फिर भी यह आपको जीवन के प्रति अधिक आशावादी दृष्टिकोण विकसित करने में मदद कर सकता है। यह आपको अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ते रहने के लिए प्रेरित रहने में भी मदद कर सकता है।



जैसे विचार, वैसी चेतना



सुश्री अंजली सोनी
सहायक सह डेटा एंट्री ऑपरेटर
विधि प्रभाग

हम कितने भाग्यशाली है, जो हमें विचार रूपी पंख मिले हैं, जिससे हम जहां चाहें, जब चाहें, तुरंत पहुंच सकते हैं, जैसे हमारे विचार होते हैं, जैसे हमारे विचार होते हैं, वैसा हमारा आचार रहता है. हमारे विचार बीज की तरह होते हैं, जो सकारात्मक या नकारात्मक हो सकते हैं। तत्पश्चात हमारे मूड, व्यवहार और चरित्र के आधार पर हमारी भावनाएं और दृष्टिकोण बनते हैं और इन सभी के संयोजन को चेतना कहा जाता है। मानव चेतना मनुष्य के सोचने, महसूस करने और व्यक्त करने की ऐसी अद्भुत क्षमता है, जिसका बीज है केवल एक संकल्प, हमारे विचारों से हमारी चेतना बनती है, अतः यदि हम अपने विचारों का कुशल प्रबंधन करना सीख लें, तो हम सर्वोच्च मानव चेतना को प्राप्त कर सकते हैं, परंतु उसके पहले हमें यह जांच करनी होगी कि क्या हम कभी अपने विचारों का निरीक्षण करना बंद कर देते हैं? या हम कभी हमारे विचारों के ऊपर पूर्ण विराम लगाने की योजना बनाते है? अनुभव से यह देखा गया है कि हममें से अधिकांश लोग अपने विचारों को हमारे मन के हर कोने में भटकने और यहां-वहां विखरने के लिए खुला छोड़ देते हैं, जिसके परिणामस्वरूप हमे अनेक प्रकार की तकलीफें सहनी पड़ती है। डॉक्टर के अनुसार, ज्यादा सोचना बहुत ज्यादा खाने के समान है, जिससे हमारा मन भारी हो जाता है और हम खुद को हल्का महसूस कर पाने में असमर्थ हो जाते हैं। अतः हमारे मनके भीतर वापस शांति लाने के लिए हमें अंदर की ओर यात्रा करने की आवश्यकता है जिससे हम अपने भीतर संतुलन वना सकें और अपनी अमूल्या ऊर्जा बर्बाद होने से रोक सकें। हमारे विचार और हमारे शब्द एक-दूसरे से बड़ी बारीकी से जुड़े हैं. अतः जो हम सोचेंगे अंततः वही हमारे मुख से निकलेगा। इसलिए यदि हम अपने विचारों पर पहले से ही चुस्त नियंत्रण बनाये रखेंगे, तो अपने जीवन में आने वाली अनेक समस्याओं से खुद को बचा पायेंगे। हमें इतना अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि जैसे हमारे विचार होंगे, वैसी हमारी चेतना होगी और जैसी हमारी चेतना होगी, वैसा हमारा जीवन बनेगा।

हिन्दी भाषा में पत्राचार



श्री मनोज कुमार
निजी सहायक
रणनीतिक योजना प्रभाग

हिंदी भाषा विकास की पूरी प्रक्रिया हिंदी पत्रकारिता के भाषा विश्लेषण के माध्यम से समझी जा सकती है। इस विकास में भाषा के प्रति जागरूक लोगों ने अपना अपना योगदान हिंदी को दिया है। ये हिंदी भाषी भी थे और हिंदीतर भाषा-भाषी भी। इन सभी ने अखिल भारतीय स्तर पर बोली और समझी जाने वाली भाषा हिंदी के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित किया। इनके लिए हिंदी और राष्ट्रीयता एक दूसरे के पर्याय थे। क्योंकि ये पत्रकार भिन्न भाषा परिवेशों के थे इसलिए हिंदी भाषा शैली वैविध्य अपनी चरम अवस्था में दिखाई देता है।

केंद्रीय या प्रांतीय सरकारें कार्य-संचालन की सुविधा के लिए अनेक कार्यालयों की व्यवस्था करती हैं। ये कार्यालय देश के एक कोने से दूसरे कोने तक फैले रहते हैं। उनका सम्बन्ध पत्रों द्वारा स्थापित होता है। सरकारी कार्यालयों में सबसे अधिक प्रयोग पत्राचार से ही होता है। पत्र सरकारी कार्यालयों में उनकी कार्य-पध्दति एवं सम्प्रेषण की रीढ़ की हड्डी होती है। "जब एक सरकार दूसरी राज्य सरकार को अर्थात भारत सरकार राज्य सरकार को, एक राज्य सरकार दूसरी राज्य सरकार को, अपने से सम्बन्ध या अपने अधीनस्थ कार्यालयों एवं विभागों, सरकारी संगठनों, संस्थाओं, बैंकों, कर्मचारी संघों, तथा सामान्य जनता विभिन्न विषयों पर पत्र लिखती अथवा उत्तर देती हैं तब उन्हें सरकारी या प्रशासकीय पत्र कहते है। सरकार द्वारा विदेशी सरकारों, उनके राजदूतावासों, स्वदेश स्थित कार्यालयों तथा अन्तर्राष्टीय संगठनों को लिखे गये पत्र भी इसी वर्ग में आते है। पत्र के कच्चे रूप को आलेखन या मसौदा तैयार करना कहा जाता है। जिसे कार्यालयीन सहायक एवं वरिष्ठ लिपिक तैयार करते है। प्रारूप को फिर से पढ़कर अपने उच्च अधिकारी के पास अनुमोदन के लिए भेजा जाता है। अधिकारी संशोधित कर टंकित या साइक्लोस्टाइल कर कार्यालय को प्रेषित करते है। तद्नुसार पत्राचार के अलग-अलग रूप निश्चित किए गये है। कार्यालयों में कभी साधारण पत्र, तत्काल, अर्दध्-सरकारी, तार देना होता है। यही नहीं कार्यालय-ज्ञापन द्वारा सूचना देने, अनौपचारिक टिप्पणी मंत्रालयों में छुट्टी के घोषणा, प्रेस नोट प्रसारित अत: कार्य, महत्व और अवसर की आवश्यकतानुसार विभिन्न रूपों के पत्रों का प्रयोग किया जाता है।

वर्तमान दौर में तकनीकी के आगमन के बाद जनसंचार के विभिन्न माध्यमों में हिन्दी का वर्चस्व तेजी से बढ़ने लगा है। जनसंचार के इन माध्यमों की हिन्दी सामान्य बोलचाल के निकट होती है। लेकिन मानकता की दृष्टि से वह भी निर्धारित मापदण्ड पर सही नहीं ठहरती। इसका कारण है कि जनसंचार का मुख्य उद्दश्य समाज के विशाल वर्ग तक सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों की सूचना को सम्प्रेषण करना है और भारत जैसे विशाल राष्ट्र में सरल और सुबोध भाषा के द्वारा ही विशाल जनसमुदाय तक अभिव्यक्ति सम्भव हो सकती है। इसीलिए जनसंचार के माध्यमों में हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं के शब्दों का व्यावहारिक प्रयोग उसे मानकता से परे करता है।

इन रूपों के अतिरिक्त व्यापार, वाणिज्य, विधि, खेल आदि अनेक क्षेत्रों में हिन्दी के रूप पारिभाषिक के साथ-साथ स्वतंत्र भी थे। इन क्षेत्रों की अपनी विशिष्ट भाषा के कारण इसका प्रयोग सीमित रूप में ही किया जा सकता था। इन क्षेत्रों से सम्बन्धित लोगों में ही इस भाषा के अर्थ को समझने की क्षमता होती है। लेकिन इन क्षेत्रों में हिन्दी का मानकीकृत रूप ही स्वीकार्य होता है।

आज कल लोग हिन्दी भाषा को तुच्छ समझते हैं और अंग्रेज़ी भाषा को अधिक महत्व देते हैं जिस कारण हिन्दी भाषा सिर्फ नाम की रह गयी है। आज कल जिसे भी देखो सब अंग्रेज़ी को अपना रहे हैं यहाँ तक माँ बाप भी अपने बच्चे को अंग्रेज़ी भाषा मैं बात करना सीखा रहे है और स्कूल में भी बच्चे वही सीख रहे हैं हिन्दी सिर्फ नाम के लिए पढ़ रहे हैं। हिन्दी हमारी जननी है किन्तु माँ बाप अपने बच्चे को आगे बढ़ाने के लिए उसे अंग्रेज़ी सीखाते हैं ताकि उनका बच्चा इस दुनिया की भीड़ में पीछे ना रह जाए। यहाँ सब आगे बढ़ने की होड मैं लगे हैं और अपनी मातृभाषा को पीछे छोड़ दिये हैं। आप सब आज के इस युग में देख ही रहे हैं कि लोग कैसे इंग्लिश की पीछे पागल हैं उन्हे लगता है कुछ आए न आए लेकिन इंग्लिश जरूर आनी चाहिए और ऐसा उनके माँ बाप भी समझते हैं । मुझे समझ नहीं आता अंग्रेज़ी बोलने से कोई आपसे बड़ा तो नहीं हो जाता। सही मायने में कहा जाए तो जिसे अनुभव है वो बड़ा है जिसे काम-काज की जानकारी हो कि काम कैसे किया जाता है और बात कैसे की जानी चाहिए। इंग्लिश आना और ना आना स्वाभाविक है। आप हिन्दी में काम कीजिये जिसकी आपको पूरी जानकारी है उसमें आप आगे ही बढ़ेंगे और हिन्दी का वर्चस्व कायम करेंगे इसलिए हिन्दी भाषी बनिए ना कि अंग्रेज़ी के गुलाम। इंग्लिश आना अच्छी बात है लेकिन उसका दिखावा करना बुरी बात है। आप हिंदुस्तान में रह कर हिन्दी नहीं बोलते तो आप हिन्दी की बेइज़्ज़ती कर रहे हैं। इसलिए हिन्दी भाषी बनिए और अपने देश पर गर्व करिए कि आप हिंदुस्तान मे जन्में हैं।

हिंदी भाषा को भारतीय जनता तथा संपूर्ण मानवता के लिए बहुत बड़ा उत्तरदायित्व संभालना है –

सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या

स्वतंत्रता दिवस ,,,,,,,, अपना तिरंगा इंद्रधनुष सा आज तिरंगा



श्री शिवेन्दु प्रकाश
वरिष्ठ सचिवालय सहायक
प्राधिकरण प्रभाग

धरती अंबर सागर पर्वत
खुशियां स्वप्निल बिखराये।

एक- एक हाथों से अब ये
पुण्य तिरंगा फहराये।।

कई करोड़ों के हृदयों में
जब भी ये लहराता है।

भारत की हिम्मत का लोहा
सबसे ये मनवाता है।।

देशभक्त वीरों के मन में
आज तिरंगा इतराये।।

एक- एक हाथों में अब ये.....
नाम पिंगली वैंकैया थे
जिनसे ये पहचान मिली।

भारत के जनगण को इससे
मित्रों नई उड़ान मिली।।

इंद्रधनुष सा आज तिरंगा
खुशियों से अब लहराये।।

एक - एक हाथों में अब ये.....
सबसे ऊंचा रहे तिरंगा
ये कोशिश हरदम होगी।

भारतमाता रहे प्रफुल्लित
यही बात अनुपम होगी।।

यही तिरंगा पूर्ण शक्ति से
विश्वगुरु तब कहलाये।।
एक - एक हाथों में अब ये.....
विश्व पृथ्वी दिवस 2025

" हमारी शक्ति - हमारा ब्रह्मांड " थीम है।

सबसे ये संवाद करें।
कल की चिंता आज करें।।

अगर बचानी है पृथ्वी,
तन-मन दोनों साफ करें।।

पहले पृथ्वी स्वच्छ रखें,
काम सभी हम बाद करें।।

एक अकेला नाकाफी,
बात यहां सब साथ करें।।

पृथ्वी नहीं प्रदूषित हो,
काम यही शत बार करें।।

वृक्षारोपण करके हम,
स्वप्न सभी साकार करें।।

पृथ्वी संग ब्रह्मांड यहां,
मानवता आबाद करें।।

पावन पृथ्वी की रक्षा,
मिलजुलकर हम आज करें।।

कौन बचायेगा पृथ्वी,
इसमें नहीं विवाद करें।।

अपना कर्म समझ करके,
हर बाधा हम पार करें।।

हर दिन पृथ्वी की चिंता,
दोस्त मित्र सब यार करें।।

इस पृथ्वी का संरक्षण,
रोज करें, हर बार करें।।

स्वतंत्रता दिवस

घर-घर में तिरंगा फहरायें
हम गीत - तिरंगा दोहरायें
ये बात सुनिश्चित करना है।

घर-घर में तिरंगा फहरायें
ये बात सुनिश्चित करना है।।

भारत की पावन माटी पर
भारतमाता की जय गूंजें।

हाथों में आज तिरंगा ले
वंदे भारत की लय गूंजें।।

इस पावन पुण्य तिरंगे की
सब ओर यहां जय-जय गूंजें।।

सब तीनों रंग में रंग जायें,
ये बात सुनिश्चित करना है।।
घर-घर में तिरंगा फहरायें.....

हम वंदेमातरम् की धुन पर
उद्घोष करें इस भारत का।

समवेत स्वरों में गान उठे
जयगान उठे इस भारत का।।

हर हृदय तिरंगा सज जाये
जय-जय बोलें इस भारत का।।

पहले समझें फिर समझायें,
ये बात सुनिश्चित करना है।।
घर-घर में तिरंगा फहरायें.....

सिर कटा दिये फांसी झूले
संकल्प धनी अभिमानी थे।

परवाह नहीं की प्राणों की
अदभुत अनुपम सेनानी थे।।

हम क्रांति भावना याद रखें
कैसे-कैसे बलिदानी थे।।

गाथायें सबको बतलायें,
ये बात सुनिश्चित करना है।।
घर-घर में तिरंगा फहरायें.....

कब बड़े हुए हम !



अनीता रावत
सहायक सह डाटा एंट्री ऑपरेटर
वाणिज्यिक प्रभाग

कब बड़े हुए हम !
जब माँ ने लोरी सुनाना छोड़ दिया, या
जब पिता ने कंधे पर घुमाना छोड़ दिया, तब बड़े हुए हम।

जब डॉक्टर या इंजीनियर बनने के सपने टूट गए, या
जब सपनों के लिफाफे में एक कोरा पन्ना छोड़ दिया, तब बड़े हुए हम।

जब पिता ने जेबखर्च देना छोड़ दिया, या
जब माँ ने हाथों से हलवा खिलाना छोड़ दिया, तब बड़े हुए हम।

जब पिता का आँगन छोड़ दिया, या
जब माँ का दामन छोड़ दिया, तब बड़े हुए हम।

जब लड्डू के लिए भाई - बहन से लड़ना छोड़ दिया, या
जब कद्दू देख कर भी चुपचाप खा लिया, तब बड़े हुए हम।

जब बहन की शादी की सारी तैयारियां स्वयं की, या
जब नौ से पाँच वाली नौकरी में तनाव व अवसाद को न्योता दिया, तब बड़े हुए हम।

जब माँ ने बीमार पड़ने पर नजर उतारना छोड़ दिया, या
बाबा ने हमारी छोटी-छोटी ख्वाहिशों को भुला दिया, तब बड़े हुए हम।

जब श्रवण कुमार की तरह पितृभक्त बन गए, या
जब अंगराज की तरह सख्त बन गए, तब बड़े हुए हम।

जब माता - पिता को ईश्वार मान लिया, या
जब उनके सपनों को पूरा करना अपना उद्देश्य मान लिया, तब बड़े हुए हम।

जब दोस्तों के साथ पकड़म - पकड़ाई खेलना छोड़ दिया, या
जब 16-16 घंटे किताबों में घुस कर भी माँ - बाप के सपने तोड़ दिए, तब बड़े हुए हम।

मेरी राय में,
जब अपनी ख्वाहिशों को दबा कर,
माँ - बाप के अधूरे सपनों को एड़ी - चोटी जोर लगा कर पूरा करने पर,
उनकी तारीफ सुन कर खुश होने वाला वह नन्हा सा बच्चा,
घुट - घुट कर मर गया हो अंदर ही अंदर,
जी हां, तब बड़े हुए हम !

ऊर्जा का संकल्प – पीएनजीआरबी



आरती तिवारी
डीईओ
सीबीजी प्रभाग

देश की प्रगति की राह जगाता,
ऊर्जा का दीपक हर घर तक लाता।

सुरक्षा, सेवा और विश्वास का नाम,
पीएनजीआरबी करता राष्ट्र का सम्मान।

हर पाइपलाइन में सपनों की डोर,
हर कदम बढ़ाए विकास की ओर।

साफ ऊर्जा का संदेश सुनाता,
भविष्य को हरित और उज्ज्वल बनाता।

पारदर्शिता, नियम और अनुशासन का मान,
जन-जन को देता सशक्त पहचान।

देश की धड़कन, प्रगति की रेखा,
पीएनजीआरबी है भारत की शक्ति का लेखा।

एक सुबह ऐसी भी हो



सुश्री पारुल
समन्वय विभाग
डाटा एंट्री ऑपरेटर

एक सुबह ऐसी भी हो,
जहाँ खामोशी बोले, और मन सुने।

जहाँ सुबह मुस्काए चुपचाप,
और हवाए गीत बुने।

कोई जल्दी न हो, कोई जाने की,
कोई घड़ी न हो, समय बताने की।

बस ज़िंदगी हो दो पल कहानी,
जिसे जी ले हम पूरे यकीन से, बेमानी
चाय की प्याली में खुशबू हो बचपन की,
आँगन में दोड़े परछाई कल की।

कोई किताब हो जो दिल से पड़ी जाए,
और कोई याद हो, जो फिर से जिए जाए।

एक सुबह ऐसी भी हो,
जहाँ थकावट न हो, न कोई बोझ हो।

साँसे खूब से मिलें, हर पल
और आत्मा गुनगुनाए हल्के सुर में।

जीवन भी एक भीड़ से दूर,
एक क्षण बस अपनापन सा हो।

शांति की चादर ओढ़े हुए,
एक सुबह ऐसी भी हो।

आपातकालीन प्रतिक्रिया और मूल कारण विश्लेषण – पीएनजीआरबी की ईआरडीएमपी विनियमन के अंतर्गत



सुश्री आदित्य पी.
सहायक परामर्शदाता
तकनीकी प्रभाग

1. परिचय: पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड ने, ईआरडीएमपी विनियमन 2010 के माध्यम से एक सुव्यवस्थित घटना प्रबंधन रूपरेखा स्थापित की है। इस विनियमन का उद्देश्य जीवन, पर्यावरण और संपत्तियों की रक्षा के लिए त्वरित घटना सूचना, संगठित जांच, और समयबद्ध सुधारात्मक उपायों को सुनिश्चित करना है।

2. ERDAMP 2010 के अंतर्गत घटनाएँ तीन श्रेणियों में विभाजित हैं:

- माइनर इंसिडेंट्स
- नियर मिस
- मेजर इंसिडेंट्स
- सभी का विवरण Schedule-VI में निर्धारित प्रारूप में बनाए रखना अनिवार्य है, जिससे पारदर्शिता और नियामकीय निगरानी सुनिश्चित हो सके। मेजर इंसिडेंट्स अधिक गंभीर मानी जाती हैं और इनके लिए 48 घंटे के भीतर Schedule-VI रिपोर्ट जमा करनी होती है। साथ ही, FIR को घटना के 4 घंटे के भीतर PNGRB को टेलीफोन, ईमेल या एसएमएस के माध्यम से प्रेषित करना होता है।

सूचना प्रेषित होने के पश्चात्, सम्बंधित एन्टीटीइज को 30 दिनों के भीतर एक विस्तृत जांच रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होती है, जिसमें निम्न शामिल हों:

- घटना के मूल कारण
- उठाए गए सुधारात्मक उपाय
- जोखिमों को दूर करने के लिए समयबद्ध उपाय

3. मेजर इंसिडेंट्स मूल कारण विश्लेषण घटना जांच रिपोर्टों के आंकलन से निम्न दोष उजागर होते हैं:

- कार्य अनुमति प्रणाली का उल्लंघन – work permit की अवहेलना।
- अपर्याप्त पर्यवेक्षण – कमजोर निगरानी से जोखिम अस्पष्ट होते हैं।

- (SOPs) का विचलन – निर्धारित प्रक्रियाओं का पालन न करना।
- दक्षता अंतर / अपर्याप्त प्रशिक्षण – हाज़र्ड जागरूकता और कौशल में कमी।
- बाहरी ठेकेदारों द्वारा पाइपलाइन या प्रतिष्ठानों को क्षति पहुँचाना **(थर्ड पार्टी इंटरफेरेंस)**
- उपकरण असफलताएँ – यांत्रिक विफलता या घटक खराबी।
- अनुचित उपकरण या डिजाइन दोष – गैर-मानक उपकरण या अंतर्निहित डिजाइन त्रुटियाँ।
- व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (PPE) का प्रयोग न करना या अनुचित प्रयोग - चोट की गंभीरता में वृद्धि।
- खराब रखरखाव प्रथाएँ – अनिवार्य रुक-रोक रखरखाव में देरी।
- प्राकृतिक कारणों से मृत्यु

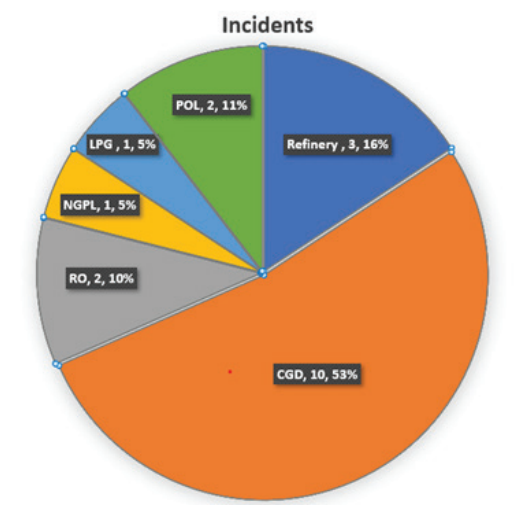
इन कारणों की पुनरावृत्ति यह दर्शाती है कि प्रक्रिया सुरक्षा, दक्षता पुष्टिकरण, और कड़ाई से पर्यवेक्षण की सख्ती से आवश्यकता है।

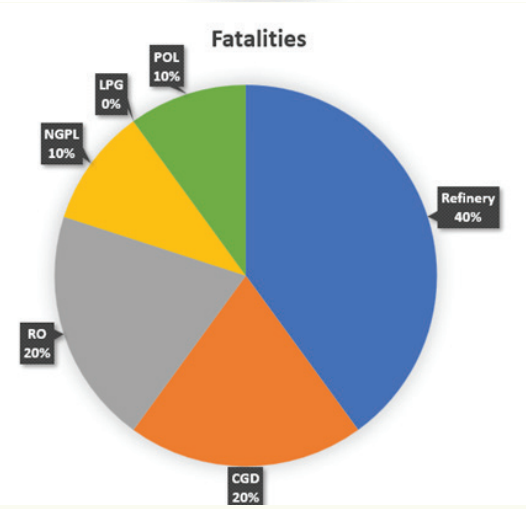
4. क्षेत्रीय रुझान: घटनाएँ एवं मृत्यु दर

वित्तीय वर्ष 2023–24:

- घटनाएँ: CGD 53%, रिफाइनरी 16%, POL 11%, रिटेल आउटलेट 10%, NGPL 5%, LPG 5%।
- मृत्यु दर: रिफाइनरी 40%, CGD 20%, रिटेल आउटलेट 20%, POL/NGPL 10% प्रत्येक, LPG में शून्य।

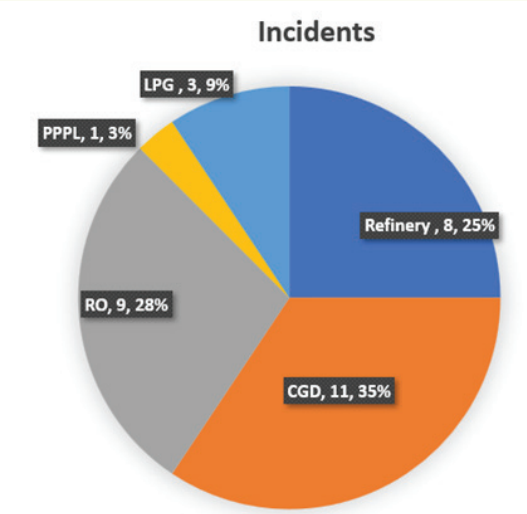
यह दर्शाता है कि CGD में घटनाएँ अधिक होती हैं, जबकि रिफाइनरियों में घटनाएँ कम लेकिन घातक होती हैं।

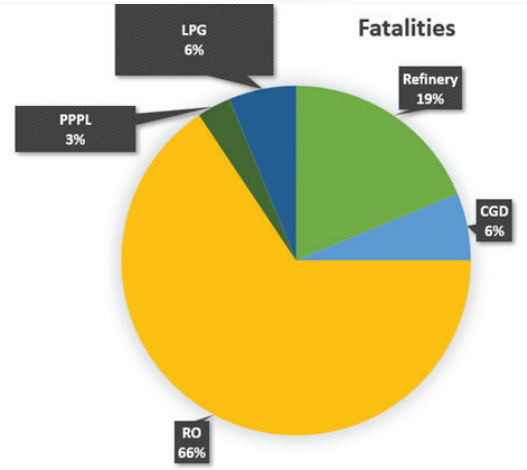




वित्तीय वर्ष 2024–25:

- घटनाएँ: CGD 37%, रिटेल आउटलेट 27%, रिफाइनरी 24%, LPG 9%, PPPL 3%।
- मृत्यु दर: रिटेल आउटलेट 58%, रिफाइनरी 17%, CGD 17%, LPG 5%, PPPL 3%।





इस परिवर्तन से पता चलता है कि रिटेल आउटलेट्स में दुर्घटनाएँ कम होने के बावजूद मृत्यु दर अधिक है, इसलिए अंतिम-मील उपभोक्ता इंटरफेस पर सुरक्षा उपायों को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।

5. मानवीय कारकों का योगदान लगभग 86% घटनाएँ मानवीय कारकों और संचालन संबंधी त्रुटियों के कारण होती हैं, जैसे कि परमिट उल्लंघन, SOP विचलन, प्रशिक्षण की कमी, PPE का प्रयोग न करना, और कमजोर पर्यवेक्षण। यह स्पष्ट करता है कि ये घटनाएँ पूर्णतः रोकी जा सकती हैं यदि दक्षता वृद्धि, सख्त सुरक्षा प्रबंधन प्रणालियों का पालन, और पर्यवेक्षण नियंत्रण सुनिश्चित किया जाए।

6. निष्कर्ष एवं सिफारिशें हाल के रुझानों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि CGD संचालन में घटनाएँ अधिक हैं, जबकि रिफाइनरी और रिटेल आउटलेट्स में मृत्यु-दर अधिक है, जो हाज़र्ड गंभीरता में भिन्नता को दर्शाता है। मानव-जनित त्रुटियों की उच्च दर दर्शाती है कि सुरक्षा संस्कृति को सुदृढ़ करने, SOP का कड़ाई से पालन करने, तथा मानव विश्वसनीयता प्रबंधन को सुदृढ़ करने की अति आवश्यक्ता है।

आगे चलकर, ERDMP विनियमन के प्रभावी कार्यान्वयन, उन्नत प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, पूर्वानुमानित जोखिम मॉडलिंग, और नेतृत्व-प्ररणित सुरक्षा संस्कृति के माध्यम से दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं में उल्लेखनीय कमी लायी जा सकती है। इससे मानव जीवन, महत्वपूर्ण अवसंरचना, और पर्यावरणीय स्थिरता की रक्षा सुनिश्चित होगी।

यदि भारतीय लोग कला, संस्कृति और राजनीति में एक होना चाहते हैं, तो उन्हें हिंदी को अपनाना होगा।

—सी. चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

वेब डेवलपर्स के बारे में 10 मज़ेदार और रोचक तथ्य



श्री अजीत कुमार सिंह पाल
सॉफ्टवेयर डेवलपर
सूचना प्रौद्योगिकी प्रभाग

1. **कोड उनका कैनवस है** – वेब डेवलपर्स विचारों को आपकी स्क्रीन पर इंटरैक्टिव अनुभव में बदल देते हैं।
2. **वे कई भाषाएँ बोलते हैं** – फ्रेंच या स्पैनिश नहीं, बल्कि HTML, CSS, JavaScript... और कभी-कभी Python, PHP, या Java।
3. **वे दो दुनियाओं में काम करते हैं** – फ्रंट-एंड साइट का लुक और फील बनाता है, बैक-एंड लॉजिक और डेटाबेस का जादू करता है।
4. **Google उनका सबसे अच्छा दोस्त है** – अनुभवी डेवलपर भी रोज़ाना समाधान, सिंटैक्स और आइडिया के लिए गूगल करते हैं।
5. **वे हमेशा 'अपडेट मोड' में रहते हैं** – वेब तकनीक इतनी तेज़ बदलती है कि सीखना कभी नहीं रुकता।
6. **पेज स्पीड उनकी दीवानगी है** – धीमी वेबसाइट चलती नहीं; 1 सेकंड की देरी भी विज़िटर खो सकती है।
7. **वे मोबाइल-फ़र्स्ट सोचते हैं** – आधे से ज़्यादा वेब ट्रैफ़िक मोबाइल से आता है, इसलिए रिस्पॉन्सिव डिज़ाइन ज़रूरी है।
8. **डीबगिंग जासूसी जैसा है** – हर बग की एक कहानी होती है, और उसे सुलझाना डेवलपर का काम है।
9. **एक्सेसिबिलिटी उनके डीएनए में है** – अच्छे डेवलपर्स वेबसाइट को सभी के लिए, यहाँ तक कि दिव्यांग व्यक्तियों के लिए भी, सुलभ बनाते हैं।
10. **वे अदृश्य चीज़ें बनाते हैं** – हर स्मूद क्लिक, तेज़ लोड और सुरक्षित फ़ॉर्म के पीछे डेवलपर की मेहनत होती है।

महिला सशक्तिकरण



सुश्री हर्षिता चौहान
सॉफ्टवेयर डेवलपर
सूचना प्रौद्योगिकी प्रभाग

प्रगति को शक्ति देना, बदलाव को प्रेरित करना

महिला सशक्तिकरण सिर्फ़ एक शब्द नहीं, बल्कि समानता, गरिमा और सभी के लिए अवसरों की ओर बढ़ने का एक आंदोलन है। इसका मतलब है महिलाओं को निर्णय लेने, अपने सपनों का पीछा करने और भविष्य बनाने की स्वतंत्रता और संसाधन देना।**महिला सशक्तिकरण क्यों ज़रूरी है**

1. **सभी के लिए समानता** – सशक्तिकरण सुनिश्चित करता है कि महिलाओं को शिक्षा, नौकरी और नेतृत्व में बराबरी का अवसर मिले।
2. **आर्थिक विकास** – शोध बताते हैं कि जब महिलाएं अर्थव्यवस्था में बराबर भाग लेती हैं, तो GDP में महत्वपूर्ण बढ़ोतरी होती है।
3. **बेहतर निर्णय लेने की क्षमता** – विविध नेतृत्व, जिसमें महिलाएं शामिल हों, अधिक रचनात्मक और प्रभावी समाधान देता है।
4. **रूढ़ियों को तोड़ना** – सशक्त महिलाएं पुरानी सोच को चुनौती देती हैं और अगली पीढ़ी को प्रेरित करती हैं।
5. **मज़बूत समुदाय** – जब महिलाएं तरक्की करती हैं, तो परिवार और समाज भी प्रगति करते हैं।

महिलाओं को सशक्त करने के तरीके

- शिक्षा और कौशल प्रशिक्षण तक समान पहुंच प्रदान करना।
- महिला उद्यमियों और पेशेवरों को सहयोग देना।
- कार्यस्थल पर समानता और भेदभाव के लिए शून्य सहनशीलता अपनाना।
- हर क्षेत्र में महिला नेताओं को बढ़ावा देना।
- छोटी लड़कियों को बड़े सपने देखने और खुद पर विश्वास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

"जब महिलाएं एक-दूसरे का साथ देती हैं, तो अद्भुत चीज़ें होती हैं।"

बुखार था शायद उसको....



श्री अनिल वर्मा
प्रणाली विश्लेषक
सूचना प्रौद्योगिकी प्रभाग

सोफे पे पड़ा मैं हाथ में रिमोट लिए इतवार मना रहा था, कि तभी दरवाजे की घंटी बजी।

12-13 साल की लड़की परेशान सा चेहरा लिए खड़ी थी, कुछ पूछता उससे पहले ही बोल पड़ी "माँ आज नहीं आयेगी, बुखार है शायद उसको, आज मैं झाँडू-पोछा-बर्तन कर देती हूँ?"

मैंने मना किया कि जाओ, अपनी माँ का ख्याल रखो, काम हो जायेगा।

जब जाने लगी तब डरी सी आवाज में रूक कर बोली "काम करवा लो साहब वरना माँ डाटेगी।"

मैंने मना किया तो सीढ़ियाँ उतरने लगी और मायूसी से बोली "साहब पैसे तो नही काटोगे?"

मैंने मुस्कुरा कर कह दिया, नही बेटा।

कुछ चीज़ें, सिर्फ एहसास नहीं कराती आपको, अंदर से हिला देती हैं।

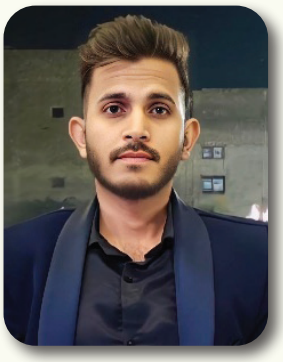
वो बच्ची आज, ना जाने कितने घरों में जाकर पूछेगी, ना जाने कितने घरों का काम करेगी?

एक दिन, एक दिन से शायद आपको और मुझे फर्क नही पड़ता, पर कुछ लोगों को, कुछ लोगों की जिदगी इधर से उधर हो जाती हैं।

बुखार था शायद उसको.....

देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता स्वयं सिद्ध है-
आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

आओ सुनाऊ प्यार की एक कहानी.....



श्री शुभम
डीईओ
सूचना प्रौद्योगिकी प्रभाग

बुजुर्ग पिताजी जिद कर रहे थे कि, उनकी चारपाई बाहर बरामदे में डाल दी जाये..

बेटा परेशान था...

बहू बड़बड़ा रही थी- कोई बुजुर्गों को अलग कमरा नहीं देता। हमने दूसरी मंजिल पर कमरा दिया, AC, TV, FRIDGE सब सुविधाएं हैं, नौकरानी भी दे रखी है। पता नहीं, सत्तर की उम्र में सठिया गए हैं..?

पिता कमजोर और बीमार हैं....

जिद कर रहे हैं, तो उनकी चारपाई गैलरी में डलवा ही देता हूँ। राजू ने सोचा। (पिता की इच्छा पूरी करना उसका स्वभाव था।)

अब पिता की एक चारपाई बरामदे में भी आ गई थी।

कुछ देर लॉन में टहलते लॉन में नाती - पोतों से खेलते, बातें करते, हंसते , बोलते और मुस्कुराते।

कभी-कभी बेटे से मनपसंद खाने की चीजें भी लाने की फरमाईश करते।

खुद खाते, बहू - बेटे और बच्चों को भी खिलाते ....

धीरे-धीरे उनका स्वास्थ्य अच्छा होने लगा था।....

हर समय चारपाई पर पड़े रहने वाले पिता।

अब टहलते-टहलते गेट तक पहुंच जाते ....

दादा ! मेरी बाल फेंको। गेट में प्रवेश करते हुए राजू ने अपने पाँच वर्षीय बेटे की आवाज सुनी,

तो बेटा अपने बेटे को डांटने लगा...

अंशुल बाबा बुजुर्ग हैं, उन्हें ऐसे कामों के लिए मत बोला कारों।

पापा ! दादा रोज हमारी बॉल उठाकर फेंकते हैं....अंशुल भोलेपन से बोला....

क्या... "राजू ने आश्चर्य से पिता की तरफ देखा ?

पिता ! हां बेटा तुमने ऊपर वाले कमरे में सुविधाएं तो बहुत दी थीं।

लेकिन अपनों का साथ नहीं था। तुम लोगों से बातें नहीं हो पाती थी।

जब से गैलरी मे चारपाई पड़ी है, निकलते बैठते तुम लोगों से बातें हो जाती है।....

शाम को अंशुल-पाशी का साथ मिल जाता है....

पिता कह रहे थे और राजू सोच रहा था....

बुजुर्गों को भौतिक सुख सुविधाओं, से ज्यादा अपनों के साथ की जरूरत होती है।....

बुजुर्गों का सम्मान करें ।

यह वो पेड़ हैं, जो थोड़े कड़वे है, लेकिन इनके फल बहुत मीठे है, इनकी छांव का कोई मुक़ाबला नहीं ।

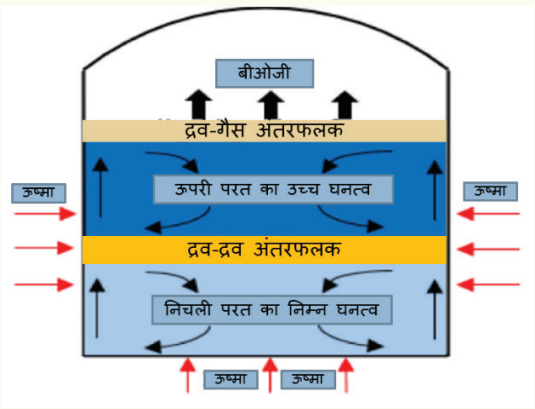
बॉयल-ऑफ गैस (BOG): प्रबंधन और विनियामक दृष्टिकोण



श्री अनुज कुमार सिंह
सहायक परामर्शदाता
तकनीकी प्रभाग

परिचय

तरलीकृत प्राकृतिक गैस (LNG) भारत की ऊर्जा संरचना में स्वच्छ और व्यवहार्य विकल्प के रूप में उभर रही है। किंतु, इसके क्रायोजेनिक स्वरूप के कारण बॉयल-ऑफ गैस (BOG) का निर्माण अनिवार्य है। BOG वह वाष्पित गैस है जो एलएनजी टैंकों, पाइपलाइनों अथवा परिवहन साधनों में ऊष्मा प्रवेश के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती है। यह परिघटना ऊर्जा अपव्यय के साथ-साथ परिचालन सुरक्षा, पर्यावरणीय दायित्व और आर्थिक चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करती है। अंतरराष्ट्रीय अनुभव से यह स्पष्ट है कि बड़े ऑनशोर टैंकों में बॉयल-ऑफ दर सामान्यतः 0.05–0.15 % प्रतिशत प्रतिदिन रहती है। इसके विपरीत, खुदरा स्तर पर संचालित एलएनजी स्टेशनों में मांग असंतुलन, निष्क्रिय अवधि और परिचालन व्यवधानों के कारण यह दर 1-4% प्रतिशत प्रतिदिन तक पहुँच सकती है। यह अंतर इंगित करता है कि खुदरा स्तर पर BOG प्रबंधन हेतु विशेष प्रयास आवश्यक हैं।



मुख्य स्रोत

BOG निर्माण के विभिन्न स्रोत हैं। एलएनजी भंडारण टैंकों में ऊष्मा प्रवेश एवं द्रव-स्तरीकरण के कारण वाष्प उत्पन्न होती है। क्रायोजेनिक पाइपलाइनों में ऊष्मा रिसाव से गैस का निर्माण होता है। सड़क टैंकरों में परिवहन के दौरान बाह्य ताप प्रभाव भी BOG की मात्रा को बढ़ाता है। इसके अतिरिक्त, डिस्पेंसिंग और रिफ्यूलिंग प्रणालियों में एलएनजी स्थानांतरण के समय वाष्प विस्थापन से भी BOG उत्पन्न होती है।

उपयोग की संभावनाएँ

BOG को उपयुक्त प्रबंधन द्वारा एक मूल्यवान संसाधन के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है। इसे पुनः द्रवीकृत कर भंडारण टैंकों में वापस डाला जा सकता है अथवा विद्युत उत्पादन हेतु स्टेशन पर ही उपयोग किया जा सकता है। निकटवर्ती औद्योगिक उपभोक्ताओं या सिटी गैस वितरण(CGD) नेटवर्क को इसकी आपूर्ति अतिरिक्त राजस्व का साधन बन सकती है। इसके साथ ही, BOG को संपीडित कर सीएनजी के रूप में भी बाजार में उपलब्ध कराया जा सकता है।

प्रबंधन संबंधी चुनौतियाँ

खुदरा स्तर पर छोटे टैंकों का उच्च सतह-क्षेत्र-से-आयतन अनुपात, अनियमित मांग चक्र और लंबी निष्क्रिय अवधि BOG निर्माण को बढ़ावा देते हैं। इसके अतिरिक्त, उन्नत प्रबंधन तकनीकों की उच्च लागत और लगातार दबाव वृद्धि से उत्पन्न सुरक्षा जोखिम प्रमुख चुनौतियों के रूप में सामने आते हैं। इन परिस्थितियों में संतुलित और आर्थिक रूप से व्यवहार्य प्रबंधन रणनीतियों की आवश्यकता है।

एलएनजी खुदरा स्टेशनों से प्राप्त अवलोकनों से यह स्पष्ट हुआ है कि समान डिजाइन वाले स्टेशनों में भी मांग चक्र भिन्न होने पर बॉयल-ऑफ गैस (BOG) की मात्रा में उल्लेखनीय अंतर देखा गया है। मध्यम स्तर की डिस्पेंसिंग स्थितियों में BOG हानि प्रतिदिन 0.5 से 0.75 टन तक दर्ज की गई है। इसके विपरीत, कम या नगण्य डिस्पेंसिंग के दौरान BOG नुक़सान बढ़कर प्रतिदिन लगभग 1.2 टन तक पहुँच सकती हैं। इसी प्रकार के रुझान अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों में भी दर्ज किए गए हैं, जहाँ परिचालित स्टेशनों पर BOG हानि संग्रहीत एलएनजी की कुल मात्रा के लगभग 10 प्रतिशत तक पाई गई है।

प्रबंधन तकनीकें

BOG प्रबंधन हेतु विभिन्न तकनीकी विकल्प उपलब्ध हैं। वाष्प पुनर्प्राप्ति इकाइयों द्वारा गैस को संपीडित कर पुनः उपयोग में लाया जा सकता है। मिनी री-लिक्विफिकेशन प्रणालियों से वाष्प को पुनः तरल रूप में बदला जा सकता है। कुछ स्टेशनों में BOG आधारित जनरेटर अथवा माइक्रोटरबाइन द्वारा विद्युत उत्पादन किया जाता है, जिससे परिचालन लागत भी घटती है। इसके अतिरिक्त, BOG को सीधे उपभोक्ताओं या CGD नेटवर्क तक पहुँचाकर उपयोग में लाया जा सकता है। सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए दबाव नियंत्रण प्रणालियाँ और वेंटिंग तंत्र नियामकीय रूप से आवश्यक हैं।

नियामकीय दिशा-निर्देश

इस चुनौती के समाधान हेतु पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस नियामक बोर्ड (PNGRB) ने एक कार्यकारी समिति का गठन किया और विस्तृत विचार-विमर्श के पश्चात निम्नलिखित दिशा-निर्देश जारी किए।

i. BOG न्यूननीकरण—सभी संस्थाओं को ऐसी प्रक्रियाएँ और तकनीकें अपनानी होंगी, जिनसे लगातार BOG निर्माण में कमी लाई जा सके।

ii. कैप्टिव उपयोग—BOG को स्टेशन की आंतरिक आवश्यकताओं, जैसे विद्युत उत्पादन, हेतु प्रयुक्त किया जा सकेगा।

iii. CGD इकाई को विपणन—अधिशेष BOG को स्थानीय सिटी गैस वितरण (CGD) इकाई को बेचा जा सकता है, जिसकी कीमत PPAC द्वारा समय-समय पर अधिसूचित APM सीमा मूल्य से कम और HPHT सीमा मूल्य से अधिक नहीं होगी।

iv. फॉलबैक विकल्प—यदि एक माह के भीतर CGD इकाई के साथ समझौता नहीं हो पाता है, तो संबंधित संस्था PNGRB से नियामकीय प्रावधानों के अंतर्गत संपर्क कर सकती है।

ये दिशा-निर्देश छोटे पैमाने के LNG (SS LNG) स्टेशनों में BOG प्रबंधन हेतु एक स्पष्ट नियामकीय ढांचा उपलब्ध कराते हैं। न्यूननीकरण, कैप्टिव उपयोग और संरचित मूल्य-निर्धारण जैसे उपाय परिचालन दक्षता को बढ़ाने

और आर्थिक व्यवहार्यता सुनिश्चित करने में सहायक हैं। साथ ही, ये प्रावधान अपव्यय को रोकते हैं और सुरक्षा संबंधी जोखिमों को भी न्यूनतम करते हैं। इस प्रकार, PNGRB की पहल LNG खुदरा क्षेत्र में सतत, सुरक्षित और आर्थिक रूप से संतुलित प्रगति की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

निष्कर्ष

BOG प्रबंधन केवल तकनीकी आवश्यकता तक सीमित न रहकर ऊर्जा दक्षता, परिचालन सुरक्षा और जलवायु दायित्वों की पूर्ति का एक महत्त्वपूर्ण साधन है। यदि इसे व्यवस्थित ढंग से अपनाया जाए, तो यह न केवल ऊर्जा अपव्यय को रोकेगा बल्कि एक संभावित राजस्व स्रोत भी सिद्ध हो सकता है। भारत में गैस-आधारित अर्थव्यवस्था की दिशा में प्रगति को देखते हुए BOG प्रबंधन को नीति और परिचालन दोनों स्तरों पर प्राथमिकता दी जानी चाहिए, ताकि इसे एक दायित्व से परिवर्तित कर अवसर के रूप में उपयोग किया जा सके।

“निज भाषा उन्नति अहै, सब भाषा को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को सूल।।”

—भारतेंदु हरिश्चंद्र

हम भारतीय एक होकर समन्वित संस्कृति का विकास करना चाहते हैं, इसलिए सभी भारतीयों का परम कर्तव्य हो जाता है कि वह हिंदी को अपनी भाषा समझ कर अपनाएं।

—डॉ. भीमराव अंबेडकर

छत्रपति शिवाजी महाराज चरित्र और व्यक्तिव



श्री मारोती पंदलवाड
एमटीएस
प्रशासन प्रभाग

छत्रपति शिवाजी महाराज भारतीय इतिहास के महानतम और सबसे प्रेरणादायक योद्धाओं में से एक माने जाते हैं। उन्होंने न केवल एक शक्तिशाली मराठा साम्राज्य की नींव रखी, बल्कि भारतीय संस्कृति और स्वाभिमान की रक्षा भी की। उन्होंने हमारे लिए कई महान कार्य किए, जो आज भी प्रेरणा का स्रोत हैं। नीचे उनके मुख्य योगदान दिए गए हैं:-

1. स्वतंत्र मराठा साम्राज्य की स्थापना- शिवाजी महाराज ने मुगलों और विदेशी आक्रमणकारियों के खिलाफ संघर्ष करके स्वराज्य (स्व-शासन) की स्थापना की। 1674 में उन्होंने राज्याभिषेक करवाया और खुद को छत्रपति घोषित किया — यह भारतीयों के लिए गर्व की बात थी।

2. युद्ध-कौशल और रणनीति- उन्होंने गुरिल्ला युद्ध (छापामार रणनीति) की शुरुआत की, जिससे छोटी सेना से भी बड़े दुश्मनों को हराया जा सकता था। कई किलों को अपने नियंत्रण में लिया जैसे: राजगढ़, प्रतापगढ़, सिंधुदुर्ग, रायगढ़, तोरणा आदि।

3. किलों का निर्माण और विकास- शिवाजी ने समुद्री और पहाड़ी इलाकों में सुरक्षा के लिए किले बनवाए और उन्हें मजबूती से संरक्षित किया। उन्होंने नेवी (जलसेना) का भी गठन किया।

4. महिलाओं का सम्मान और सुरक्षा- महिलाओं की मर्यादा और सम्मान के रक्षक रहे। दुश्मन की स्त्रियों को भी बहन या माता का दर्जा देते थे। लूटपाट और बलात्कार जैसी घटनाओं को सख्त मना किया गया था।

5. प्रशासन और न्याय व्यवस्था- शिवाजी महाराज ने एक न्यायप्रिय और लोगों के हित में आधारित प्रशासन की स्थापना की। उन्होंने राजस्व वसूली, कर प्रणाली, कृषि सुधार आदि के लिए ठोस कदम उठाए।

6. प्रेरणा और स्वाभिमान- उन्होंने हमें सिखाया कि स्वाभिमान, धर्म, और देश के लिए लड़ना चाहिए। “स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है" — यह विचारधारा आगे चलकर बाल गंगाधर तिलक जैसे स्वतंत्रता सेनानियों ने भी अपनाई।

7. इतिहास, साहित्य और कला का संरक्षण- उन्होंने संस्कृत, मराठी और अन्य स्थानीय भाषाओं में साहित्य को बढ़ावा दिया। कई धार्मिक ग्रंथों और राजकीय दस्तावेजों की रचना करवाई।

कुल मिलाकर शिवाजी महाराज ने हमें स्वतंत्रता का मूल्य बताया, आत्म-सम्मान की भावना दी, धर्म और संस्कृति की रक्षा की एवं युद्ध कौशल और प्रशासन में श्रेष्ठता दिखाई।

देश की आत्मा को समझने के लिए उसकी भाषा को समझना चाहिए, मुझे जान पड़ा है कि आधुनिक भारत की आत्मा को समझने के लिए मुझे हिंदी भाषा और उसमें प्रकाशित होने वाले साहित्य को पढ़ना चाहिए। हिंदी वर्तमान भारत की समृद्धतम भाषा है, ऐसी भाषा को आधुनिक बहुभाषी राष्ट्र की सभी आवश्यकताओं को संतोषजनक ढंग से पूरा कर सकती है।

—डॉ. ऑडोनल स्मैकल

हिंदी ही एक ऐसी भाषा है, जिसमें सभी भारतीय भाषाओं का समन्वय है।

—राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन

पीएनजीआरबी के तकनीकी प्रभाग द्वारा किए गए "ऑडिट सुधार"



श्री वामन वसिष्ठ
सहायक परामर्शदाता
तकनीकी प्रभाग

तकनीकी प्रभाग के कई कार्यों मे से एक मुख्य दायित्व पीइनजीआरबी के सोलह तकनीकी विनियमों का मूल्यांकन करना है। इनमें आठ **टी4एस**, तीन **आईएमइस, ईआरदीएम्पी**, **टीपीसीऐ**, **प्रोसीजर फॉर डेवेलोपमेंट ऑफ़ टी4एस वीनियम** और दो **कैपेसिटी अस्सेस्मेंट** विनियम शामिल हैं। इनमें से चौदह विनियम सेक्टर/ इंस्टॉलेशन विशिष्ट बनाए गए हैं। इंस्टॉलेशन की सुरक्षा, अखंडता और आपातकालीन स्थिति की तैयारी सुनिश्चित करने के लिए तकनीकी प्रभाग थर्ड पार्टी एजेंसियों को इम्पैनल करता है। ये एजेंसियाँ पीइनजीआरबी टीपीसीऐ विनियम, 2015 में वर्णित मानदंडों के आधार पर इम्पैनल की जाती हैं।



वर्तमान में, 32 एजेंसियाँ विभिन्न क्षेत्रों में इम्पैनल हैं। प्रत्येक वर्ष पीइनजीआरबी की विनियमों के अनुपालन की निगरानी के तहत 600 से अधिक ऑडिट किए जाते हैं (वर्ष 2024–25 में 610, 2023–24 में 664) । इतने ऑडिट की संख्या और सुरक्षा मानकों के अनुपालन की महत्वपूर्णता को देखते हुए, ऑडिट प्रक्रिया का कड़ा और सशक्त होना अतिआवश्यवक है।

मौजूदा ऑडिट प्रक्रिया और हाई लेवल समिति (सुरक्षा ढांचे की समीक्षा) की रेकमेंडेशन्स के अनुरूप, तकनीकी प्रभाग ने मौजूदा ऑडिट प्रक्रियाओं में सुधार और सुदृढ़ीकरण के लिए निम्नलिखित प्रमुख सुधार लागू किए हैं:

i. ऑडिट मैन-डेज़ मैट्रिक्स: T4S, IMS और ERDMP ऑडिट के न्यूनतम मैन-डेज़ के लिए एक मानकीकृत मैट्रिक्स लागू किया गया है,

जो प्रतिष्ठान या नेटवर्क की क्षमता, आकार और जटिलता पर आधारित है। यह सुधार पर्याप्त ऑडिट कवरेज और गहराई सुनिश्चित करता है। संशोधित मैन-डेज़ मानदंड 01.01.2025 से प्रभावी की गयी हैं।

ii. प्रमुख ऑडिटर पद (देसिग्नेशन) मानदंड: ऑडिट की जिम्मेदारियों और तकनीकी गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिए प्रमुख ऑडिटरों के न्यूनतम पद मानदंड सभी क्षेत्रों के लिए परिभाषित और लागू किए गए हैं। यह पहल योग्य नेतृत्व के माध्यम से ऑडिट गुणवत्ता बढ़ाने के उद्देश्य से 01.01.2025 से प्रभावी की गयी है।

iii. ऑडिटरों के रेम्युनराशं के दिशा-निर्देश एवं TPIA चयन के लिए QCBS मानदंड: निरीक्षण एजेंसियों के चयन और ऑडिटरों के उचित पारिश्रमिक के लिए



स्पष्ट दिशा-निर्देश और गुणवत्ता-आधारित चुनकर मूल्य निर्धारण पद्धति लागू की गई है। ऑडिटरों को दिये जाने वाले रेम्युनराशं को सुव्यवस्थित करने और ऑडिट की गुणवत्ता सुधारने के लिए, ऑडिटर/प्रोफेशनल चार्जेज की निर्धारित करने की पद्धति बदलने, TPIAs के चयन के लिए QCBS-आधारित निविदा प्रक्रिया लागू करने आदि का फैसला लिया गया है।

iv. तकनीकी विशेषज्ञों की पैनल की स्थापना: विभिन्न क्षेत्रों में 18 अनुभवी तकनीकी विशेषज्ञों की एक पैनल गठित की गई है। वार्षिक रूप से प्राप्त भारी मात्रा में ऑडिट और निरीक्षण रिपोर्टों का विशेषज्ञ समीक्षा द्वारा मूल्यांकन करने के लिए ये विशेषज्ञ ऑडिट प्रक्रियाओं में त्रुटियों और कमियों का पता लगाकर PNGRB की निगरानी और नियामक क्षमता को सुदृढ़ बनाते हैं।

v. अन्य महत्वपूर्ण कदम: इन पहलों के अलावा, सभी टीपीआईए के लिए एक दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें पीएनजीआरबी के तकनीकी नियमों, मौजूदा तरीकों में खामियों और पीएनजीआरबी द्वारा शुरू किए गए सुधारों पर चर्चा की गई। यह कार्यशाला पीएनजीआरबी, टीपीआईए और ऑडिटर के बीच संचार को मजबूत करने और क्षमता बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। तकनीकी विशेषज्ञों के एक पैनल ने भी कार्यशाला में भाग लिया और अपनी बहुमूल्य अंतर्दृष्टि और सुझाव दिए। तकनीकी प्रभाग अपनी सभी कार्यशालाओं और संबंधित क्षमता निर्माण गतिविधियों में टीपीआईए, लेखा परीक्षकों और तकनीकी विशेषज्ञों के पैनल की सक्रिय भागीदारी और पूर्ण भागीदारी सुनिश्चित करता है ताकि पूरे क्षेत्र में निरंतर सुधार और ज्ञान साझाकरण को बढ़ावा दिया जा सके।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि सुरक्षा सुनिश्चित करने में ऑडिट्स की महत्वपूर्ण भूमिका को ध्यान में रखते हुए, PNGRB ने मौजूदा तरीकों को सुदृढ़ करने तथा सुरक्षा को प्रभावी ढंग से बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं, और अंतरराष्ट्रीय सर्वोत्तम तरीकों को अपनाने तथा इंडस्ट्री फीडबैक के आधार पर आवश्यक बदलाव करते हुए आगे भी सुधार करता रहेगा।

माँ तुम क्यों रोती हों?



श्री शुशांक डोगरा
डाटा एंट्री ऑपरेटर
अध्यक्ष कार्यालय

दुनिया में माँ शब्द से ज्यादा महत्वपूर्ण व नाजुक शब्द शायद ही कोई होगा! माँ वह होती है जो 9 महीने तक अपने गर्भ में ढोने के बाद इस संसार में लाती है और फिर अपने दूध से, अपने हाथों से खाना खिलाकर, लोरियां सुनाकर हमारे जीवन को पल्लवित करती है। ऐसी माँ का सम्मान व आदर करने वाले बच्चे ही सही मायने में उसकी औलाद कहलाती हैं।

एक माँ 9 माह तक हमारा भार ढोती है और दूसरी माँ जीवन भर, जिसे हम धरती माँ कहकर पुकारते हैं। जो इसे धरती माँ के रूप में देखते हैं वे इसकी पूजा तथा सम्मान करते हैं और जो इसे भूमि के रूप में देखते हैं वे इससे सिर्फ अपनी उदर पूर्ति या स्वार्थ साधते हैं तथा जो इसे केवल जमीन का एक टुकड़ा मानते हैं वे इस पर अपना अधिकार तो जताते ही हैं, अपने स्वार्थ के लिए दूसरों की जमीन पर भी कब्जा करने के ताक में रहते हैं

इतिहास साक्षी है कि जमीन पर कब्जा करने की प्रवृति के चलते अब तक असंख्य हत्या, नरसंहार और आक्रमण हो चुके हैं। इतिहास इस बात का भी गवाह है कि बलात् जमीन पर कब्जे किए गए लेकिन जमीन सदियों बाद भी जस की तस मौजूद है और बलात् कब्जा करने वालों का नामो-निशान भी मिट गया। एक ओर वे लोग हैं जो इसे धरती माँ के रूप में देखते हैं वे इसका आदर करते हैं तथा इसके उपकार के लिए स्वयं को कृतज्ञ समझते हैं, वहीं दूसरी ओर ऐसे लोग हैं जो जमीन का टुकड़ा मानकर अपने नाते-रिश्तों को भुलाकर किसी की जमीन पर भी कब्जा कर लेते हैं।

इस धरा को जब कोई धरती पुकारता है तो वह इसका सम्मान है, कोई भूमि कहता है तो स्वाभिमान झलकता है, जमीन कहने वाले के मुंह से अभिमान और जब कोई इसे माटी कहकर बुलाता है तो लगाव व सहानुभूति का भाव पैदा होता है। माटी के तौर पर कबीरदास ने इसके यथार्थ को बहुत ही मार्मिक ढंग से उकेरा है:

माटी कहे कुम्हार से तू क्या रौंदे मोय,

एक दिन ऐसा आयेगा मैं रौंदूंगी तोय ।

जमीन संबंधी मामलों को निपटाने के लिए बने कुछ कानून राजस्व न्यायालय की अपेक्षा दीवानी अदालतों को अधिकृत करते हैं। इसकी वजह से कुछ लोग किसी विवाद की स्थिति में दीवानी अदालत का रुख कर लेते हैं

और राजस्व न्यायालय तथा दीवानी न्यायालयों के बीच वर्षों कदमताल करते रह जाते हैं, कारण कानूनों की स्पष्ट एवं तर्कसंगत व्यवस्था का न होना है। फलस्वरूप होता क्या है कि दीवानी न्यायालयों के पास जमीन संबंधी लेखा-जोखा न होने के कारण मामलों के निपटारे में संसाधनों की कमी पेश आती है, वहीं दूसरी ओर राजस्व न्यायालय को समुचित कानून व अधिकारों की कमी आड़े आती है।

नेशनल ज्यूडिसियल डाटा ग्रिड के अनुसार पूरे देश की अदालतों में लगभग 5 करोड़ जमीन संबंधी मामले लंबित हैं तथा देश के उच्च न्यायालयों में लंबित मामलों की संख्या 62 हजार है और 80,221 मामले केवल सर्वोच्च न्यायालय में लंबित हैं। कुल लंबित मामलों का 87% हिस्सा देश की जिला स्तर की अदालतों में विचाराधीन हैं। इतनी बड़ी संख्या में जमीन संबंधी मामलों के लंबित रहने के पीछे संसाधनों की कमी, समन्वय का न होना तथा निर्धारित समय सीमा न होना मुख्य कारण बताए गए हैं।

एक ओर अपार जनसंख्या और जनसंख्या के रहने के लिए बने आलीशान भवनों के भार से सहमी धरती तो दूसरी ओर विकास एवं पैसे की हवस के चलते धरती का सीना चीरने वालों की ज्यादती से माटी को माँ कहने वालों को उसका करुण रुदन साफ सुनाई देता है, तब उन्हें केवल "माँ तुम क्यों रोती हो " कहने के लिए विवश होना पड़ता है।

धरती पर विभिन्न नामों से होने वाले अत्याचारों को रोकने के लिए नीतिगत फैसलों की आवश्यकता है और नीतिगत फैसले केवल हमारी विधायिका ही ले सकती है लेकिन विधायिका केवल उन मामलों पर विचार करती हैं जिनसे उन्हें राजनीतिक लाभ मिल सके। अतएव पाठकगण आपसे निवेदन है कि धरती माँ की पीढ़ी को संभालने का प्रयास करें और यथासंभव प्रयत्न करें कि अनावश्यक रूप से ज़मीन संबंधी किसी विवाद के उत्पन्न होने की स्थिति न हो। क्योंकि जैसे ही क़ानून बना लिये जाएँ, जब तक हम मन से धरती को धरती माँ न मानकर केवल ज़मीन का टुकड़ा ही मानेंगे, धरती के आँसू कभी रोक नहीं पाएँगे!

हिंदी के माध्यम से सारे भारत को एकता के धागे में पिरोया जा सकता है।

-दयानन्द सरस्वती

भारत सरकार की सीबीजी /बायो-सीएनजी पहलें और उनके लाभ



श्री दिव्य अभिषेक सिंह
सीबीजी प्रभाग

भारत आज ऊर्जा के एक अहम मोड़ पर खड़ा है, जहाँ बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने की चुनौती सतत विकास लक्ष्यों के अनुरूप पूरी करनी होगी। स्वच्छ और आत्मनिर्भर भविष्य की ओर बढ़ते हुए, कम्प्रेस्ड बायोगैस (सीबीजी) या बायो-सीएनजी एक प्रभावी और पर्यावरण-अनुकूल समाधान के रूप में उभर रहा है। कृषि अवशेषों, जैविक अपशिष्ट और बायोमास से प्राप्त यह ईंधन, ऊर्जा सुरक्षा और पर्यावरणीय जिम्मेदारी का सशक्त संयोजन प्रस्तुत करता है। यह आयातित प्राकृतिक गैस पर निर्भरता को कम करने के साथ-साथ अपशिष्ट प्रबंधन की समस्या को भी हल करता है।

वैश्विक स्तर पर कम-कार्बन, सतत और नवीकरणीय ऊर्जा की ओर संक्रमण ने सौर, पवन और जैव ईंधनों जैसी तकनीकों को बढ़ावा दिया है। इन्हीं विकल्पों में से एक है कम्प्रेस्ड बायोगैस (सीबीजी), जिसे हाल के वर्षों में विशेष ध्यान मिला है। सीबीजी का उत्पादन एनारोबिक डाइजेशन (एडी) के माध्यम से किया जाता है, जिसमें पशु गोबर, कृषि अवशेष, प्रेस मड, नगर निगम ठोस अपशिष्ट (OFMSW), मिश्रित अपशिष्ट, सीवेज स्लज और औद्योगिक अपशिष्ट जैसे कार्बनिक पदार्थों का उपयोग होता है।

इस प्रक्रिया से उत्पन्न कच्चा बायोगैस (Raw Biogas) लगभग 19.5 मेगाजूल/किलो. ऊर्जा प्रदान करता है और इसमें 55–65% मीथेन, 30–40% कार्बन डाइऑक्साइड, 1–2% हाइड्रोजन सल्फाइड, 1–3% नाइट्रोजन और 1–2% नमी होती है। शुद्धिकरण और कम्प्रेशन के बाद प्राप्त सीबीजी में मीथेन की मात्रा 90% से अधिक हो जाती है और इसका ऊष्मा मान 47–52 MJ/kg होता है, जो सीएनजी (50–56 MJ/kg) के बराबर है। सीबीजी का एक प्रमुख लाभ यह है कि इसके दहन से उत्पन्न कार्बन डाइऑक्साइड को जैविक (biogenic) माना जाता है।

सीबीजी के अनेक उपयोग हैं—जैसे बिजली उत्पादन, परिवहन ईंधन और खाना पकाने में। यूरोप में इस दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, जिससे जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता कम हुई है। 2021 में जर्मनी ने 1322 संयंत्रों में से 212 सीबीजी संयंत्र स्थापित किए, जिन्होंने 12,753 GWh ऊर्जा का उत्पादन किया। ब्रिटेन में 130 संयंत्र हैं, वहीं चीन 2025 तक 197 संयंत्र लगाने की योजना बना रहा है।

सीबीजी पहलें ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को घटाने में अहम योगदान दे रही हैं। 1 टन जीवाश्म आधारित सीएनजी की जगह सीबीजी के उपयोग से लगभग 2.5–3 टन CO_2-समतुल्य उत्सर्जन रोका जा सकता है। कचरे से निकलने वाले मीथेन को पकड़कर ऊर्जा में बदलने से खुले में सड़ने की तुलना में 80% तक उत्सर्जन में कमी लाई जा सकती है। इससे जलवायु परिवर्तन शमन लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायता मिलती है।

भारत में सीबीजी पहलें सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) से सीधे जुड़ी हुई हैं।

- एसडीजी-7 (सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा): नवीकरणीय ईंधन उपलब्ध कराना।
- एसडीजी-11 (सतत शहर और समुदाय): अपशिष्ट प्रबंधन को बेहतर बनाना।
- एसडीजी-12 (उत्तरदायी उपभोग और उत्पादन): परिपत्र अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना।
- एसडीजी-13 (जलवायु कार्रवाई): उत्सर्जन में कमी।
- एसडीजी-8 (सम्मानजनक कार्य और आर्थिक वृद्धि): ग्रामीण रोजगार सृजन।
- एसडीजी-15 (स्थल जीवन): पराली जलाने में कमी और मिट्टी की सेहत में सुधार।

सामूहिक रूप से ये पहलें भारत की स्वच्छ ऊर्जा परिवर्तन और सतत विकास एजेंडा की एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं।

भारत सरकार SATAT (Sustainable Alternative Towards Affordable Transportation) पहल के माध्यम से सीबीजी को बढ़ावा दे रही है। इसका लक्ष्य प्राकृतिक गैस आयात को 10% तक कम करना और ऊर्जा मिश्रण में इसकी हिस्सेदारी 6.5% से बढ़ाकर 15% करना है। अगस्त 2025 तक GOBARdhan पोर्टल के अनुसार देश में 151 संयंत्र चालू हैं, 10 पूर्ण हो चुके हैं, 239 निर्माणाधीन हैं और 733 नियोजित हैं।

विश्व बायोगैस संघ की रिपोर्ट के अनुसार भारत में विभिन्न फीडस्टॉक्स से कुल 62 MMT सीबीजी उत्पादन की क्षमता है। इसमें से सबसे अधिक क्षमता पशु गोबर (25 MMT) की है, इसके बाद कृषि अवशेष (20 MMT), सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट्स (10 MMT), नगर निगम ठोस कचरा (5 MMT) और प्रेस मड/स्पेंट वॉश (2 MMT) की है। यदि कृषि अवशेष और ठोस कचरे का पूर्ण उपयोग किया जाए तो अकेले इनसे 35 MMT सीबीजी का उत्पादन संभव है। साथ ही, AD प्रक्रिया से प्राप्त फर्मेंटेड ऑर्गैनिक मैन्योर (FOM) को जैव-उर्वरक के रूप में उपयोग किया जा सकता है, जिससे रासायनिक उर्वरकों की आवश्यकता समाप्त हो जाएगी। यह परिपत्र जैव-अर्थव्यवस्था (circular bioeconomy) का उत्कृष्ट उदाहरण है।

सारांश रूप में, सीबीजी भारत को ऊर्जा सुरक्षा, सतत अपशिष्ट प्रबंधन, ग्रामीण आर्थिक विकास और जलवायु शमन का एक रूपांतरकारी मार्ग प्रदान करता है। यदि नीति समर्थन, अनुकूलित तकनीकें, वित्तीय प्रोत्साहन और नियामक स्पष्टता मिलें, तो सीबीजी का बड़े पैमाने पर उपयोग भारत के स्वच्छ ऊर्जा और परिपत्र जैव-अर्थव्यवस्था परिवर्तन का मुख्य आधार बन सकता है।

हिंदी वह भाषा है, जो पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरो सकती है। गुलामी के दिनों में तो हमें अंग्रेज़ी पढ़ने के लिए मजबूर किया जाता था, लेकिन अब कोई मजबूरी नहीं है।

— ज्ञानी जैलसिंह

भारत में न्यायिक सक्रियता : अर्थ, औचित्य तथा सीमाएं



हर्षिता तोमर
सहायक परमर्शदाता
विधि प्रभाग

भारत का संविधान ने भारत देश की शासन व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए तीन अंगों की स्थापना की है। इनमें कार्यपालिका, विधायिका एवं न्यायपालिका सम्मिलित है। इसका गठन इस प्रकार से किया गया है यह एक तरीकों के तीन कोनों के समान है, सभी एक दूसरे से पृथक परंतु सभी एक दूसरे पे आश्रित हैं। संवैधानिक ढांचे की बात करें तो वह प्रतल कार्यपालन के सिद्धांत पर आधारित है एवं अनुच्छेद 50 भी इस विषय में हुमें अवगत करवाता है। इस सिधान्त से तात्पर्य है कि संविधान के तीनों कार्यवाहक अपना-अपना कार्य करेंगे जो कि संविधान द्वारा उन्हे निर्देशित किया गया है। परंतु भारतीय संविधान ही न्यायपालिका की स्वतंत्रा के विषय मे भी प्रकाश डालता है। इस सिद्धांत से अर्थ है कि न्यायपालिका स्वतंत्र रूप से अपना कार्यपालन कर सकती है।

संविधान अपने बंधुतत्व के `लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कार्य करता है जिससे एकता बनी रहे एवं अखंडता की नीव मजबूत हो इसलिए ही उसने तीनों अंगों को उनके कार्य पृथक-पृथक बाँट दिया है। जैसे विधेयिका कानून बनती है, कार्यपालिका उसके कार्यवाहन के उपलक्ष में काम करती है एवं न्यायपालिका उस कानून की अवहेलना होने पर न्याय प्रदान करती है। परंतु भारत रूपी बहुलतावादी देश में सभी अंगों का प्रतहक बने रहना दुर्गम है। अतः जब न्यायपालिका न्याया देने के साथ-साथ दिशा निर्देश देने लगे जिससे वह अपना काम सुचारु रूप से कर सके तब न्यायपालिका सक्रिय हो जाती है और उसे हम न्यायिक सक्रीयता कहता है। न्यायिक सक्रीयता से यह भी तात्पर्य है कि जब न्यायपालिका विधायिका एवं कार्यपालिका को समय-समय पर सही मार्ग दिखाती रहे एवं जब वह अपने मार्ग से भटक जाएँ तब उन्हे संविधान द्वारा निर्मित पथ पर लाया जाए।

न्यायपालिका ने अपने निर्णयों के माध्यम से न्यायिक सक्रियता का उदाहरण दिया है। संविधान में उच्चतम न्यायालय के सम्पूर्ण न्याय करने का अधिकार अनुछेद 142 में प्राप्त है, इसी के आधार पर वह समय-समय पर मार्गदर्शन देता रहता है। न्यायपालिका की हर छोटी इकाई को सम्पूर्ण न्याय की शक्ति विभिन्न रूप में, जैसे कि धारा 151 सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908, धारा 482

दंड प्रक्रिया संहिता, 1973, धारा 165 भारतीय साक्ष्य अधिनियम आदि में प्रदान की गई है। न्यायिक सक्रियता का औचित्य यह कदापि नहीं है कि वह न्यायिक कार्यों को छोड़ कर कानून निर्माण का कार्य करने लगे। न्यायिक सक्रियता के माध्यम से न्यायपालिक त्रुटियों को सुधारने का काम करती है क्योंकि सुशासनात्मक लोकतन्त्र में न्यायिक सक्रियता अति आवश्यक है। चूंकि अगर न्यायपालिका मूक एवं बधिरों के भांति बैठी रहे तो कार्यपालिका व विधायिका में अराजकता की भावना निर्मित हो जाएगी।

न्यायपालिका ने अपने निर्देशों के माध्यम से न्यायिक सक्रियता का सर्वोत्तम उदाहरण प्रस्तुत किया है। इससे मार्ग दर्शन स्वरूप शासन ने उन विषयों पर कानून निर्माण किया है एवं त्रुटियों का सुधार भी किया है। उच्चतम न्यायालय के कुछ निर्णय उदाहरण स्वरूप इस प्रकार है: जस्टिस के एस पुट्टआस्वामी व यूनियन ऑफ इंडिया (2017) में निजता के मौलिक अधिकार के स्वरूप में माना गया, सुनीता तिवारी व उत्तरप्रदेश राज्य में दावड़ी बोहरा समुदाय की "Genital Mutilation" संबन्धित प्रथा के रोकथाम के विषय में निर्णय दिया गया है। विशाखा व राजस्थान राज्य में कार्यस्थलों पर महिलाओं के शोषण संबंधित समस्याओं के रोकथाम के विषय के दिशा निर्देश दिये गए थे। इसके उपरांत 2013 मे पीओएसएच, 2013 का कानून लाया गया है, इत्यादि। अतः न्यायपालिका एक गोताखोर के भांति भिन्न-भिन्न अधिकारों को लाती है जो कि संविधान द्वारा दिये गए मौलिक अधिकारों के साथ मिलकर सम्पूर्ण न्याय प्रदान करते है।

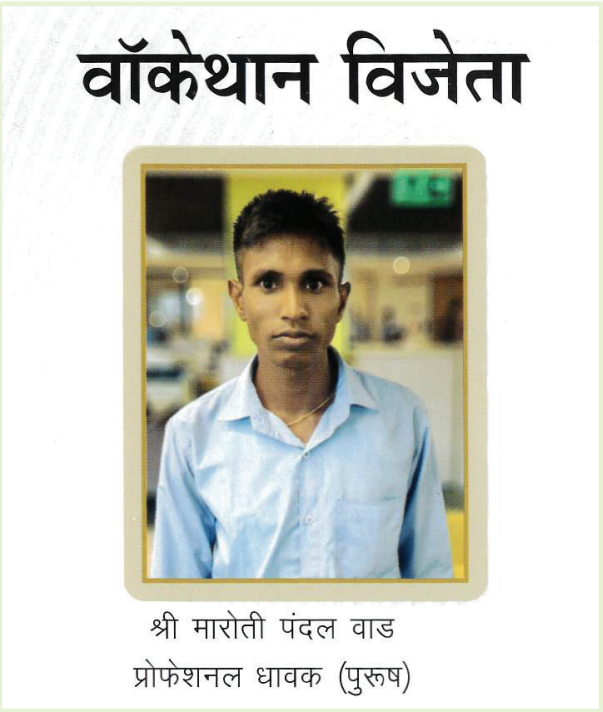
जिस प्रकार किसी वस्तु की अधिक मात्रा मानव शरीर के लिए हानिकारक सिध होती है उसी प्रकार न्यायिक सक्रियता जब न्यायिक दखल में बदल जाती है तब वह एक स्वस्थ्य लोकतन्त्र के लिए हानिकारक प्रतीत होती है। इससे उत्पन्न होने वाली समस्याओं में कुछ इस प्रकार हैं: न्यायमूर्तियों की अराजकता, शासन का लोभ, सभी अंगों के संबंधों में खटास। इसलिए न्यायपालिका को चाहिए कि वह न्यायिक सक्रियता का उपयोग करे, परंतु कुछ बंधनों के साथ और कार्यपालिका तथा विधायिका के कार्य में अत्यधिक दखल देने से बचे।

अतः जब तक न्यायपालिका अपने निर्णयों द्वारा संविधान को सर्वोच्च मानती है, तब तक उसकी सक्रियता संवैधानिक हित में है। परंतु यदि वह अपने निर्णयों द्वारा न्यायमूर्ति को सर्वोपरि बनाने का प्रयास करती है, तो वह असंवैधानिक कार्य करती है और लोकतंत्र के समग्र निर्माण में बाधा डालती है। ऐसे में न्यायिक अतिरक्षण भी आवश्यक है।

राष्ट्रभाषा का प्रचार करना मैं राष्ट्रीयता का एक अंग मानता हूं –
राहुल सांस्कृत्यायन

अखिल भारतीय वॉकेथान- रन फॉर फन प्रतियोगिता' के विजेता

राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह के उपलक्ष्य में 'दिनांक 15 जून 2025 को आयोजित अखिल भारतीय वॉकेथान- रन फॉर फन प्रतियोगिता' के विजेता- जिसमें पीएनजीआरबी के श्री मारोती पंदलवाड ने प्रथम श्रेणी- प्रोफेशनल धावक में प्रथम स्थान प्राप्त किया



श्री मारोती पंदलवाड पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड, भारत सरकार में एमटीएस के पद पर कार्यरत है। राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय द्वारा दिनांक 15 जून 2025 (रविवार) को वॉकथॉन- रन फॉर फन (प्रतियोगिता) का आयोजन किया गया। जिसमें श्री पंदलवाड ने प्रोफेशनल धावक की श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त किया। श्री पंदलवाड का जन्म महाराष्ट्र के परभणी जिला, राणीसावरगांव में हुआ । उनकी प्रारंभिक शिक्षा गांव के प्राथमिक विद्यालय में हुई। उनकी रुचि बचपन से ही दौड़ में थी। जिसने आगे चल कर उन्हें प्रोफेशनल धावक बना दिया। उनका सपना देश के लिए ओलंपिक में गोल्ड लाना है।

पीएनजीआरबी से सेवामुक्त हुए कार्मिकों की सूची

इस अवधि के दौरान निम्नलिखित कर्मियों पीएनजीआरबी से सेवामुक्त हुए, पीएनजीआरबी की ओर से उनके सुखद जीवन की शुभकामनाएं:-

क्रम संख्या	अधिकारी/कर्मचारी का नाम	पदनाम
1.	श्री गजेन्द्र सिंह	सदस्य
2.	श्री सुशील कुमार गुप्ता	सहायक परामर्शदाता (प्रशासन प्रभाग)
3.	श्री कार्तिकेय जोशी	सहायक परामर्शदाता (विधि प्रभाग)
4.	श्री मानस प्रियम दास	सहायक परामर्शदाता (निगरानी प्रभाग)
5.	सुश्री परामिता साहा श्रीवास्तव	सहायक परामर्शदाता (निगरानी प्रभाग)
6.	श्री संजीव गोयल	वरिष्ठ परामर्शदाता (वाणिज्यिक प्रभाग)
7.	श्री एस के सुर चौधरी	परामर्शदाता (निगरानी प्रभाग)
8.	श्री संजय मलिक	वरिष्ठ परामर्शदाता (वाणिज्यिक प्रभाग-3)
9.	श्री प्रकाश अशोक बुटानी	उप. निदेशक (वाणिज्यिक प्रभाग-1)
10.	सुश्री चंचल बंसल	उप-निदेशक (वाणिज्यिक-2)
11.	श्री पंकज भूटानी	निदेशक (वाणिज्यिक)
12.	श्री सुभाष चंद गुप्ता	निदेशक (प्रभारी निगरानी)
13.	श्री अंकुर जैन	उप-निदेशक (वाणिज्यिक)

पीएनजीआरबी में सम्मिलित हुए कार्मिकों की सूची

इस अवधि के दौरान पीएनजीआरबी में सम्मिलित हुए निम्नलिखित कार्मिकों का हार्दिक स्वागत है:-

क्रम संख्या	नाम श्री/श्रीमती	पदनाम
1.	सुश्री सुधा रानी रेलांगी	सदस्य (विधि)
2.	श्री राजेश मनोचा	उप - निदेशक (सांख्यिकी प्रभाग)
3.	श्री सुशील कुमार गुप्ता	निदेशक (वाणिज्यिक प्रभाग)
4.	श्री सौरभ जैन	उप - निदेशक (वाणिज्यिक-2)
5.	श्री प्रशांत पाल	उप - निदेशक (निगरानी-2)
6.	सुश्री प्रीति नेगी	बेंच अधिकारी (विधि प्रभाग)
7.	लेफ्टिनेंट कमांडर विद्यासागर मेहता	उप – निदेशक (प्रशासन प्रभाग)
8.	सुश्री मेघा सिंह	अध्यक्ष के प्रधान निजी सचिव
9.	श्री शीतला प्रसाद	लेखाकार (वाणिज्यिक प्रभाग)
10.	सुश्री निगार अली	उप – परामर्शदाता (प्राधिकरण प्रभाग)
11.	श्री ललित पंचपाल	उप – परामर्शदाता (प्राधिकरण प्रभाग)
12.	सुश्री नेहा पी. भट्टाचार्य	उप – परामर्शदाता (निगरानी प्रभाग)
13.	श्री आनंद	सहायक परामर्शदाता (नगर गैस वितरण एवं उपभोक्ता संरक्षण-1)
14.	सुश्री गरिमा मल्होत्रा,	परामर्शदाता (पीआर एवं एसएम)
15.	श्री राकेश कुमार शर्मा	वरिष्ठ परामर्शदाता (रणनीतिक योजना/प्रशासन)
16.	श्री प्रशांत कुमार रिबाड़िया	उप परामर्शदाता (प्राधिकरण -3)
17.	श्री भास्कर देबनाथ	वरिष्ठ परामर्शदाता (वाणिज्यिक-2)
18.	श्री सौभाग्य प्रसाद भट्टा	उप-परामर्शदाता (प्रशासन)
19.	श्री एस के सुर चौधरी	वरिष्ठ परामर्शदाता (निगरानी-प्रभाग)
20.	श्री निखिल यादव	सहायक परामर्शदाता (निगरानी-1)
21.	श्री आदित्य सचदेवा	सहायक परामर्शदाता (निगरानी-4)

इनसे मदद लें- कार्यालय के दैनिक कामकाज़ में प्रयोग होने वाले कुछ उपयोगी अंग्रेज़ी - हिंदी शब्द:

1.	Academic Section	अकादमिक अनुभाग
2.	Administration	प्रशासन
3.	Administrative	प्रशासनिक
4.	Annual Performance Assessment Report (APAR) Cell	वार्षिक कार्य निष्पादन मूल्यांकन रिपोर्ट (अपार) प्रकोष्ठ
5.	Finace Division	वित्त प्रभाग
6.	Evaluation	मूल्यांकन
7.	Assistance	सहायता, सहयोग
8.	Recommended	अनुशंसा, सिफ़ारिश
9.	Sanction Order	संस्वीकृति आदेश
10.	Letter of Authority	प्राधिकार पत्र
11.	Spot study	स्थल अध्ययन
12.	Released	लोकापर्ण
13.	Proceedings	कार्यवाही
14.	Financial Assistance	वित्तीय सहायता
15.	Calling nominations	नामांकन आमंत्रण
16.	Criteria	मानदंड
17.	Bacakground notes	पृष्ठभूमि नोट्स
18.	Write-up	आलेख
19.	Concept Note	संकल्पना नोट
20.	Declaration	घोषणापत्र
21.	Mechanisms	तंत्र
22.	Comparative	तुलनात्मक
23.	Renewal	नवीनीकरण
24.	Categories	श्रेणियां

25.	Finalization	अंतिम रूप देना
26.	Certificate	प्रमाणपत्र
27.	Organizing Committee	आयोजन समिति
28.	Award Scheme	पुरस्कार योजना
29.	Concurrence	सहमति
30.	sonsultant	परामर्शदाता
31.	Framwork	रूपरेखा
32.	Sensitive	संवेदनशील
33.	Case study	मामला अध्ययन
34.	Paramaeters	मापदंड
35.	Role and responsibilities	भूमिका और ज़िम्मेदारियां
36.	Initiatives	पहल
37.	Office procedures	कार्यालय प्रक्रिया
38.	Beneficiary	लाभार्थी
39.	Category	श्रेणी
40.	Coorperation	सहयोग
41.	Recognition	मान्यता
42.	Pilot Project	प्रयोगिक परियोजना
43.	Efficiency	कुशलता
44.	Optimal	इष्टतम/अधिकतम
45.	Affidavit	शपथ – पत्र
46.	Synergy	तालमेल
47.	Dashboard	डैशबोर्ड
48.	Spot stydy	स्थल अध्ययन
49.	Letter of Authority	प्राधिकार-पत्र
50.	Delegates	प्रतिनिधि

कार्यालय प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, दिल्ली,
Office of Pr.Chief Commissioner of Income Tax, Delhi,
राजभाषा अनुभाग, ब्लॉक-एफ-4,
Rajbhasha Anubhag, Block-F-4
विकास भवन, आई. पी. इस्टेट, नई दिल्ली-110002
Vikas Bhawan, I.P.Estate, New Delhi-110002
दूर./फैक्स नं.-23370792/0312
Phone No./FAX No. 23370792/0312

फा.सं.34 /प्र.मु.आ.आ./पत्रिका पावती/2025-26/407 दिनांक-23.09.2025

सेवा में,

सचिव
पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड
प्रथम तल, वर्ल्ड ट्रेड सेंटर, बाबर रोड,
नई दिल्ली-110001

विषय- गृह पत्रिका चतुर्थ संस्करण की प्राप्ति।

महोदया,

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका 'पी एन जी आर बी दर्पण' का चतुर्थ संस्करण प्राप्त हुआ। इसके लिए आपको धन्यवाद।

पत्रिका में शामिल लेख रुचिकर व ज्ञानवर्धक हैं। क्रिएटिव कॉर्नर में 'कहीं दूर जब दिन ढल जाए...' में ओपेकारोफाइल की जानकारी अच्छी और फोटोग्राफी खूबसूरत है। पत्रिका अपने आप में परिपूर्ण है।

संपादक मंडल की टीम और सभी रचनाकारों को हृदय से बधाई देता हूँ।

अगले अंक के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय,

(अनिल कुमार)
सहायक निदेशक(रा.भा)

प्रतिलिपि:

1. सहायक परामर्शदाता (राजभाषा)

(अनिल कुमार)
सहायक निदेशक (रा.भा.)

34(JAI Admin)
17/8/23

कार्यालय प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, दिल्ली
राजभाषा अनुभाग, ब्लॉक - डी, कमरा सं. 210
विकास भवन, आई.पी.एस्टेट, नई दिल्ली - 110002
दूरभाष - 011-23370312

सत्यमेव जयते

Office of Pr. Chief Commissioner of Income Tax,
Delhi Rajbhasha Anubhag, Block - D, R.No. 210
Vikas Bhawan, I.P. Estate, New Delhi-110002
Phone No. 011-23370312

फा.सं.03/प्र.मु.आ.आ./राजभाषाअनुभाग/स्थापना/2023-24/ 299 दिनांकः 11.08.2023

सेवा में,

लेफ्टिनेंट कर्नल पवन उनियाल,
संयुक्त सलाहकार (प्रशा.),
प्रथम तल, वर्ल्ड ट्रेड सेंटर, बाबर रोड,
नई दिल्ली- 110001

विषयः पीएनजीआरबी की गृह पत्रिका "पीएनजीआरबी दर्पण" का अग्रेषण-

महोदय,

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड, नई दिल्ली की गृह पत्रिका "पीएनजीआरबी दर्पण" के तृतीय संस्करण की दो प्रतियां प्राप्ति हुई, इसके लिए मैं आपको हृदय से धन्यवाद देना चाहता हूँ। "पीएनजीआरबी दर्पण" पत्रिका कार्यालय में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए संग्रहणीय पुस्तक है। अतः यह पुस्तक मेरे लिए एक अमूल्य वस्तु हैं। इस पुस्तक में अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा लिखे गए लेखों के साथ-साथ कार्यालय में होने वाले अनेक सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजनों के सजीव चित्रण विद्यमान हैं।

इस पत्रिका के प्रारंभ में पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड, नई दिल्ली के अध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार जैन महोदय ने शुभकामना संदेश के साथ की है। जिसमें महोदय ने अभिव्यक्ति एवं संचार के लिए मातृभाषा की महत्ता को अपने अमूल्य शब्दों से बताया है। इसी क्रम में श्री गगन अग्रवाल, उप निदेशक(तक-II) द्वारा लिखित शीर्षक "जीवन और संघर्ष" के माध्यम से बताया है कि हमारे जीवन का आधार ही संघर्ष है, जिस दिन व्यक्ति ने संघर्ष करना छोड़ दिया, उस दिन जीवन छोड़ दिया। इस संघर्ष को धरती का हर कोई प्राणी चाहे वह इंसान हो कोई पशु, या पक्षी शायद ही संसार का कोई प्राणी होगा जो अपने जीवन में संघर्ष का अनुभव ना कर पाया हो। व्यक्ति के जीवन में 'जीवन और संघर्ष' के सार को समझने के लिए निम्न श्लोक से समझा जा सकता है-

"उद्यमेन हि सिध्यन्ति, कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य, प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥"

अर्थात् परिश्रम से कार्य सिद्ध होते हैं केवल मनोरथ से नहीं। सोते हुए सिंह के मुख में मृग स्वयं ही प्रवेश नहीं करता, उसे अपना शिकार स्वयं ही करना पड़ता है।

इसी क्रम में श्री शान्ति ध्रुव, सहायक परामर्शदाता (राजभाषा) द्वारा लिखित शीर्षक "हिंदी की संवैधानिक स्थिति" में हिंदी के बारे महत्वपूर्ण जानकारी साझा की है। यह जानकारी आमजन-मानस को जानना नितांत आवश्यक है। भारत के पहले राष्ट्रपति स्वर्गीय श्री राजेंद्र प्रसाद जी ने कहा था कि "जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य का गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।" श्री निशान्त कुमार, सहायक परामर्शदाता (टी-4) द्वारा लिखित शीर्षक "स्कूल के दिन ही अच्छे थे यार" के माध्यम से स्कूली जीवन के बारे बताते हुए भावुकता का बोध कराया है। किसी व्यक्ति के जीवन में हर चरण विशेष महत्व रखता है क्योंकि यह उसके व्यक्तित्व को विकसित करने में मदद करता है। लेकिन वह कभी भी अपने स्कूल जीवन जितना नहीं सीख सकता है क्योंकि वह समय है जब हम पहली बार सब कुछ कर रहे हैं। यही समय है जब हम गलती कर सकते हैं और हमें किसी समस्या का सामना नहीं करना पड़ता है। हम आसपास के लोगों की बहुत परवाह नहीं करते हैं और हर चीज को आजमाने के लिए उत्सुक होते हैं। हम अपनी गलतियों और अनुभवों से अपने अद्वितीय व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं।

पीएनजीआरबी कार्यालय में आयोजित राजभाषा की विभिन्न गतिविधियों की झलकियां, अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के आयोजन की झलकियां, विश्व पर्यावरण दिवस-2023 की झलकियां, अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस- 2023 की झलकियां, राजभाषा के प्रति रुचि में वृद्धि संबंधी महत्वपूर्ण बातें, कार्यालय के दैनिक कामकाज में प्रयोग होने वाले कुछ उपयोगी अंग्रेजी-हिंदी वाक्यांश समेत अन्य अतिमहत्वपूर्ण जानकारियों के समावेश से इस पत्रिका की खूबसूरती और निखर जाती है। यह पत्रिका विविधतापूर्ण के साथ-साथ प्रेरणास्पद भी है। इस पत्रिका को पढ़कर अधिकारियों और कर्मचारियों में एक नई ऊर्जा का संचार होगा, कार्यालय में हिंदी में कार्य करने, सामान्य बातचीत के दौरान एवं राजभाषा के उत्थान में यह पत्रिका बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

मैं संपादक मण्डल के साथ-साथ अन्य सभी लेखक-लेखिकाओं को पुनः हृदय से धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने अपने विचार इस पत्रिका के माध्यम से व्यक्त किए हैं तथा ऐसी आशा करता हूँ कि आगे भी हमें यह पत्रिका प्राप्त होती रहेगी।

भवदीय,

(रवि कुमार)
उप निदेशक(रा.भा.)
कार्यालय प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, दिल्ली।



पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड

Petroleum and Natural Gas Regulatory Board

पी एन जी आर बी
PNGRB